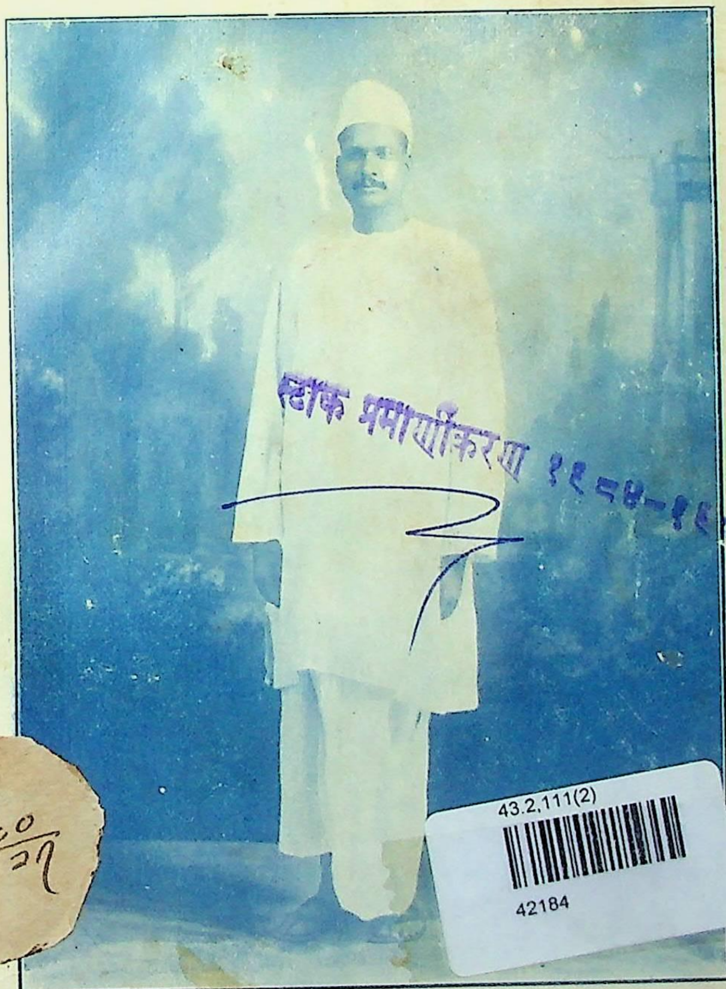
सेठ जमनालाल बजाज



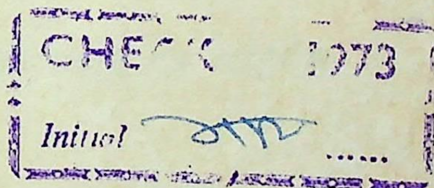
मूल्य, एक रुपया।

सेठ जमनालाल बजाज

(सचित्र जीवन-चरित)

लेखक

रामनरेश त्रिपाठी



प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग



प्रथम वार
२५००

चैत्र, १६८३

मूल्य १)

प्रकाशक—

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

मुद्रक

के० मित्र,

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मारवाड़ी-समाज को समर्पित

विषय-सूची

सामाजिक जीवन

सार्वजनिक जीवन

———

चित्र-सूची

महात्मा गाँधीजी की स्वीकृति

मनुष्य के जीते हुए उसकी जीवनी का प्रगट होना सामान्यतया अयोग्य है। परन्तु इसमें अपवाद भी है। जमनालालजी को मैं मुमुक्षु या तो आत्मार्थी समझता हूँ। ऐसे पुरुषों की जीवनी में से दूसरों को कुछ न कुछ नैतिक लाभ मिलता है। इस दृष्टि से इस जीवनी के प्रगट करने के औचित्य के लिये मुझको पूछा गया तब मैंने इसको उचित माना। इसके एक दो प्रकरण मैंने सुने हैं। इस पर से मेरा विश्वास है कि इसमें अतिशयता या अयोग्य स्तुति नहीं है। मैं आशा करता हूँ कि जिन्होंने सेवाधर्म का स्वीकार किया है उनको जमनालालजी के जीवन में से बहुत सी बातें अनुकरणीय प्रतीत होंगी।

मोहनदास गाँधी

भूमिका

संसार में प्रत्येक मनुष्य के जीवन से लाभ उठाया जा सकता है। गुणग्राही और उन्नतिशील पुरुष साधारण से साधारण वस्तु से भी गुण ग्रहण कर लेता है। दत्तात्रेय ने तो पशु-पक्षी और कीट-पतङ्ग तक से शिक्षा ग्रहण की थी।

सेठ जमनालाल बजाज इस समय भारत के प्रथम श्रेणी के नेताओं में गिने जाते हैं। एक अत्यन्त साधारण मारवाड़ी गृहस्थ के घर में, मारवाड़ सरीखे शिक्षाशून्य प्रान्त के एक क्षुद्र गाँवड़े में, पैदा होकर जिस व्यक्ति ने भारत ऐसे बड़े देश में पुण्य, यश और प्रभाव प्राप्त किया है, क्या उसके जीवन-चरित से कुछ शिक्षा ग्रहण नहीं की जा सकती?

जिस व्यक्ति को स्कूल की बहुत ही थोड़ी शिक्षा मिली; जन्म से लेकर स्कूल छोड़ने तक जिसे माता-पिता, समाज और मित्रों से जीवन-निर्माण की कोई प्रत्यक्ष सहायता नहीं मिली; फिर भी जिसने कितने ही अच्छे कुटुम्ब, शिक्षित समाज और अनुकूल वातावरण में पैदा होने-वाले मनुष्यों से अधिक अपनी उन्नति करके दिखाई है, उसकी उन्नति का रहस्य तो जानना चाहिये न?

जो धनी हो करके भी निरभिमानी और सच्चरित्र है; जो मानसिक और शारीरिक सुख के साधनों के जानने और प्राप्त करने में समर्थ होकर भी अपनी आत्मिक उन्नति के लिये एक ग़रीब का सा जीवन व्यतीत करके देश, जाति और सत्पुरुषों की सेवा में तत्पर है; उसका जीवन-चरित क्या हमारे देश के धनियों के लिये आदर्श नहीं है?

मैं प्रत्येक मारवाड़ी और अन्य जाति के प्रत्येक धनी को आग्रह-

पूर्वक निमंत्रित करता हूँ कि वे जमनालालजी के जीवन पर एक बार ध्यान दें। मेरी धारणा है कि इससे उनका कल्याण होगा।

जमनालालजी के व्यक्तिगत जीवन में एक आत्मतेज की झलक दिखाई पड़ती है, जिसके प्रकाश में वे सत्य की खोज करते हुये यहाँ तक पहुँचे हैं। उस प्रकाश से कहीं अलग न जा पड़, इस भय से वे बाहरी प्रलोभनों से बचते हुये, गाँधीजी को मार्गप्रदर्शक मानकर, उनकी सम्मति से चलकर, जीवन की कितनी ही दुर्गम घाटियों को सकुशल पार करते हुए, सत्य-साम्राज्य की ओर चल रहे हैं।

जमनालालजी के जीवन में दो घटनायें बहुत ही महत्त्व-पूर्ण हैं। एक तो सरकारी चंगुल से धीरे धीरे मुक्ति प्राप्त करना, और दूसरी गाँधीजी को आत्मसमर्पण करना। सरकार के पास धनियों के लिये मेडल, सनद, पदवी, दरबारदारी आदि नाना प्रकार के प्रलोभन हैं। जिनसे बच निकलना सहज काम नहीं है। जिनको सरकारी माया का अनुभव है, वे ही जमनालालजी के आत्मबल को समझ सकते हैं। दूसरी घटना पहले से अधिक महत्त्व-पूर्ण है। जमनालालजी बड़े चौकन्ने और सतर्क स्वभाव के मनुष्य थे। गाँधीजी से पहले किसी पर उनका विश्वास जमता ही नहीं था। जिस दिन उन्होंने अपने सब तर्क, वितर्क और संशय को छोड़कर गाँधीजी को आत्मसमर्पण किया था, वह दिन उनके जीवन में एक नया दिन था। आज वे गाँधीजी को पिता तुल्य मानते हैं और तन, मन, धन से उनमें भक्ति रखते हैं। गाँधीजी भी उनको पुत्र की तरह मानते और उनकी उन्नति के लिये चिन्ता करते हैं। गाँधीजी ने जेल से जो दो पत्र जमनालालजी को लिखे थे, और जिनकी प्रतिलिपियां इस जीवनी में दी गई हैं, उनसे जमनालालजी पर गाँधीजी का अखण्ड प्रेम प्रकट होता है। गाँधीजी के प्रेम-पात्र होने का सौभाग्य जिन भाग्यवान् जनों को प्राप्त है, जमनालालजी उनमें मुख्य हैं।

जमनालालजी के अंतःकरण में त्याग और वैराग्य की एक ज्योति—

एक शक्ति मूल-रूप से है। जिसका आभास पाठकों को उनके लिखे हुये उस पत्र में मिलेगा, जिसे उन्होंने १७ वर्ष की अवस्था में सेठ वच्छराजजी को लिखा था। उस पत्र में उनके जीवन का भविष्य सूत्र-रूप से विद्यमान है। उसी शक्ति की प्रेरणा से वे जीवनपथ में नाना प्रलोभनों से बचते रहे हैं। अभी उनके अन्य आंतरिक गुणों का विकास आगे होगा।

जमनालालजी मारवाड़ी जाति के रत्न हैं। प्रत्येक मारवाड़ी को अपने जमनालालजी के लिये गर्व है। अशिक्षित, डरपोक, स्वार्थी और कुरीति-ग्रसित कहे जाने वाले मारवाड़ी-समाज ने एक ऐसा पुरुषरत्न देश को प्रदान किया है जिसने अपनी प्रभा से देश के इने-गिने रत्नों में स्थान पाया है और मारवाड़ी-समाज का उपहास करने वालों की आँखों में चकाचौंध पैदा कर दी है। अपने उस रत्न के लिये मारवाड़ी-समाज को गर्व से सिर ऊँचा करना ही चाहिये।

इस जीवनी में जमनालालजी के गुणों का ही मुख्यतः वर्णन किया गया है। उनके दोषों को जानने से समाज को कोई लाभ नहीं पहुँचेगा। जमनालालजी के दोष जमनालालजी ही के लिये हैं। वे उनको जानते हैं और प्रत्येक क्षण उन्हें कम करने में तत्पर हैं।

उनमें एक सब से बड़ी कमी, जिसका अनुभव समाज करता है, यह है कि, वे अच्छे वक्ता नहीं। वे अपने मन के भावों को स्पष्ट और प्रभावशाली शब्दों में प्रकट नहीं कर सकते। यह बात नहीं कि, वे कम जानते हैं, इसलिए बोलते कम हैं। वे राजनीति और धर्मनीति के विषयों को जानते और अंतःकरण में ठीक अनुभव भी करते हैं; पर प्रकट नहीं कर सकते। मेरा तो अनुमान है कि गांधीजी को जैसा उन्होंने समझा है, वैसा ठीक-ठीक समझने वाले इस देश में बहुत कम मनुष्य हैं। यदि जमनालालजी में बोलने की शक्ति भी अच्छी होती तो देश में उनका इतना अधिक प्रभाव होता कि आज उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मैं जमनालालजी को आज १६ वर्षों से जानता हूँ। सब से पहले मेरा उनका साक्षात्कार फ़तहपुर [जयपुर] में हुआ था। कलकत्ते में संग्रहणी रोग से मरण-प्राय होकर मैं जीने के लिये मारवाड़ की ओर भागा था। कलकत्ते में डाक्टर ने चेतावनी दे दी थी कि "तुम अब न बचोगे, अपना प्रबन्ध करो"। सं० १९६९ की होली का दिन मैं नहीं भूलता, जिस दिन मैं फ़तहपुर पहुँचा था। फ़तहपुर के जलवायु और सुजनता की मूर्ति सेठ रामबल्लभ जी नेवटिया के मट्ठे ने मेरा यह शरीर जाते-जाते बचा लिया। मैं मारवाड़ में अपना पुनर्जन्म मानता हूँ। इससे मारवाड़ के प्रति मेरा प्रेम स्वाभाविक है। मारवाड़ की कुछ भी सेवा कर देने में या करते रहने में मैं एक प्रकार का सुख अनुभव करता हूँ। जमनालालजी का यह जीवन-चरित मैंने उसी सुख के लिये लिखा है। जमनालालजी से मेरा परिचय बढ़ते-बढ़ते मित्रता तक पहुँच गया है। इससे एक तो मारवाड़ी-समाज को लाभ पहुँचाने का प्रयत्न, दूसरे मित्र के गुणों की चर्चा, दो तरह से अपने मन को सुखी करने का यह अवसर भला मैं क्यों छोड़ता ?

जमनालालजी इस वर्ष मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के सभापति हो रहे हैं। मारवाड़ी समाज में उनकी चर्चा हो रही है। यही समय है जब कि उनके गुणों की चर्चा—उनकी उन्नति के कारणों की चर्चा मारवाड़ी समाज में फैलाई जाय और लोग उनका अनुकरण करें। मैं तो जमनालालजी को मारवाड़ियों ही के लिये नहीं, बल्कि भारत के समस्त धनियों के लिये आदर्श मानता हूँ। यद्यपि उनका यह जीवन-चरित संक्षिप्त है; पर समय आयेगा, जब उनका बड़ा जीवन-चरित लिखा जायगा और उसमें यह सहायक होगा। जमनालालजी जिस ऊँचाई तक पहुँच चुके हैं, वहाँ तक पहुँचने के लिये उन्नति चाहने वालों को यह जीवन-चरित एक सीढ़ी का काम देगा।

इस जीवन-चरित के लिखने में बहुत कुछ सहायता तो मुझे अपनी पहले की जानकारी से मिली है। एक प्रश्नावली के द्वारा कुछ

बातें मैंने जमनालालजी से भी मालूम की हैं। बहुत से प्रश्नों का उत्तर जमनालालजी ने बहुत संकोच के साथ दिया है। फिर भी आपने यह एक शर्त करा ली थी कि जीवन-चरित प्रकाशित करने के पहले महात्मा गांधीजी की स्वीकृति ले ली जाय। अस्तु; मैं स्वीकृति प्राप्त करने के लिये साबरमती आश्रम गया और महात्माजी से मिलकर मैंने उनकी स्वीकृति प्राप्त की, जो पुस्तक के प्रारम्भ में दे दी गई है।

इसके पहले मैंने जमनालालजी का एक छोटा सा जीवन-चरित कविता-कौमुदी के दूसरे भाग में दिया था। उस पुस्तक के अगले संस्करण में देने के लिये मुझे उस जीवन-चरित में इधर की बातें बढ़ाने की ज़रूरत पड़ी, तब उसी सिलसिले में मैंने जमनालालजी के एक बड़े जीवन-चरित को अलग पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की आवश्यकता अनुभव की थी। और यह पुस्तक उसी का परिणाम है।

जमनालालजी के जीवन की घटनायें जानने में मुझे श्रीयुत श्रीकृष्णदास जी जाजू से और चित्रों की प्राप्ति में चि० श्रीगोपाल नेवटिया से बड़ी सहायता मिली है। अतएव मैं इनका कृतज्ञ हूँ।

मैं आशा करता हूँ कि जमनालालजी का जीवन-चरित मुख्यतः मारवाड़ी-समाज में बहुत लाभदायक सिद्ध होगा और इसके द्वारा बीसों जमनालालजी उत्पन्न होंगे।

रामनरेश त्रिपाठी





आत्मार्थी जमनालालजी
(१ मार्च, १९२६ का चित्र)

सेठ जमनालाल बजाज

व्यक्तिगत जीवन

जन्म और बाल्यकाल

जयपुर राज्य में सीकर एक मातहत रियासत है। सीकर, लछमणगढ़, फ़तहपुर, रामगढ़ आदि मारवाड़ी सेठों के बड़े बड़े नगर इसी रियासत में हैं। रियासत का अधिकांश मरुस्थल है। जिसमें कलकत्ते, बम्बई के बड़े बड़े मारवाड़ी सेठों की विशाल और हाथी, घोड़े, ऊँट, राजा-रानी, सिपाही, पेड़, फूल-पत्ते आदि के रंगीन चित्रों से सचित्र दीवारों वाली हवेलियाँ, श्रेणीबद्ध होकर, मूकभाषा में अपने स्वामी का गौरव बता रही हैं। न कहीं नदी न नाला, न झील न झरना, न वृक्ष न लता; केवल उजाड़ मरुस्थल में बालू के बड़े-बड़े टीबे किसी फ़ौजी पड़ाव पर तंबुओं के समूह की तरह चारोंओर फैले दिखाई पड़ते हैं। उन्हीं टीलों के बीच में बड़े बड़े नगर हैं, जिनमें लक्ष्मी क्रीड़ा कर रही हैं। मानों बहुत समय तक क्षीरसागर में रहते रहते ऊबकर अब वह इस रूखे-सूखे प्रदेश में अपना मन बहला रही हैं।

उसी मरुस्थल में, सीकर से चार कोस दूर, 'काशी का वास' नाम का एक छोटा सा गाँव है। आज से तीस चालीस वर्ष पहले उस गाँव की दीन-दशा का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि गाँव में एक भी कुँवा नहीं था। गाँव वाले एक कोस दूर से, 'कदम का वास' नाम के गाँवड़े से, पीने का पानी लाया करते थे। गाँव में किसी के पास इतना धन ही नहीं था कि वह एक कुँवा तो खुदवा लेता।

उसी जलहीन, धनहीन, नीरस गाँव में श्रीकनीरामजी बजाज नाम के एक वैश्य रहते थे। वे साधारण किसानी का काम करते थे और कुछ लेन-देन भी करके किसी तरह अपनी जीविका चलाते थे। कनीरामजी के घर सौ० बिरदीबाई के गर्भ से कार्तिक शुक्ला १२, सं० १९४६, ता० ४-११-१८८९ को एक पुत्र ने जन्मधारण किया, जो इस समय सारे भारत में सेठ जमनालाल बजाज के नाम से प्रसिद्ध है।

जो रत्न बड़े बड़े नगरों में, बड़े धनी-मानी कुटुम्बों में नहीं पैदा हुआ, वह एक नन्हे से गाँवड़े में, एक साधारण व्यक्ति के घर पैदा हुआ। जो गौरव कलकत्ता, बम्बई, कानपुर, नागपुर, दिल्ली आदि को नहीं मिला, वह 'काशी का वास' को मिला। जिस यश के लिए बड़े बड़े सेठ सरदार लालायित रहते हैं, वह श्रीकनीरामजी को मिला। जो महिमा पंजाब के गेहूँ और बङ्गाल के चावल को नहीं मिली, वह मारवाड़ के बाजरे को प्राप्त हुई। ईश्वर की लीला अपार है। जिस पर उसकी कृपा-दृष्टि पड़ जाती है, वही बड़ा हो जाता है। वह दीनबंधु है, इससे उसके राज्य में दीनों को ऊँचा उठने की सर्वत्र स्वतंत्रता है।

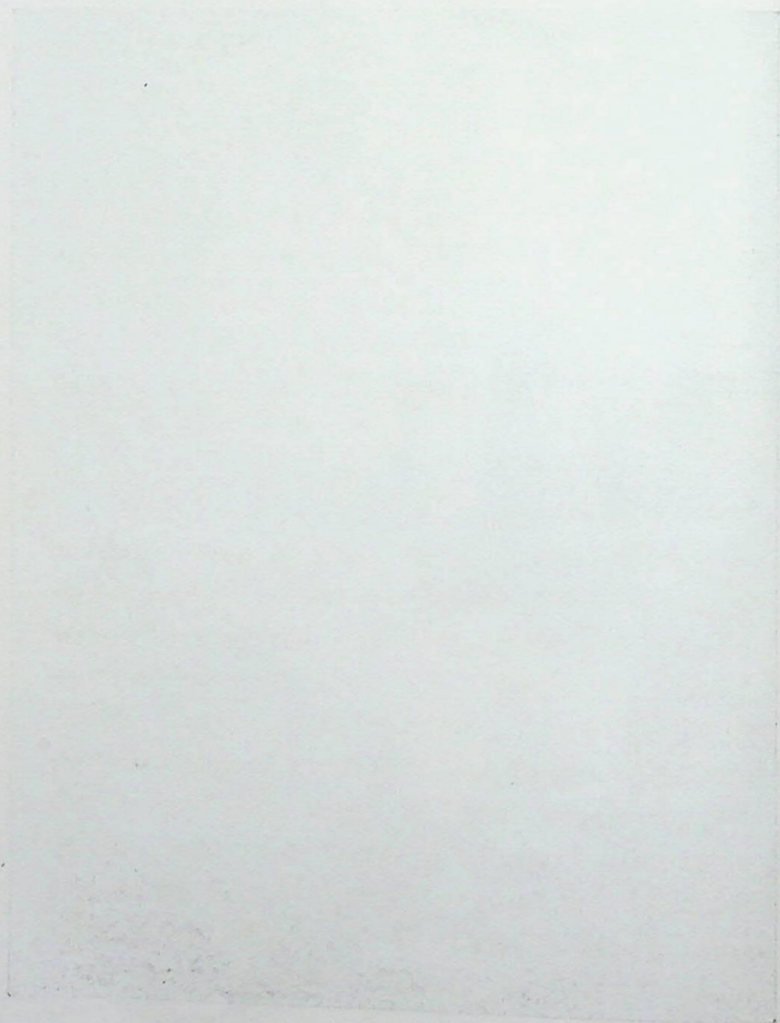
दीनता ईश्वर को बहुत प्रिय है। तुलसीदास तो जन्मभर एक ही बात माँगते रहे—

तू गरीब को निवाज हौं गरीब तेरो।
एक बार कहहु नाथ! तुलसिदास मेरो॥

भला, जिसे भगवान् कहेंगे कि 'यह मेरा है,' उसे संसार में दुर्लभ क्या रहेगा?



श्रीयुत कनीरामजी जमनालालजी



आजकल महात्मा गाँधी, मालवीयजी, लालाजी, पण्डित मोतीलाल जी, केलकर, जयकर और अली भाई आदि से साथ राजनीतिक लीला-क्षेत्र में और कलकत्ते बम्बई के बड़े बड़े मारवाड़ी, पारसी, अँगरेज़ और जापानी व्यापारियों के साथ व्यापारिक क्रीड़ा-भूमि में जीवन के अनेक खेल खेलनेवाले जमनालालजी सं० १९४६ से १९५१ तक 'काशी का वास' गाँवड़े में ग्रामीण बालकों के साथ खेलते फिरते थे। माता-पिता को यह कल्पना भी नहीं थी कि यह बालक बड़ा होकर अपनी जाति का मुख उज्ज्वल करेगा। केवल ईश्वर जानता था कि आगे क्या होगा।

जमनालालजी अपने माता-पिता के तीन पुत्रों में से द्वितीय पुत्र हैं।

गोद आना

वर्धा (मध्यप्रदेश) के सेठ बच्छराजजी के पुत्र रामधन जी निस्संतान थे। उनके स्वर्गवासी हो जाने पर सेठ बच्छराजजी सं० १९५१ में, अपनी पुत्रबधू बसन्तीदेवी के लिए एक बालक गोद लेने की अभिलाषा से, ढूँढ़ते-ढूँढ़ते 'काशी के वास' में कनीराम जी के पास पहुँचे। दोनों सगोत्री थे। उस समय सगोत्र में गोद के लिए और बालक नहीं थे। इसलिए सेठ बच्छराजजी ने जमनालालजी को लेने के लिए सब तरह का प्रयत्न किया; अनुनय, विनय के सिवा उन्होंने कनीरामजी को धन का लोभ भी दिया। पर कनीरामजी ने पुत्र देना अस्वीकार कर दिया। इस पर सेठ बच्छराजजी धर्ना देकर बैठ गये। उन्होंने यह प्रण कर लिया कि बिना जमनालालजी को लिए न जायँगे। अन्त में उनका सत्याग्रह सफल हुआ और कनीरामजी ने सेठ बच्छराजजी को अपना पुत्र दे दिया। सेठ बच्छराजजी ने इस उपकार के बदले में 'काशी के वास' में एक पक्का कुँवा बनवाकर गाँववालों का जलकष्ट दूर कर दिया। वह कुँवा अभी तक है।

सं० १६५१ के ज्येष्ठ मास में जमनालाल जी सेठ बच्छराजजी के पुत्र स्व० रामधन जी की गोद आये और वर्धा में रहने लगे।

सेठ बच्छराजजी का परिचय

सेठ बच्छराजजी के पूर्वज सौ सवा सौ वर्ष पहले सीकर से नागपुर आये थे। सेठ बच्छराजजी के पिता का नाम सेवकराम जी था। वे नागपुर में आकर बसे थे और बच्छराजजी वर्धा में आकर बस गये थे। उनकी आर्थिक दशा साधारण थी। सेठ बच्छराज जी ने अपने पुरुषार्थ से धन और यश दोनों कमाया। अपने समय में, वर्धा में वे ही सबसे बड़े आदमी थे। उनकी बुद्धि बड़ी कुशाग्र थी। व्यापार को वे खूब समझते थे। बड़े धैर्यवान्, साहसी, परिश्रमी और धार्मिक पुरुष थे। वे ज़मींदार भी थे और फ़तहपुर के सेठ हीरालाल रामगोपालजी गनेड़ीवाला के साझे में रुई का व्यापार भी करते थे। सरकार और जनता, दोनों में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। वे रायबहादुर, आनरेरी मजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल मेम्बर थे। मध्यप्रदेश के चीफ़ कमिश्नर और कलक्टर आदि सरकार के उच्च कर्मचारी उनका निमंत्रण स्वीकार करते थे। वे पढ़े लिखे तो बहुत साधारण थे, सिर्फ़ मारवाड़ी 'आंक मांड़ना' जानते थे; पर प्रतिभा ऐसी थी कि व्यापार, पंचायत, दरबार, कचहरी आदि सब प्रकार के लोक-व्यवहार में वे अपनी विशेषता दिखलाते थे। ईश्वर पर उनकी अटल श्रद्धा थी। वे विपत्ति में कभी घबड़ाते न थे। अपने परिश्रम से ही उन्होंने पांच छः लाख रुपये की जायदाद कमाकर छोड़ी थी। जिसमें से अपनी धर्मपत्नी सदी देवी के स्मारक में मंदिर बनवाने के लिए पौन लाख का दान किया था। उसी दान से वर्धा में श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मंदिर वे स्वयं बनवा गये थे। सदी देवीजी आदर्श स्त्री मानी जाती थीं। वे बड़ी धर्मात्मा और दयालु स्त्री थीं। दीन दुखियों पर उनकी बड़ी कृपा रहती थी। दुःख में वे सच्ची



सेठ बच्छराजजी श्रीमती सदीदेवी

श्रीनानाजी महाराज



सहायिका और धैर्य की मूर्त्ति थीं। वर्धा में वे बड़े आदर की दृष्टि से देखी जाती थीं।

सेठ बच्छराज जी के स्वभाव में क्रोध बहुत था। क्रोध आने पर वे गाली-गलोज और मारपीट भी करते थे। मुनीम गुमाश्ते तक उनकी मार खाये हुए थे। पर क्रोध उतर जाने पर वे पछताते भी खूब थे और जिस पर क्रोध करते, उसे फिर प्रसन्न भी कर लेते थे।

सं० १९६४, जे० कृ० ८ (२३-५-१९०८) को सेठ बच्छराजजी का देहान्त हुआ।

शिक्षा

मारवाड़ी बालक की शिक्षा का इतिहास बहुत लंबा-चौड़ा नहीं होता। वह तो मानो धन कमाने ही के लिए संसार में आता है। इससे उसके माता-पिता उसे केवल धन कमाने ही भर की शिक्षा दिलाते हैं। यह शिक्षा कुछ हिसाब-किताब जान लेने और मामूली लिख-पढ़ सकने में ही समाप्त कर दी जाती है। आजकल अँग्रेज़ी में तार लिख देना और बाँच लेना भी शिक्षा में आवश्यक समझ लिया गया है। जमनालालजी की प्रारम्भिक शिक्षा का इतिहास भी कुछ ऐसा ही है। सन् १८९६ की पहली फ़रवरी को आप स्कूल में दाख़िल हुये। मराठी प्रांत होने से स्कूल में मराठी ही पढ़ाई जाती थी। आपने चार क्लास तक मराठी और दो तीन महीने तक अँग्रेज़ी पढ़कर, ३१ मार्च, १९०० में स्कूल छोड़ दिया। स्कूल छोड़ने के बाद, बड़े होने पर आपने अपनी रुचि से हिन्दी, गुजराती और अँग्रेज़ी सीखी। अब तो आप मराठी और गुजराती में मातृभाषा की तरह बातचीत कर सकते हैं। हिन्दी भी ख़ासी जानते हैं। अँग्रेजी समझ लेते हैं और कामचलाऊ बोल भी लेते हैं। व्यापारिक चिट्ठियों और मसौदों में आप शब्दों की पकड़ इस खूबी से करते हैं कि बड़े बड़े क़ानूनदाँ आपकी तीक्ष्ण बुद्धि की सराहना करते हैं। कांग्रेस की वर्किंग कमेटी में आप की यह प्रतिभा खूब काम देती है।

पुस्तकी ज्ञान आपको बहुत कम मिला है। लड़कपन में पुस्तकें पढ़ने का शौक़ आपको बहुत था। पर अधिकांश जीवन-चरित ही पढ़ा करते थे। जीवन-चरित पढ़कर प्रायः यह सोचा करते थे कि 'हम भी बड़े होंगे तो यह करेंगे, वह करेंगे'। तरह तरह की उमंगे मन में उमड़ा करती थीं। कल्पना पर कल्पना उठती रहती थी। सबसे अधिक लाभ आपको सत्संग से हुआ है। विद्वानों और सद्गुरुओं में आपकी स्वाभाविक श्रद्धा थी। जहाँ कहीं किसी विद्वान् या उच्चकोटि के साधु-संत की उपस्थिति सुन पाते थे, वहां पहुँचना और कुछ उपदेश ग्रहण करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। इससे जो ज्ञान आपको प्राप्त हुआ है, और तीक्ष्ण बुद्धि होने के कारण आपने अपने अनुभव से जो सीखा है, वह पुस्तकों से प्राप्त किये हुये ज्ञान से कहीं अधिक उपयोगी और सच्चा है।

बारह, तेरह वर्ष की अवस्था से ही आप समाचार-पत्र पढ़ने लगे थे। पहले पहल वङ्गवासी पढ़ना शुरू किया था। कभी-कभी पढ़कर सेठ बच्छराजजी को सुनाया भी करते थे। जब नागपुर से हिन्दीकेसरी निकला, तब उसे पढ़ने लगे। सन् १९०६ में हिन्दीकेसरी के निकालने का आयोजन हुआ। आपने भी १००) चंदा भेजा। यह सौ रुपया आप ने कहां से दिया, इसका इतिहास बड़ा रोचक है। बात यह थी कि आपको एक रुपया रोज़ दूकान से इसलिये मिला करता था कि इसी लोभ से आप दूकान का कामकाज सीख जायँ। आप अपना रुपया जमा करते रहते थे। फ़जूलख़र्ची की आदत आप में लड़कपन में भी नहीं थी। न खेल तमाशों में आपकी विशेष रुचि थी, न खिलौने खरीदने में। इससे जो रुपये बचते जाते थे, उन्हीं में से सौ रुपया आपने हिन्दी-केसरी की सहायतार्थ भेजा था। अब आप कहते हैं कि "उस समय यह १००) देकर मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ था, वह अब लाखों देकर नहीं होता।"



सेठजी की माता विरदी देवीजी
कमलनयन और कमला के साथ

विवाह

सं० १६५८ में जमनालालजी की सगाई लक्ष्मणगढ़-निवासी सेठ गिरधारीलालजी जाजोदिया की कन्या सौ० जानकीदेवी से हुई। कन्या की अवस्था उस समय ६ वर्ष की थी और आपकी १२ वर्ष की। सेठ गिरधारीलालजी श्रीवैष्णव सम्प्रदाय के शिष्य और अपने गांव के माननीय व्यक्तियों में थे। वे जावरे रहा करते थे। वहीं से वर्धा आये थे। विवाह वर्धा में बड़ी धूमधाम और समारोह के साथ हुआ था, जिसमें लगभग ३५०००) ख़र्च हुये थे।

सौ० जानकीदेवीजी

पुरुष को सौभाग्य से ही अपने मन के अनुकूल स्त्री मिलती है। सौ० जानकीदेवीजी अपने पति की उपयुक्त पत्नी हैं। उनका जन्म माघ कृष्ण ५, सं० १६४६ में हुआ। वे सब प्रकार के विचारों में जमनालालजी से सदा सहमत रहती हैं। विवाह के समय उन्हें हिन्दी का साधारण अक्षरबोध था। विवाह के उपरांत, वर्धा आने पर, जमनालालजी ने उनको दो तीन दर्जे तक मराठी की शिक्षा दिलाई। अब वे हिन्दी और गुजराती भी अच्छी तरह बोल लेती हैं। साधारण व्याख्यान भी दे लेती हैं।

शास्त्र में पतिव्रता के जो लक्षण कहे गये हैं, सौ० जानकीदेवीजी उसकी प्रतिमूर्ति हैं। वे एक धनी और यशस्वी पति की पत्नी और घर की मालकिन हैं; घर में आवश्यकतानुसार काफ़ी नौकर चाकर हैं; पर जमनालालजी के निजी काम अपने हाथ से करने में वे स्वयं सुख अनुभव करती हैं। जमनालालजी के कपड़ों की सँभाल, खानेपीने की व्यवस्था वे स्वयं करती हैं। जमनालालजी के कपड़ों की मरम्मत भी कर देती हैं। जमनालालजी की अनुपस्थिति में घर पर आये हुये उनके निजी मित्रों और मुलाकातियों के यथोचित स्वागतसत्कार की

व्यवस्था करा देती हैं। वे पति के मन से मन मिलाये, छाया की तरह, उनके विचारों के पीछे चलती हैं।

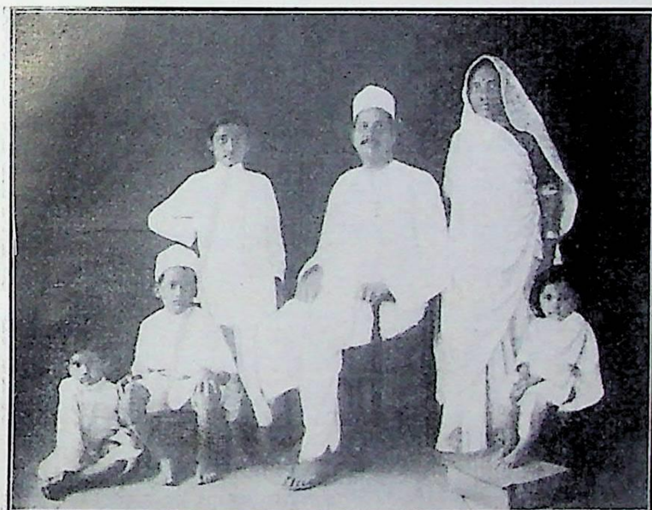
घर-गृहस्थी के प्रबंध में वे बहुत चतुर और रसोई बनाने तथा सीने-पिरोने में बहुत निपुण हैं। गृहस्थी में रोज़ काम आनेवाली साधारण चीज़ें, जैसे साबुन आदि, वे स्वयं बना लेती हैं। बच्चों के कपड़े प्रायः वे स्वयं सी देती हैं। रोज़ चरखा कातती हैं। बच्चों की शिक्षा पर पूरा ध्यान रखती हैं। सदा सावधान रहती हैं कि किसी काम में उनसे कोई भूल न हो जाय।

वे ८।१० वर्षों से स्त्रियों के सुधार के लिये सभा-समाजों में बराबर भाग लिया करती हैं। अवकाश मिलने पर उन्हें पुस्तकें पढ़ने और सुनने का भी शौक़ है। पति के साथ उन्हें भारत में भ्रमण करने का बहुत अवसर मिला है, इससे उनमें साहस भी ख़ूब है। वे यात्रा के कष्टों से घबड़ाती नहीं और कोई दुर्घटना उपस्थित होने पर धैर्य और साहस से काम लेती हैं। असहयोग के समय से सौ० जानकीबाई ने गहना पहनना छोड़ दिया है, यहाँ तक कि पैर की कड़ी भी उतार दी है। कपड़ों में वे मोटा खद्दर पहनती हैं।

नागपुर-झण्डा-सत्याग्रह में जब जमनालालजी जेल गये थे, तब सौ० जानकीबाई ने अपना अद्भुत मनोबल प्रकट किया था। पति ने जेल में से अपना काता हुआ सूत भेजा था। सौ० जानकीबाई न उसी सूत से बने हुये कपड़े का एक राष्ट्रीय झण्डा तैयार करके सत्याग्रह कमेटी को दिया था।

संतान

इस समय जमनालालजी के दो पुत्र और तीन कन्यायें हैं। पुत्रों के नाम कमलनयन और रामकृष्ण हैं। कमलनयन का जन्म माघ शु० ७, सं० १९७१ में हुआ। यह पुत्र वर्धा के सत्याग्रहाश्रम के प्रबंध से चलनेवाले स्कूल में रहता है, और आश्रम के नियमों का



मदालसा, कमलनयन, कमला, सेठजी, सौ० जानकीबाई, उमा
सेठजी सकुटुम्ब

अच्छी तरह से पालन करता है। रामकृष्ण का जन्म माघ शु० १२, सं० १६८० में हुआ।

सबसे बड़ी लड़की कमलाबाई का जन्म द्वितीय आषाढ़ शुक्ला १४, सं० १६६६ (२७-८-१६१२) में हुआ था। इसके जन्म के समय बम्बई से दादाभाई नौरोज़ी की कन्या डा० माणिकबाई, जो विलायत से डाक्टरी पास करके आई थीं, वर्धा में आकर रही थीं। उन्हीं की देख-रेख में प्रसूता रक्खी गई थी, जिससे कोई बीमारी न पैदा हो जाय। मारवाड़ी-समाज में ज़च्चा की सँभाल बड़ी लापरवाही से की जाती है। पर जमनालालजी ने पुरानी रूढ़ि के बदले स्वच्छता और स्वास्थ्यवर्धक उपचारों की पूरी व्यवस्था की थी। डा० माणिकबाई को दादाभाई नौरोज़ी ने भेजा था। वे जमनालालजी पर बड़ा स्नेह रखते थे।

कमला हिन्दी अच्छी तरह जानती है और उसे मराठी और गुजराती का भी काफ़ी अभ्यास है। चरखा कातना, रसोई बनाना, कपड़ा सीना, बच्चों को प्रसन्न रखना ख़ूब जानती है। शरीर से दृढ़ और गृहकार्य में प्रवीण है। शिक्षा के लिये वह १०,१२ महीने सत्याग्रहाश्रम साबरमती में भी रह चुकी है। वह बिल्कुल नये विचारोंवाली कन्या है। उस का विवाह फ़तहपुर के सुप्रसिद्ध नेवटिया कुटुम्ब में श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया के साथ हुआ है।

दूसरी कन्या का नाम मदालसा है। मदालसा का जन्म भा० शु० ६, सं० १६७४ में हुआ। यह कन्या स्वभाव की बड़ी सुशील और बुद्धिमती है।

तीसरी कन्या का नाम ओमदेवी या उमादेवी है। इसका जन्म भा० कृ० १, सं० १६७६ में हुआ।

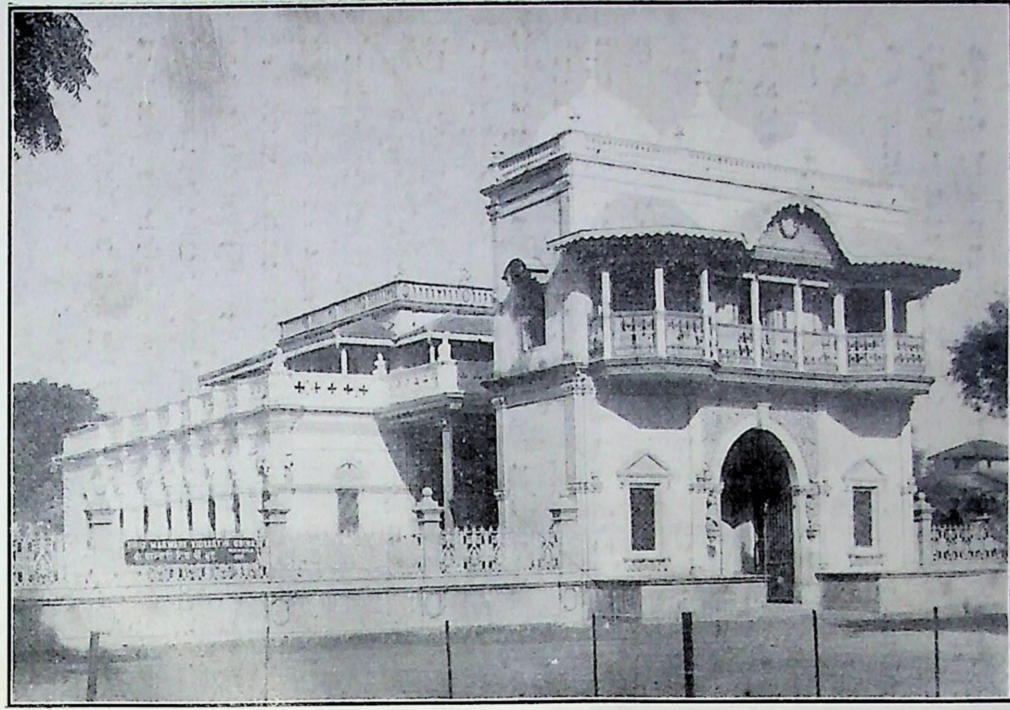
जमनालालजी के पुत्र और कन्यायें सब हिन्दी, मराठी और गुजराती तीनों भाषायें जानते और बोलते हैं। आप कभी-कभी अपने परिवार को दूर-दूर तक यात्रा में साथ ले जाया करते हैं। और कई बार सपरिवार साबरमती आश्रम में भी रहते हैं, तथा कांग्रेस में भी जाया करते हैं। ब्रह्मदेश तक आप सपरिवार यात्रा कर चुके हैं।

इससे कुटुम्ब के सब छोटे-बड़े व्यक्ति देश के नेताओं से परिचित, भिन्न-भिन्न प्रान्तों की रहनसहन से जानकार, यात्रा करने में ढीठ, अपना अपना काम स्वयं कर लेने में मुस्तैद और बातचीत में हाज़िर जवाब और सभ्य हैं। छोटे-छोटे बालक भी बातचीत ख़ूब खुलकर करते हैं और सदा प्रसन्न रहते हैं।

कुटुम्ब

जमनालालजी के कुटुम्ब में इस समय स्त्री और बालबच्चों के सिवा असली मातापिता, बड़े भाई की विधवा स्त्री और उसका एक पुत्र राधाकृष्ण है। मातापिता अब 'काशी का वास' छोड़कर जमनालालजी से पास प्रायः वर्धे ही में रहते हैं, और प्रायः एकान्त-सेवन और ईश्वर-चिन्तन में लगे रहते हैं। पहले लिखा जा चुका है कि जमनालालजी के दो भाई और थे, एक बड़े और एक छोटे। छोटा भाई अविवाहित ही मर गया। बड़े भाई माधवजी व्यापार में बड़े कुशल थे। उनका विवाह हो चुका था। कई वर्ष पहले उनका देहान्त हो चुका है। अब उनका एकमात्र पुत्र राधाकृष्ण और विधवा स्त्री वर्तमान हैं, जो जमनालालजी के ही साथ रहते हैं। राधाकृष्ण की अवस्था इस समय २२ वर्ष की है। उसकी अभी सगाई नहीं हुई है। वह वर्धा के सत्याग्रहाश्रम में रहता है और आश्रम का आदर्श जीवन बिता रहा है। वह बड़ा होनहार समझा जाता है, और उसपर महात्मा गाँधी और वर्धा-सत्याग्रहाश्रम के विद्वान् आचार्य श्रीं विनोबाजी का बड़ा स्नेह रहता है।

कुटुम्ब के सब व्यक्तियों से जमनालालजी का ऐसा निर्मल प्रेम रहता है कि हरएक यही समझता है कि 'जमनालालजी मेरे हैं।' कुटुम्ब में किसी से किसी का पर्दा नहीं। सब एक दूसरे से अपने सुख-दुःख की बातें कह-सुन सकते हैं। मारवाड़ी कुटुम्ब में पर्दे की



श्रीलक्ष्मीनारायणजी का मन्दिर, वर्धा

इतनी कड़ाई रहती है कि बहू यदि बिना घूँघट के अपने सास-ससुर के सामने निकले या बात करे तो इसका यह एक बड़ा अपराध समझा जाता है। चाहे वह बेचारी किसी शारीरिक या मानसिक पीड़ा से भीतर ही भीतर घुटघुट कर मर जाय, पर बड़ों के आगे कुछ बोल नहीं सकती। बोलना निर्लज्जता में दाख़िल है। जमनालालजी ने इस कुप्रथा को प्रायः अपने कुटुम्ब से निकाल दिया है। पर्दा अभी तक है, पर उसे कम करने का प्रयत्न बराबर जारी है।

स्वभाव

बचपन में जमनालालजी का स्वभाव बड़ा शर्मांऊ और संकोची था। संकोचवश वे किसी से बोलते-चालते कम थे। बड़े पाप-भीरु भी थे। माता-पिता ने पाप-पुण्य की जो व्याख्या समझा दी थी, आपके हृदय पर उसकी पूरी पूरी छाप पड़ गई थी। उस समझ के विरुद्ध ज़रा भर भी विचलित होने पर आप मन में पाप से भयभीत हो जाया करते थे। इस संकोची और पापभीरु स्वभाव ने आप को कई बार पाप में गिरने से बचाया।

लोगों का विश्वास है कि पूर्वजन्म के पुण्य से ही धनी घर में जन्म मिलता है। पर परिस्थिति देखते हुये यह भी संभव है कि पूर्व-जन्म के पाप से भी धनी घर मिलता है। धनी घर के लड़कों पर दुर्व्यसनी और चरित्रहीन लोगों की जैसी ताक रहती है, वैसी ग़रीब घर के बच्चों पर नहीं रहती। सौभाग्य से ही कोई धनी घर का लड़का उनके चंगुल से बच निकलता है। जो फँस जाता है, वह पूर्वजन्म के पाप का दण्ड तो अच्छी तरह भोगता ही है, धनी घर का धन भी उसे पापपंक में ढकेलने में सहायक हो जाता है। धनी माता-पिता की असावधानी से उनके लड़के प्रायः उनके नौकरों-चाकरों और उनके सदा के निकटस्थ मित्रों के हाथ से ही बिगड़ते हैं।

जमनालालजी भी धनी के लड़के थे। अतएव उनकी भी किशोरा-

वस्था में इस प्रकार बिगड़ने के कई प्रसंग आये। पर पापभीरुता और मुख्यकर संकोची स्वभाव ने उनकी रक्षा की।

संकोच और पापभीरुता ने किशोरावस्था में चरित्र की रक्षा की तो उससे स्वभाव में कई नये गुण भी विकसित हो उठे। युवावस्था के साथ-साथ आपके स्वभाव में विद्वानों और भिन्न-भिन्न विचार के नेताओं से मिलने की प्रवृत्ति भी बढ़ चली थी। आप नेताओं से मिलते और उनके कथन और आचरण का मिलान किया करते थे। इस प्रकार की सतर्कता आप में बालकपन से ही थी। इससे किसी पर आपका मन जल्दी जमता नहीं था। कुछ लोग इस तरह के स्वभाव को शक्की मिज़ाज कहेंगे। पर इस शक्की मिज़ाज ने ही आपको महात्मा गांधी तक पहुँचाया है। अब गाँधीजी में आपका सब संदेह लय हो गया है और आपने अपने को सम्पूर्ण रूप से गाँधीजी के सुपुर्द कर दिया है। अगर कोई शक्की मिज़ाज किसी व्यक्ति को ऐसे अच्छे परिणाम तक पहुँचा सकता है, तो वह क्या बुरा है ?

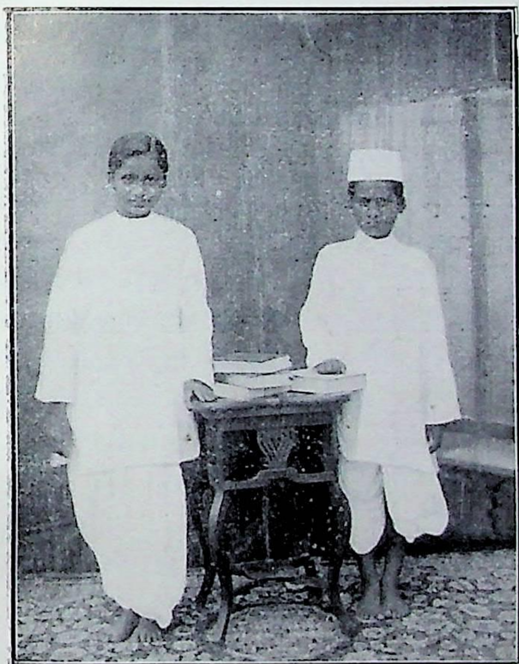
निरभिमानता और अक्रोध आप में बचपन से ही है। पर आयु और अनुभव के साथ साथ स्वभाव में और कुछ नये गुण जाग्रत हुये हैं। उनमें से कुछ का ज़िक्र यहाँ किया जाता है—

निर्भयता

आपके स्वभाव में क्रोध की मात्रा बहुत कम है। इससे वास्तविक निर्भयता बहुत अधिक है। यहाँ कुछ ऐसी घटनायें लिखी जाती हैं, जिनसे आपकी स्वाभाविक निर्भयता प्रकट होती है :—

हिन्दुस्तान में अँग्रेज़ी राज होने के बाद ऐसी घटनायें प्रायः नित्य हुआ करती है कि अँग्रेज़ यात्री रेल के एक ही डब्बे में हिन्दुस्तानी यात्री को प्रायः अपमानित किया करते हैं। इस का कारण कुछ तो रहन-सहन की विभिन्नता और अधिकांशतः अँग्रेज़ों का अहंकार है। वे

ॐ



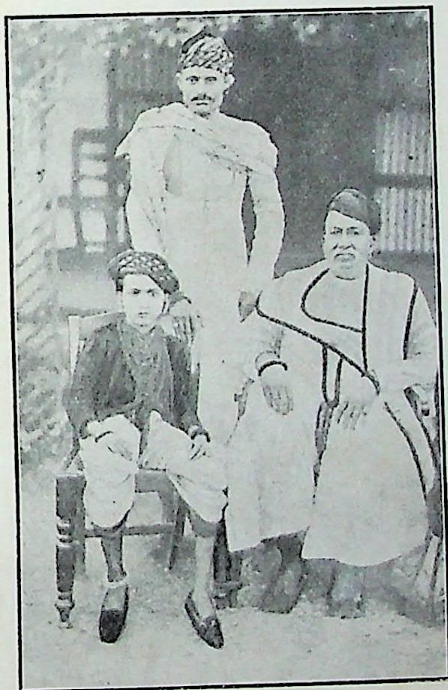
कमलाबाई चि० कमलनयन

विजित जाति के साथ बैठने में अपना अपमान समझते हैं। ख़ैरियत इतनी ही है कि रेलवे ने कम से कम सेकंड और फस्ट क्लास के लिये अँग्रेज़ और हिन्दुस्तानी का अंतर नहीं माना है। टिकट ख़रीद लेने पर प्रत्येक आदमी उसके अनुसार जहाँ स्थान हो, वहाँ बैठ सकता है। इससे ऐसे प्रसंग प्रायः रोज़ ही आया करते हैं कि फर्स्ट और सेकंड क्लास में हिन्दुस्तानी और अँग्रेज़ कभी-कभी साथ-साथ बैठते हैं। यह बात तो सच है कि रहन-सहन की भिन्नता से दोनों को कष्ट होता है। पर यह भी सच है कि हिन्दुस्तानी अँग्रेज़ों से कहीं अधिक सुशील और सहनशील होता है। उग्र स्वभाव के अँग्रेज़ तो कभी-कभी हिन्दुस्तानी यात्रियों के साथ बड़ी ही असभ्यता से पेश आते हैं। जमनालालजी को यात्रा में कई बार ऐसे उद्दण्ड अँग्रेज़ यात्रियों से पाला पड़ा है। उन अवसरों पर आपने जो निर्भयता दिखलाई है, वह एक भारत-वासी के लिये, विशेष कर एक मारवाड़ी के लिये, अभिमान की बात है। अपमान को चुपचाप सह लेना बड़ी नामर्दी है।

७ मार्च, १९१९ को आप फुलेरा से अहमदाबाद जा रहे थे। फर्स्ट क्लास में थे। दो अँग्रेज़ भी उसमें यात्रा कर रहे थे। आप पाख़ाने गये। फर्स्ट और सेकंड क्लास का पाख़ाना मुख्य कर अँग्रेज़ों या अँग्रेज़ी ढङ्ग से रहने वालों के काम का होता है। जमनालालजी ने उसका हिन्दुस्तानी ढङ्ग से इस्तेमाल किया। अर्थात् कमोड पर जूता पहनकर बैठ गये। शौच के उपरांत आपने सज्जनता-वश उस पर से जूते की मिट्टी साफ़ भी कर दी थी। पर आप के बाद जब एक अँग्रेज़ पाख़ाने में गया, तब उसकी दृष्टि में वह गन्दा ही था। पाख़ाने से निकल कर उसने जमनालालजी को संबोधन करके हिन्दुस्तानियों को दुर्वचन कहा और गन्दा बताया। आपने निर्भयता से उसका प्रतिवाद किया और कहा कि इस सम्बन्ध में आप को जो कुछ कहना हो, वह रेल के अधिकारियों से कहिये। रेलवालों का फ़र्ज़ था कि वे हिन्दुस्तानियों के आराम का ख़याल रखकर उनके लिये हिन्दुस्तानी ढङ्ग का पाख़ाना

बनवाते। वह अंग्रेज B.B.C.I. रेलवे का D.T.S. था। जमनालाल जी ने केवल मौखिक प्रतिवाद करके ही उसका पिण्ड नहीं छोड़ा, बल्कि उसे वकील की चिट्ठी भी दिलाई कि वह क्षमा माँगे, नहीं तो उस पर मानहानि की नालिश की जायगी। दूसरा अँग्रेज़ एक फ़ौजी अफ़सर था। वह आबू में उतर गया था। उसे भी गवाही में तलब करनेवाले थे। पर चिट्ठी पाते ही पहले अँग्रेज़ के होश ठिकाने आ गये और उसने पत्र लिखकर माफ़ी मांग ली।

सन् १९०७ में एक बार आप उत्तर भारत में यात्रा कर रहे थे। हरद्वार से आते समय आप लुक्सर स्टेशन पर सेकण्ड क्लास में बैठने को गये तो देखा कि उसमें तीन फ़ौजी गोरे बैठे हुए हैं। वे किसी हिन्दुस्तानी को भीतर आने ही नहीं देते थे। देहरादून के एक वकील साहब भी बाहर खड़े थे। उनको भी कहीं जगह नहीं मिली थी। वे भी गोरों के डर से भीतर घुसने का साहस नहीं करते थे। दिमाग़ में तो उनके क़ानूनी बल ज़रूर रहा होगा। पर शरीर और उसके साथ ही साथ हृदय का बल वे किसी युनिवर्सिटी को गुरु-दक्षिणा में दे चुके थे। गोरे एक तो गोरे, दूसरे शराब पिये, तीसरे बंदूक लिये; भला, उनका सामना वकील साहब कैसे कर सकते थे? जमनालालजी जब आये तो गोरों ने उन्हें भी घुड़क लिया। वकील साहब ने जमनालालजी को सम्मति दी कि चलिये साहब, कहीं ड्योढ़े दरजे में बैठ रहें, ये लोग बड़े शैतान होते हैं, इनके साथ अपनी गुज़र नहीं। पर जमनालालजी तो किसी युनिवर्सिटी में अपना आत्मगौरव नहीं खो चुके थे। आपने स्टेशन मास्टर से शिकायत की। स्टेशन मास्टर भी अँगरेज़ था; पर था भला आदमी। उसने आते ही गोरों से टिकट मांगा। गोरों के पास थर्ड क्लास का टिकट था। स्टेशन मास्टर ने उन्हें निकाल बाहर किया। वे सर्वेंट क्लास में जा बैठे। जाते-जाते वे धमकाते भी गये कि गाड़ी चलने दो तो हम तुम लोगों की ख़बर लेंगे। उनकी धमकी सुनकर जमनालालजी ने नौकर से कहा—ज़रा मोटा डंडा लाकर मेरे पास



रामधनदासजी सेठ बच्छराजजी

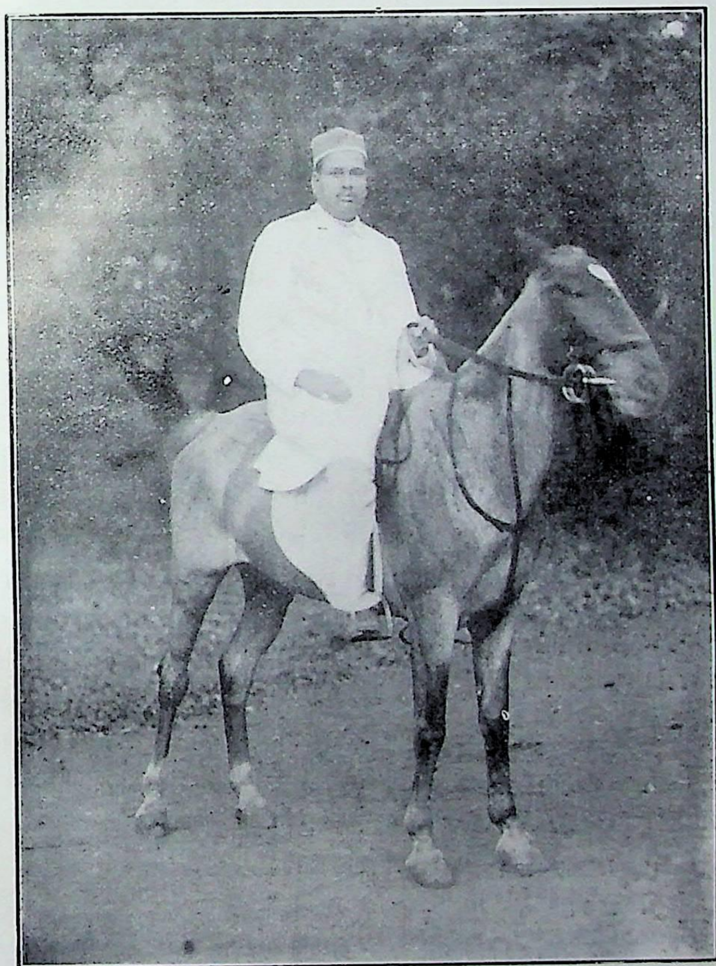
रख तो जाओ। नौकर गोरों के सामने ही एक मोटा सा डंडा लाकर आपके पास रख गया। अब गोरों ने समझा कि हाँ, यह मनुष्य है। गाड़ी चली। पर गोरे न दिखाई पड़े। जमनालालजी तो सो गये। पर वकील साहब का बुरा हाल था। रात भर उन्हें नींद न आई। ज़रा भर भी खटका होता था तो वे भयभीत होकर दरवाज़े की ओर झांकने लगते थे। स्टेशन पर जब गाड़ी खड़ी हो जाती थी, तब तो उनके भय की मात्रा और बढ़ जाती थी।

इसी प्रकार सन् १९०८ या ९ में मथुरा स्टेशन पर एक बिगड़े दिल अँग्रेज़ से और मुठभेड़ हो गई। आप सेकण्ड क्लास में थे। बैठने के बाद स्टेशन मास्टर ने उसे एक अँग्रेज़ के लिये रिज़र्व कर दिया। आपका कुछ सामान अभी बाहर ही था कि वह अँग्रेज़ दरवाज़ा रोक कर खड़ा हो गया और सामान को भीतर आने से रोकने और कुछ बड़बड़ाने लगा। जमनालालजी भीतर और उनका सामान बाहर; गाड़ी छूटने का वक्त क़रीब। जमनालालजी इस अपमान को सहन नहीं कर सके। आपने उसकी पीठ में एक घूँसा मारा और कहा—हटो। घूँसे ने साहब का नशा उतार दिया। उसने समझा कि यह तो कोई मनुष्य है। वह दरवाज़े से हटकर एक किनारे हो गया। कुलियों ने जमनालालजी का सामान अन्दर रख दिया। स्टेशन मास्टर ने जब आपको फर्स्ट क्लास में जगह दी, तब आपने उसे छोड़ा।

फर्स्ट और सेकंड क्लास में सफ़र करने का आपको प्रायः बहुत मौक़ा मिलता रहता है। अतएव ऐसी घटनायें और भी हुई हैं। पर स्थानाभाव से यहाँ सब का उल्लेख नहीं किया जा सकता। पर एक घटना की चर्चा मैं यहाँ अवश्य करूँगा, जिससे आपकी निर्भयता प्रकट होती है।

लगभग १५ वर्ष पहले की बात है। आप बम्बई में रात के १ बजे नाटकघर से लौट रहे थे। एक नौकर साथ था। गाड़ी के लिये

आप चर्नीरोड स्टेशन तक पैदल गये। वहाँ एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी। आपने गाड़ीवाले से भाड़ा तै किया और गाड़ी में बैठकर उसे कालबादेवी रोड ले चलने को कहा। वह शराब के नशे में था। इससे वह कालबादेवी ले जाने के बदले आपको सीधे महाबलेश्वर की तरफ़ ले गया और वहाँ एक मकान के सामने गाड़ी खड़ी करके बोला कि उतरो। आपने झाँककर देखा तो गाड़ी दूसरी ही जगह खड़ी है। आपने उससे कहा कि कालबादेवी चलो। उसने कहा—यहीं के लिये किराया तै हुआ था, यहीं उतरो; मैं और कहीं न जाऊँगा। आपने नौकर को कहा कि यह शराब पिये हुये मालूम होता है, तुम इसके पास बैठकर गाड़ी हँकवाओ। नौकर जैसेही नीचे उतरा, गाड़ीवाले ने एक हंटर जमाही तो दिया। नौकर तिलमिला उठा। अब सेठजी उतरे। आपको भी वह हंटर मारने चला। इसपर आपने नौकर की सहायता से उसे कोचबक्स से नीचे खींच लिया और पिटवाया भी। ऊपर से गिरने से उसके घुटने भी फूट गये थे। उसे गाड़ी में लादकर और नौकर को उसके पास बैठाकर आप स्वयं गाड़ी हाँककर पुलीस चौकी पर पहुँचे। रात के तीन बजे होंगे। दारोगा साहब सो रहे थे। जगाये जाने पर उन्होंने कहा—छः बजे सबेरे 'रपट' लिखी जायगी। सेठजी गाड़ी को पहरेवाले सिपाही के सुपुर्द करके और उसका नम्बर लेकर घर चले गये। घर से आपने पुलीस के उच्च अफ़सर को एक पत्र लिखा; जिसमें उस रात की कुल घटना सत्य सत्य लिख दी। पत्र में गाड़ीवाले को कोचबक्स से खींच लेने, उसके घुटने में चोट आने और फिर उसे पीटने का भी ज़िक्र था। अंत में दारोगा के कर्त्तव्यपालन की अवहेलना की भी शिकायत की। थोड़े दिनों के बाद पुलीस अफ़सर का पत्र आया, जिसमें यह सूचना थी कि जाँच करने के बाद गाड़ी का लाइसेंस छीन लिया गया और दारोगा मुअत्तल कर दिया गया। और पुलीस की लापरवाही से जो कष्ट मिला, उसके लिये बम्बई के सभ्य पुलीस अफ़सर ने खेद भी प्रकट किया था।



सेठ जमनालालजी घोड़े पर
(माथेरान ३०-४-१९१२)



यह घटना स्वयं बतलाती है कि आपके हृदय में न्याय पाने के लिये कितनी निर्भयता रहती है।

आत्म-निर्भरता

आप में आत्म-निर्भरता भी ख़ूब है। न धनी होने का गर्व है, न निर्धन हो जाने की चिन्ता। प्रत्येक स्थिति में आप को अपने ऊपर पूरा विश्वास रहता है। इससे मन में सदा शांति बनी रहती है। जब आप की अवस्था १७ वर्ष की थी, उस समय आपने सेठ बच्छराजजी को एक पत्र लिखा था। उस पत्र की अक्षरशः प्रतिलिपि हिन्दी-अक्षरों में यहाँ दी जाती है। उससे आपकी आत्मनिर्भरता का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

पत्र की प्रतिलिपि

॥ श्री गणेशजी ॥

सिद्ध श्री वर्धा शुभस्थान पूज्य श्रीबच्छराजजी रामधनदास सूँ लिखी चि० जमन का पावाधोक बाँचीजो। अठे उठे श्रीलक्ष्मीनारायण जी महाराज सदा सहाय छे। उपरंच समाचार एक बाँचीजो। आपकी तबीयत आज दिन हमारे ऊपर निहायत नाराज होय गई सो कुछ हरकत नहीं। श्रीठाकुरजी की मरजी और गोद का लियोड़ा था जद आप इस तरह कह्यो। सो आपको कुछ भी कसूर नहिं, जि को हमाँ ने गोद दियो जिनेको कसूर छे। बाकी आप कयो कि तुम नालिस करो सो ठीक। बाकी हमारो आपके ऊपर कुछ कर्जो छे नहीं। आपको कमायड़ो पीसो छे। आपकी खुसी आवे सो करो। हमारो कुछ आप ऊपर अधिकार छे नहीं। हमाँ आपसों आज मिती ताईं तो हमारे बारे में अथवा जो हमारे ताईं जो खर्च हुयो सो हुयो बाकी आज दिन सूँ आप कनेसूं एक छदाम कोड़ी हमां लेवांगा नहीं, अथवा मँगावांगा नहीं। आप आपके मन मां कोई रीत का बिचार करजो मत

ना। आपकी तरफ़ हमारो कोई रीत का हक आजदिन सों रह्यो छे नहीं और श्रीलक्ष्मीनारायणजी सूँ अर्ज ये है कि आपको शरीर ठीक राखे और आपनो हाल बीस पचीस बरस तक कायम राखें। और हमां जठे जावांगा, वठे सूं थाके ताईं इस माफ़िक ठाकुरजी से विनती करेंगा। और म्हारे सूं जो कुछ कसूर आज ताईं हुयो सो सब माफ़ करजो। और आपके मन में हो की सब पीसा का साथी है, पीसा के ताईं सेवा करे छे सो हमारे मन मां तो आप की पीसा की बिल्कुल छे नहीं और भी ठाकुरजी करेंगा तो आपके पीसे की हमारे मन मां आगे भी आवेगी नहीं। कारण हमारो तगदीर हमारे साथ छे। और पीसो हमारे पास होकर हमां काईं करेंगा। म्हाने तो पीसा नजीक रहने की बिल्कुल परवा छे नहीं। आपकी दया से श्रीठाकुर जी का भजन सुमरन जो कुछ होवेगा सो करेंगा। सो इस जनम मांही भी सुख पावेगा और अगला जनम मांही भी सुख पावेगा। और आप आपके चित्त मां प्रसन्नता राखियो। कोई रीत को फिकर करजो मतना। सब झूठा नाता छे। कोई कोई को पोतो नहीं। और कोई कोई को दादो नहीं। सब आप आप का सुख का साथी छे। सब झूठो पसारो छे। आप हाल ताईं मायाजाल मांही फंस रह्या छो, हमां आज दिन आपके उपदेश सूँ मायाजाल सूँ छूट गया छां। आगे श्री भगवान संसार सूँ बचावेगा। और आपके मन मां इस तरह बिल्कुल समझजो मत ना कि हमारे ऊपर नालिस फरियाद करेगा। हमां हमारे राजीखुशी सों टिकट लगाकर सही कर दीनी छे कि आपके ऊपर अथवा आपकी स्टेट पीसा रुपया गहना गांठा और कोई भी सामान ऊपर आज से बिल्कुल हक रह्यो नहीं सो जाणजो। और हमारे हाथ को कोई को करजो छे नहीं। कोई ने भी एक भी पीसो देनो छे नहीं सो जाणजो। और तो समाचार छे नहीं। और समाचार तो बहुत छे, परन्तु हमारे से लिखो जावे नहीं। संवत् १९६४ मिती बैसाख बदी २, मङ्गलवार।

एक आने का टिकट

पूज्य श्री १०५ दादा जी श्री १०५ बच्छराज जी सूँ जमन का पाँवा

धोक बाँचीजो

वर्णों वर्णों मान सेती आपकी तरफ हमारो कोई रीति को लेन-देन रही नहीं। श्रीठाकुरजी के मन्दिर को काम बराबर चलाजो। और आप सूँ दान धरम बने सो ख़ूब करता जाइयो और ब्राह्मण साधू ने गाली बिल्कुल दीजो मत ना। और कोई ने भी हाथ का उत्तर देइजो, मुँह को उत्तर दीजो मत ना। ज्यादा कांईं लिखाँ। इतना माँहें समझ लीजो। और हमां आपकी चीजाँ सागे ल्यांगा नहीं। सो सर्व अठेईं आपका छोड़ गया छाँ। खाली आँग ऊपर कपड़ा पहरेयाँ छाँ।

यह १७ वर्ष के एक नवयुवक का पत्र है जो एक ग़रीब माता-पिता के घर जन्म पाकर एक लखपती की गोद आया था। अक्षर अक्षर में आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की झलक है। प्रत्येक पंक्ति से त्याग, वैराग्य और सत्कार्य की ओर स्वाभाविक रुचि प्रकट हो रही है। इस पत्र का परिणाम यह हुआ कि सेठ बच्छराजजी का क्रोध प्रेम में परिवर्तित हो गया और उन्होंने आपको मना लिया। इस पत्र में ही जमनालालजी का आजतक का जीवन-चरित्र संक्षिप्त रूप में वर्तमान है। यह पत्र ऐसा उपदेशपूर्ण है कि दादे की ओर से पोते को लिखा जाना चाहिये था। पर लिखा है एक नवयुवक पोते ने। पत्र समाप्त करते करते मेरी आँखें भर आईं। पता नहीं, इस जीवनी के सहृदय पाठक इस पत्र को कितना महत्व देंगे।

निश्चय की दृढ़ता

संसार में निश्चय की दृढ़ता विरले ही पुरुषों में होती है। निश्चय पर क़ायम रहकर विघ्नबाधाओं का मुक़ाबला करना साधारण आत्मबल का काम नहीं है। जमनालालजी में यह गुण विशेष रूप में पाया जाता है। आप पहले तो किसी बात के निश्चय करने में जल्दबाज़ी नहीं करते। खूब सोचते-समझते हैं। मित्रों से विवाद करते हैं। अपनी कमज़ोरियों को टटोलते हैं। जब सब तरह से अपने मन को मज़बूत पाते हैं, तब दृढ़तापूर्वक आगे क़दम रखते हैं। फिर कोई भय या प्रलोभन आप को विचलित नहीं कर सकता। इसी प्रकार जब आप कोई बात अपनी आत्मा के विरुद्ध पाते हैं, तब उसे त्यागने में भी किसी कष्ट की परवा नहीं करते। समाज-सुधार के कामों में जातिच्युत होने का भय, मित्रों और सगे-सम्बन्धियों से सम्बंध त्याग का भय तथा कट्टर लोगों की गाली का भय हमेशा बना रहता है। पर आपने जिस काम को समाज के लिये हितकारक समझा, उसे करही डाला। आज समाज में कुछ लोग इसे उच्छृंखलता भलेही कहें, पर जब इसका अच्छा परिणाम समाज को मिलने लगेगा तब जमनालालजी मारवाड़ी-समाज में पूजे जायँगे। यहाँ कुछ ऐसी घटनायें लिखी जाती हैं, जिनसे आपके निश्चय की दृढ़ता प्रकट होती है—

सन् १९१० के आसपास की बात है। आप जयपुर देखने गये थे। वहाँ आपके एक मित्र झूँझनूवासी बाबू रामविलासजी खेतान मिले। इसके पहले खेतानजी के लड़के के विवाह में जाने का वादा दोनों में हो चुका था। पर खेतानजी निमंत्रण देना भूल गये थे। आपने हँसी-हँसी में उन्हें उलहना दिया। उन्होंने लज्जित होकर क्षमा माँगी। आपने कहा—कुछ दंड दीजिये तो क्षमा करूँ। उन्होंने पूछा—क्या ? आपने कहा—मारवाड़ी विद्यार्थी गृह के लिये १००००) चंदा

दीजिये। उन्होंने कहा—ऐसे तो नहीं, दान लीजिये, तो दूँ। आपने कहा—अच्छे काम के लिये दान लेना मैं पाप नहीं समझता। उन्होंने कहा—अच्छा, दान लीजिये, मैं देता हूँ।

वहीं और भी कई मित्र बैठे थे। सब के सामने फ़तहपुर के पं० मटरूमलजी निर्मल से आपने संकल्प पढ़ने को कहा। निर्मलजी ने यह संकल्प पढ़ दिया कि "जमनालालजी द्वारा ये रुपये मारवाड़ी विद्यार्थी गृह के काम में लगाये जायँ"। जमनालालजी ने दान ले लिया। इस पर समाज में चर्चा उठ खड़ी हुई। आपके एक दो पूज्य कुटुम्बियों ने कहा—"तुमको दान न लेना चाहिये था। दान तो ब्राह्मण लेते हैं। तुमने यह पाप किया है। काशी जाकर प्रायश्चित्त करो।"

आपने कहा—मुझे तो इसमें कोई हानि नहीं दिखाई पड़ती। उनके रुपये उन्हीं के काम से एक अच्छे काम में लगे। यही मेरी इच्छा थी। मैं तो एक निमित्तमात्र था।

आपने प्रायश्चित्त नहीं किया। १०००) मिल गये और उक्त खेतानजी के नाम से संस्था में जमा किये गये।

सन् १९१२ या १३ की बात है। मध्यप्रदेश की सरकार ने नागपुर में प्रांतीय दरबार किया। जमनालालजी भी दरबारी थे। आपके पास कलक्टर के द्वारा निमंत्रणपत्र आया और साथ ही पोशाक के सम्बन्ध में एक हिदायत भी आई कि काला पतलून, काला कोट, काला बूट और अपने अपने समाज में प्रचलित ढंग की पगड़ी पहन कर दरबार में आना होगा। आपने लिख भेजा कि मैं पतलून कभी पहनता नहीं। इसलिये पहनना चाहता नहीं। और uniform के नियमों का पालन नहीं कर सकता। यदि ऐसा ही नियम रहा तो मेरे लिये दरबार में शामिल होना कठिन होगा।

लोगों ने बहुत डराया कि कमिश्नर नाराज़ हो जायँगे। पर आपने पोशाक के विषय में अपना निश्चय क़ायम रक्खा। पीछे पत्र आया कि

आप चाहे जिस ड्रेस में दरबार में शामिल हो सकते हैं। आप अपने निजी [मारवाड़ी] पहनावे में दरबार में गये।

वर्धा में आप के घर पर सरकार के बड़े बड़े अधिकारी प्रायः आया करते थे। सेठ बच्छराजजी के बाद आप के बुलाये हुये तीन गवर्नर आपके घर पर टी पार्टी में आये थे। पहले दो बार सर रेजिनाल्ड क्रैडक और सर बेंजमिन राबर्टसन को टी पार्टी दी, तो देशी चीजों के साथ साथ शराब और आइसक्रीम आदि विलायती मिठाइयाँ भी, जिनमें मुर्गी के अंडे पड़े रहते हैं, रक्खी गईं थीं। गवर्नर तो शायद ही शराब पीते थे। हाँ, साथ के छोटभैये ख़ूब उड़ाते थे। जब आपको यह ख़याल आया कि शराब और आइसक्रीम देना पाप है, तब आपने तीसरी बार की पार्टी में, जिसमें सर बेंजमिन राबर्टसन गवर्नर की हैसियत से दुबारा आये थे, और साथ में सर फ्रैंकस्लाई भी थ, बिल्कुल शुद्ध देशी खाना देना चाहा। कलक्टर को पता चलते ही उसने बुलाकर समझाया कि शराब आदि न देने से गवर्नर नाराज़ होंगे। आपने कहा—नाराज़ हों, चाहे खुश हों, जो बात मुझे अनुचित जान पड़ती है, उसे तो मैं न करूँगा। कलक्टर ने मजबूर होकर कहा—अच्छा, जैसा जी में आवे, वैसा करो। गवर्नर आये। आपने बिल्कुल शुद्ध स्वदेशी चीज़ों की पार्टी दी। गवर्नर को सब बातें मालूम हुईं तो उसने आपकी निर्भीकता और आत्म-सम्मान के भाव की बड़ी प्रशंसा की।

जब मिस्टर मांटेगू हिन्दुस्तान में आये थे तब दरभङ्गा महाराज ने सनातनधर्म का एक डेपुटेशन लेकर मिस्टर मांटेगू से मिलना चाहा। डेपुटेशन के मेम्बरों में मध्यप्रदेश की ओर से जमनालालजी का नाम था। डेपुटेशन और ख़ास मेम्बरों के नामों की स्वीकृति भी मिल गई थी। मेम्बरों की संख्या थोड़ी ही थी। आपको जब मालूम हुआ कि डेपुटेशन जिन विषयों को लेकर मिलना चाहता है, उनमें फ़ौज के लिये गोवध-निषेध का नाम नहीं, तब आपने डेपुटेशन में जाना अस्वीकार

कर दिया। इस पर दरभङ्गा महाराज ने दो दिन तक बहुत कोशिश की, पर आपने स्वीकार नहीं किया। इस पर वे बहुत नाराज़ भी हुये। पर आपने अपने निश्चय के सामने उनकी नाराज़गी की कुछ परवा न की मिस्टर मांटेगू सरीखे उच्चपदस्थ साहब से मिलने के लिये कितने ही लोग अपनी मान-मर्यादा को तिलाञ्जलि दे देते हैं; कितने ही खूब धन ख़र्च करते हैं; और कितने ही खुशामद करके भी सफल-प्रयत्न नहीं होते। पर जमनालालजी ने तो हाथ में अनायास आया हुआ अवसर केवल एक आवश्यक बात की कमी से छोड़ दिया। इससे आप का चरित्रबल और निश्चय की दृढ़ता भलीभाँति प्रकट होती है।

उन्हीं दिनों महाराज बर्दवान ने भी मिस्टर मांटेगू से मिलने के लिये ज़मीदारों के एक डेपुरेशन की रचना की थी; जिसमें मध्यप्रदेश की ओर से जमनालालजी का भी नाम था। पर आप नहीं गये। आपने देखा कि राजा लोग अपने स्वार्थ के लिये डेपुटेशनों की रचना किया करते हैं। मेम्बर लोग अपना मान समझते हैं कि बड़े साहब से हाथ मिलायेंगे और उनके बराबर बैठेंगे। पर यह मान मिथ्या है। हाँ, डेपुटेशन के मुखिया राजा लोग डेपुटेशन की आड़ लेकर अपना स्वार्थ अवश्य सिद्ध कर लेते हैं।

सामाजिक कामों में भी आप अपने निश्चय के बड़े पक्के हैं। महात्मा गांधी से सम्बन्ध होने पर जब आप उनके आश्रम में साबरमती जाया करते थे, तब आश्रम में भोजन नहीं करते थे। या तो वहाँ के अन्य मित्रों के यहाँ भोजन कर लेते थे या फल आदि खा लेते थे। आश्रम में छुआछूत का विचार नहीं है। इससे आप १९१६ वर्षों तक, जब तक अपने विचार को पक्का नहीं कर लिया, भोजन संबन्धी नियमों का प्रत्यक्ष में भी और परोक्ष में भी वैसा ही पालन करते रहे, जैसा मारवाड़ी-समाज में प्रचलित है। महात्मा जी ने पूछा भी तो आपने यही उत्तर दिया कि जब तक यह काम सबके सामने करने का साहस मुझ में न होगा, तब तक मैं न खाऊँगा।

महात्मा गाँधीजी १९२२ में जिस दिन गिरफ़ार हुये, उसी दिन से आपने आश्रम में कच्चा खाना प्रारम्भ किया। अब आप कच्चे-पक्के का भेद नहीं मानते। न छूत-अछूत का परहेज़ करते हैं। रेल में भी कच्चा भोजन कर लेते हैं। भोजन में शुद्धता ही को आप प्रधान मानते हैं। भोजन के प्रश्न को लेकर मारवाड़ी-समाज में आपके प्रति कुछ दिनों तक बड़ी हलचल रही। आपको जातिच्युत करने की धमकियाँ दी गईं। कुछ लोगों ने आपके साथ खानपान का सम्बन्ध त्याग भी दिया। पर आपने सब कष्टों के सामने सिर झुका लिया और कष्ट पहुँचाने वालों के प्रति पहले जैसा ही सद्भाव क़ायम रक्खा।

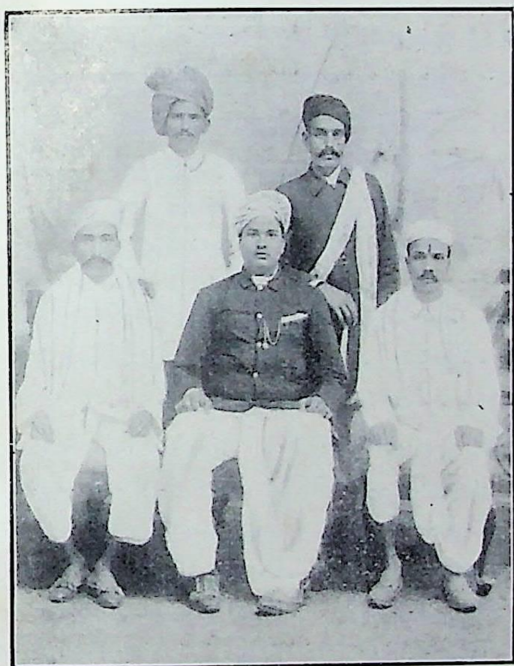
मित्रता का निर्वाह

जमनालाल जी जिससे मित्रता कर लेते हैं, उससे सद्भाव बनाये रखने के लिये सदा सावधान रहते हैं। स्वयं हानि उठा लेते हैं, पर मित्रता पर आघात नहीं आने देते। मित्रों के दुःख में बिना बुलाये शरीक हो जाते हैं। किसी को सहायता की आवश्यकता होती है तो चुपचाप सहायता पहुँचा देते हैं। सच्ची मैत्री को चरितार्थ करने में कभी नहीं चूकते।

मध्यप्रदेश के कई गवर्नरों से आपका परिचय मित्रता की सीमा तक पहुँचा हुआ था। यद्यपि राजनीतिक मतभेद के कारण अब उनसे सम्बन्ध नहीं रह गया। पर आप उनके व्यक्तित्व का आदर अब भी करते हैं और प्रशंसा के साथ उनको स्मरण करते हैं। गवर्नर भी आपको खूब याद करते हैं, और बार-बार मिलने का संदेशा भेजते हैं। राजनीतिक मदभेद होने पर भी आपका वे लोग बड़ा ख़याल रखते हैं।

कष्ट-सहिष्णुता

सेठ जमनालालजी युवावस्था के प्रारम्भ से ही कष्ट सहने की आदत डालते रहे हैं। हृदय में कष्ट सहने की हिम्मत थी, इसका पता तो दादाजी के नाम लिखे हुये उनके पत्र से ही, जो पहले दिया जा



बैठे हुये—
हीरालालजी ओसवाल, सेठजी, बालारामजी चूडीवाल
खड़े हुये गले में डुपट्टा डाले हुये—ज्वालादत्तजी गनेड़ीवाला

चुका है, मिल सकता है। पहले आप बहुत मोटे थे। एक बड़ी सी तोन्द, जो कमर पर चारों ओर धोती के बाहर लटकी रहती थी, शरीर को बड़ा बेडौल बनाये हुये थी। उसे घटाने के लिये आपने कसरत करना शुरू किया। बम्बई में रोज़ समुद्र किनारे तैरना सीखने जाने लगे। इस पर भी तोन्द न पची तो आपने आहार ही कम कर दिया। केवल एक समय भोजन करने लगे। इस रामबाण औषध से तोन्द को पचना ही पड़ा और अब उसका पता ही नहीं। अब शरीर काबू में आ गया और सुडौल हो गया है।

खाने-पीने और रहन-सहन में आप जानबूझ कर कभी-कभी कष्ट उठाते रहते हैं। पूछने पर कहते हैं कि कभी अचानक कष्ट आजाय तो हारना न पड़े। कभी रूखी-सूखी रोटी गरीबों की तरह नमक से खा लेते हैं। कभी मामूली चटाई बिछाकर ज़मीन पर ही सो रहते हैं। कभी थर्डक्लास में ही यात्रा करते रहते हैं। अभी थोड़े दिन की बात है, वर्धा से बम्बई तक रेल में आपका और मेरा साथ हो गया। मैं तो थर्डक्लास का ही जीव हूँ। सेठजी भी थर्ड ही में बैठ गये। थर्ड में भीड़ बहुत थी। मैंने बहुतेरा कहा कि आप सेकण्ड में चले जाइये। आपने कहा—नहीं, मैं तो कई बार थर्ड में भी सफ़र किया करता हूँ। किसी तरह शाम हुई। रात के आठ बजे। आपने कटोरदान में से भाकरी (गेहूं की सूखी और कड़ी मोटी रोटी) निकाली और उस पर एक किनारे थोड़ा सा नमक रक्खा, एक किनारे थोड़ा सा गुड़। दूसरे हाथ से तोड़-तोड़कर नमक और गुड़ से रोटी खाई, पानी पिया और तैयार हो गये। फिर प्रार्थना की। अब सोने की फ़िक्र हुई। कहीं जगह न थी। थर्डक्लास में एक तरफ़ ऊपर की सीट पर सामान रक्खा हुआ था। उसे एक तरफ़ खसका कर एक कोने में थोड़ी सी जगह निकाली गई। संभवतः दो-ढाई हाथ से अधिक जगह नहीं थी। उसी में आप जाकर फिट हो गये। मेरे पास के कुछ यात्री उतर गये, इसलिये मुझे भी थोड़ी जगह मिल गई थी। मैं भी टांगें सिकोड़ कर सो रहा।

बहुत देर तक टाँगें सिकोड़े रखने में जब घुटनों में दर्द होने लगता तो मैं टाँगें सीधे छत की ओर खड़ी करके सुस्ता लिया करता था। पर सेठ जी को यह सुभीता नहीं था। क्योंकि वे छत के बहुत पास थे। रात किसी तरह कट गई। सबेरे जागने पर आपने यह बहस छेड़ दी कि रात को अधिक आराम से कौन सोया? मुझे उनकी कष्ट-सहिष्णुता और फिर इस प्रकार के विनोद पर बड़ा ही आनन्द आया। जीवन को सुधारने की सच्ची लगन इसी को कहते हैं।

बम्बई में एक दिन मैंने आपसे मिलने का समय निश्चित किया। हम दोनों की घड़ियाँ मिली हुई नहीं थीं। सबेरे आठ बजे का समय निश्चित हुआ। आप सबेरे ५—६ मील का पैदल चक्कर लगाकर लौट रहे थे कि आपको आठ बजे का वादा याद आया। घड़ी देखी तो पैदल पहुँचने के लिये समय कम था। आप तीन पैसे का टिकट कटाकर रेल में बैठ गये और आठ बजे घर पहुँच गये। मैं अपनी घड़ी के अनुसार प्रायः ठीक समय पर, पर आपकी घड़ी के अनुसार देर में आया। आते ही पहला वाक्य आपने कहा—"आपने आज हमारा तीन पैसे का नुक़सान कराया। आप इतनी देर करके आवेंगे, ऐसा मुझे मालूम होता तो मैं इतनी देर में पैदल ही घर पहुँच सकता था।" आपकी इस मितव्ययता का मुझ पर बड़ा असर पड़ा। एक ओर लाखों का दान, दूसरी ओर तीन पैसे के लिये उलहना; मेरे लिये तो बड़ा ही कौतूहल-वर्धक था।

सन् १९१५ या १६ की बात है। आप को बम्बई में सन्निपात हो गया। सेठ दामोदरदास जी राठी मौजूद थे। सब को आप के जीवन से निराशा हो गई थी। पर आपके मन में कुछ भी घबराहट न थी, पूर्ण शान्ति थी। लोगों को आपकी यह निश्चिंतता देखकर आश्चर्य होता था।

सन् १९१७-१८ में कलकत्ते के पास बोटनिकल गार्डन में आप साइकिल पर घूम रहे थे। संयोग से एक मोटर से टक्कर लग गई।

आप गिर पड़े। घुटने में बड़ी चोट आई। मांस के अंदर कंकड़ धँस गये थे। डा० सर्वाधिकारी ने घाव में से कंकड़ आदि निकाले थे। घाव बहुत बड़ा था। बड़ी पीड़ा थी। बिना क्लोरोफार्म दिये ही घाव सिया गया। दस टाँके लगे, पर आपने 'सी' तक न की। डाक्टर लोग आपके इस मनोबल पर, कष्ट सहने की शक्ति पर आश्चर्य करते थे। विज्ञानाचार्य सर जे० सी० बोस और कवीन्द्र टैगोर देखने आये थे। १॥ महीने तक तकलीफ़ थी। डाक्टर बोस विलायत जा रहे थे। उन्होंने आपको वर्धा तक छोड़ जाने के लिये दो दिन तक अपना जाना स्थगित कर दिया। जब आप आराम होकर वर्धा जाने लगे तब डाक्टर बोस वर्धा तक आपके साथ आकर, आपको पहुँचाते हुये, विलायत गये।

शारीरिक कष्ट सहने की शक्ति के साथ-साथ मानसिक कष्ट सहने की भी आप में अद्भुत शक्ति है। कितनी ही बार लोगों ने जातिच्युत करने की धमकियाँ दीं, पर आप निर्भय बने रहे और धमकियों से उत्पन्न हुये विक्षोभ को प्रेम और सौहार्द रूप में परिवर्तित कर दिया। धमकी देने वालों के प्रति सद्भाव में कमी भी न होने दी।

धुन के बड़े पक्के हैं। जिस काम में लग जाते हैं, उसे समाप्त ही करके छोड़ते हैं। रात-रात भर जागकर, बिना खाये-पिये काम में डटे रहते हैं। साथियों को भी उत्साहित करते रहते हैं। शरीर और मन को कब्ज़े में रखने के लिये हरवक्त प्रयत्नशील रहते हैं।

सरलता और सौजन्य

आपके स्वभाव में सरलता और सौजन्य बहुत है। आप छोटे-बड़े सबसे ऐसे मिलते हैं कि कोई आपको पराया नहीं समझता। जो जिस रुचि, जिस योग्यता और जिस व्यवसाय का होता है, उससे उसी के अनुकूल बातें करके उसे प्रसन्न कर देने की कला में आप खूब निपुण हैं। कवियों से कविता की बातें, पुस्तक-प्रकाशकों से पुस्तकों की बातें, सम्पादकों से

अख़बार की बातें, व्यापारियों से व्यापार की बातें, बड़ों से कुछ उपदेश प्राप्त करने की बातें, लड़कों से पढ़ाई की बातें, नेताओं से देशहित की बातें, गायकों से गानविद्या और चित्रकारों से चित्रकला की बातें करके आप उनको सुख पहुँचाया करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर सहायता भी देते हैं। पर इस प्रकार की बातों में आप अपने मुख्य काम को नहीं भूलते। जैसे, आजकल खद्दर का काम हाथ में है तो उसका काम पहले करेंगे। उससे अवकाश मिलेगा, तब मन की थकावट मिटाने के लिये जैसा साथी मिलेगा, वैसाही विषय छेड़ लेंगे और उससे कुछ गुण ग्रहण करने का प्रयत्न करेंगे। सब से हँसते-बोलते रहना, कुछ छेड़छाड़ कर के मित्रों से मनोविनोद करते रहना आपको बहुत प्रिय है।

सिद्धान्त-भेद से जो आपके कट्टर से कट्टर विरोधी हैं, उनसे भी आपका द्वेषभाव नहीं। मिलने पर उनसे ऐसा सुजनोचित व्यवहार करेंगे कि साधारण आदमियों को यह पता लगना कठिन होता है कि इनमें कुछ विरोध भी है या नहीं। असहयोगी होते हुये भी लिबरलों में कई आपके मित्र हैं और वे भी आपके सौजन्य की प्रशंसा करते हैं।

रहन-सहन

मनुष्य के स्वभाव का पता उसके रहन-सहन से भी लग सकता है। जमनालालजी का रहन-सहन बहुत सादा है। युवावस्था के प्रारम्भ में एक बार ठाटबाट से रहने की तरंग उठी थी। उस समय फर्स्ट या सेकंड क्लास में सफ़र करते थे। अच्छे शानदार बँगले में रहना पसंद करते थे। नौकर-चाकर भी काफ़ी तादाद में रहते थे। कपड़े भी क़ीमती पहनते थे। सम्मान पाने की लालसा भी ख़ूब थी। पर समय पाकर जब असली स्वभाव विकसित हुआ तब यह सब बाहरी तड़क-भड़क आपसे आप चली गई। अब ठाटबाट से रहने की रुचि क़रीब क़रीब नहीं सी है। नौकर-चाकर भी आवश्यकतानुसार ही हैं। प्रवास

में अकेले भी यात्रा करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उतने ही नौकर साथ ले जाते हैं, जितने की विशेष ज़रूरत होती है। अपने निजी काम अपने ही हाथों से करने में अधिक प्रसन्न रहते हैं।

पहले अच्छे फर्निचर का भी शौक़ था। पर अब सब से जी उचट गया है। अब बढ़िया टेबुल और कुरसी का स्थान एक चटाई ने ले लिया है।

खाने-पीने का कोई विशेष प्रकार का शौक़ कभी नहीं था। पर खिलाने का शौक़ खूब था। अब तो भोजन और भी साधारण हो गया है। यात्रा में भाकरी और गुड़-नमक से भी काम चला लेते हैं। भोजन के सम्बन्ध में आप अपने लिये कड़े से कड़े नियम बनाते रहते हैं। जिस चीज़ के खाने पर मन ज़्यादा ललचाता है, यकायक उसे ही छोड़ बैठते हैं और महीनों नहीं खाते। भोजन में मसाले और मिर्च, खटाई पसन्द नहीं है। चने की दाल और पापड़ विशेष प्रिय चीज़ों में से हैं। इससे कभी कभी कुछ दिनों के लिये इनका भी त्याग करके अपनी परीक्षा लिया करते हैं। पाँच छः वर्ष हुए, मैं वर्धा गया था। वहाँ आपको ज्वार बाजरे की रोटी खूब रुचि से खाते देखकर मैंने कारण पूछा तो आपने कहा—यदि कभी पास में धन न रहा, गेहूँ की रोटी न मिली तो अभी से मोटा अन्न खाने का अभ्यास डाल रखना तो अच्छा होगा ?

एक बार एक वर्ष के लिये चीनी का त्याग कर दिया था। दूध औ घी भी छोड़ना चाहते थे, पर महात्मा गाँधीजी ने ऐसा व्रत लेने का निषेध कर दिया। इससे रुक गये।

आजकल भोजन में एक बार में केवल एक अन्न का आहार करते हैं और सो भी प्रतिदिन तीन बार से अधिक नहीं। रोटी खायँगे तो दाल नहीं, दाल खायँगे तो रोटी नहीं। जीभ पर यह एक कड़ा शासन है, जिसके लिये बड़े मनोबल की आवश्यकता होती है। घर में धन है, प्रेम करके अच्छी से अच्छी चीजें खिलाने वाले लोग भी हैं, फिर भी

जो आहार में संयम रखता है, वही सच्चा संयमी है। जिसे मिलता ही नहीं, उसके संयम का मूल्य ही क्या ?

बीड़ी, तम्बाकू, सिगरेट और पान का व्यसन न कभी था ,न अब है। बचपन में जब कभी हुक्का भरकर लाते थे, तब एक दो फूँक पी भी लिया था। १२, १३ वर्ष अवस्था में सङ्गति के प्रभाव से दो तीन बार बीड़ी और सिगरेट भी पी थी पर अब इन मादक द्रव्यों से बड़ी घृणा है।

पहले दिन में घण्टे आध घण्टे सोने की भी आदत थी। अब वह भी नहीं है। अब रात में नौ बजे तक सो जाते हैं और सबेरे चार पाँच बजे तक उठ जाते हैं।

सन् १६०६ की कांग्रेस से देश में स्वदेशी का चलन हुआ। तब से आप स्वदेशी कपड़े पहनने लगे थे। असहयोग-आन्दोलन से तो मिल के कपड़े बिल्कुल छोड़ दिये और अब केवल खद्दर पहनते हैं। कुटुम्ब में भी खद्दर ही का उपयोग होता है। पहले भी भड़कदार कपड़ों का शौक तो कभी नहीं था; पर रेशम और ऊन के कीमती कपड़े पहनने का शौक़ अवश्य था।

आजकल की दिन-चर्या

प्रातःकाल चार पाँच बजे के अन्दर सोकर उठना। फ़िर टहलना। आजकल चार मील प्रतिदिन टहलने का व्रत लिया है, उसे प्रायः सबेरे ही पूरा करते हैं। आश्रम में रहते हैं तब चार बजे प्रातःकाल और सात बजे सायंकाल एक एक घण्टे प्रार्थना में शामिल होते हैं।

रात में प्रायः ९ बजे सो जाने का प्रयत्न करते हैं। दिन का बाक़ी समय आप आवश्यकतानुसार पबलिक कामों में या अपने निजी व्यापार के कामों में लगाते हैं।

सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करते। एक दिनरात में तीन बार से अधिक भोजन नहीं करते और एक बार के भोजन में एक ही अन्न

की चीजें खाते हैं। लाल मिर्च खाना कम पसन्द है। एकादशी का व्रत रखते हैं।

धर्मभाव

आप सेवा को ही मुख्य धर्म समझते हैं। देश की सेवा, समाज की सेवा, असमर्थों की व्यक्तिगत सेवा में आपको धर्म का शुद्ध रूप दिखाई पड़ता है।

आपका सिद्धान्त-वाक्य यह है—

नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्॥

अर्थात्, न मैं राज्य चाहता हूँ, न स्वर्ग और न मोक्ष। मैं दुःख में जलते हुये प्राणियों का कष्ट मिटाना चाहता हूँ।

यही आपका धर्म-भाव, यही आपका लक्ष्य है। पूजा-पाठ के लिये पहले कुछ दिनों तक समय लगाया था। पर उसमें मन नहीं लगा। झूठमूठ दिखावे के लिये करना अनावश्यक समझकर उसे स्थगित कर दिया। पर भगवान् के प्रति श्रद्धा, दयाधर्म में प्रवृत्ति पहले से अधिक बढ़ गई। आप सनातन धर्मानुयायी श्रीवैष्णव हैं। पर अन्य मतवालों से किसी प्रकार का साम्प्रदायिक रागद्वेष नहीं रखते। जो कोई नित्य नियम से, शुद्ध अन्तःकरण से, श्रद्धापूर्वक पूजा-पाठ, संध्या-हवन आदि करता है, उसका आप सम्मान करते हैं। स्वयं जब वर्धे में रहते हैं तो प्रातःकाल स्नान करके नित्य नियम से मंदिर में दर्शनार्थ जाते हैं। सनातनधर्म के कट्टर अनुयायी आपको आर्यसमाजी समझते हैं और आर्यसमाजी लोग आपको कट्टर सनातनी कहते हैं।

आपने तीर्थयात्रा के भाव से जगन्नाथजी, रामेश्वर, मथुरा, वृन्दाबन, काशी, प्रयाग, हरद्वार और लक्ष्मण झूला तक दो दो तीन तीन बार

यात्रायें की हैं। सातों पुरियों और तीन धाम तथा कई ज्योतिर्लिंगों का तथा अन्य कई तीर्थ-स्थानों की यात्रा आप कर चुके हैं। अपने दादा-दादी का श्राद्ध आदि आपने लोक में प्रचलित और दादा-दादी की धर्म-भावना के अनुसार अच्छी तरह किया था और गयाजी हो आये थे। द्वारकाजी भी हो आये हैं। गंगाजी से आपको बड़ा प्यार है।

आपका दृढ़ विश्वास है कि धन आध्यात्मिक उन्नति में बाधा उत्पन्न करता है। इससे धन की ओर से आपके मन में दिनोंदिन वैराग्य बढ़ता जा रहा है। इस वैराग्य भाव का यह परिणाम हो रहा है कि धन के लिये लोभ कम हो गया, चित्त स्थिर हो गया और व्यापारिक उन्नति में मन कम लगने लगा। अब आपका अधिकांश समय लोक-सेवा के कामों में व्यय होता है।

आप धार्मिक कृत्य की तरह प्रायः प्रतिदिन चरखा कातते हैं, और मन को आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाने का प्रयत्न करते हैं।

व्यापारिक उन्नति

जमनालालजी ने व्यापारिक क्षेत्र में अपनी अच्छी प्रतिभा दिखलाई। पहले कहा जा चुका है कि सेठ बच्छराजजी ने कुल ५-६ लाख की स्थावर और जङ्गम सम्पत्ति आपके लिये छोड़ी थी। उसमें से भी ७५०००) वे श्रीलक्ष्मीनारायणजी के मन्दिर के लिये दान कर गये थे। जमनालालजी ने अपने परिश्रम, प्रतिभा और सचाई के द्वारा उस धन को इतना अधिक बढ़ा लिया कि उसमें से आप गत पन्द्रह वर्षों में ग्यारह लाख से अधिक धन दान कर सके। आपका व्यापारिक ज्ञान बहुत उच्च कोटि का है। भारत की व्यापारिक स्थिति के जानकारों में आप एक प्रामाणिक पुरुष माने जाते हैं। जब आपकी अवस्था छोटी थी, तब भी आपको बम्बई चेम्बर की ओर से कमीशनों के सामने गवाही देने का मौका मिला है। व्यापारी सर्किल में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा और साख है। आपने



सेठ जमनालाल बजाज



अपनी व्यापारिक योग्यता से धन और प्रतिष्ठा दोनों को खूब बढ़ाया। बम्बई के प्रतिष्ठित से प्रतिष्ठित धनी-मानी व्यक्ति आपको जानते और सम्मान करते हैं। आपका मुख्य व्यापार रुई का है। सेठ बच्छराज जी ने ज़मींदारी भी बड़ी कर ली थी। पर आपने जमींदारी कम कर दी और व्यापार की ही ओर पूरी शक्ति लगा दी। आपकी सचाई का बम्बई के बाज़ार में इतना विश्वास है कि यह मालूम हो जाने पर कि यह जमनालालजी की रुई है, फिर किसी को यह सन्देह नहीं रह जाता कि इस रुई में कुछ मिलावट या धोखा होगा।

रुई के व्यापार के सिवा कम्पनियों के साथ आपका लेन-देन भी चलता है। पहले आप कई कम्पनियों के डाइरेक्टर थे। पर राजनीतिक हलचल में पड़ने से सब में भाग नहीं ले सकते थे, इससे इस्तीफ़ा दे दिया। फिर भी अन्य डाइरेक्टर मित्रों के अनुरोध और आग्रह से अभी तक न्यू इण्डिया इन्श्योरेंस कम्पनी के डाइरेक्टरों में आप भी हैं। इस कम्पनी की स्थापना में आपका ख़ास हाथ था। टाटा कम्पनी ने इसी से घोषणा की थी कि "सेठ जमनालालजी कम्पनी के संस्थापकों में हैं"।

पहले बीमा का काम विशेष कर जर्मन कम्पनियां किया करती थीं। योरप में महा संग्राम शुरू होते ही उनके काम में रुकावटें हुईं। तब उनके स्थान में जापानीज़ और योरप की अन्य कम्पनियां बढ़ने लगीं। उस समय आपके ध्यान में यह बात आई कि बीमा का साधारण काम भी यदि हम लोग न कर सके तो बड़े शर्म की बात है। और हम लोग अपना पैसा विदेशियों के हाथ में जाने ही क्यों देते हैं? इसी विचार से प्रेरित होकर आपने टाटा से साथ मिलकर न्यू इडिण्या इन्श्योरेंस कम्पनी की स्थापना की।

बम्बई में नये शेअर बाज़ार के संस्थापकों में आप भी थे। सर इब्राहीम रहमतुल्ला के बाद कुछ समय तक आप उसके चेयरमैन भी रहे थे।

टाटा बैङ्क में भी थोड़े समय के लिये आप डाइरेक्टर हुये थे। पर बोर्ड के बहुत से मेम्बरों से सहमत न होने के कारण कुछ समय बाद आपने उसे छोड़ दिया।

व्यापारी सर्किल में जापानी, अँग्रेज़, पारसी, भाटिया, गुजराती, मारवाड़ी, मुसलमान आदि सब जातियों के व्यापारियों में आपकी पूरी साख है। जैसे टाटा कम्पनी, सर सासून जे० डेविड बैरोनेट, सर फ़ज़ल भाई करीम भाई, सर परसोत्तमदास ठाकुरदास, सर लल्लू भाई सामलदास, एफ़० ई० दीनशा, सेठ रामनारायण जी रुइया, तथा जापानियों में ख़ासकर रुई की सब कम्पनियों से, जैसे भूसान (टोयो मेनकवा) कम्पनी, जापान काटन कम्पनी आदि से घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध है।

देश का धन बढ़ाने और उद्योग-धंधों की उन्नति के लिये आपने बम्बई में जाकर व्यापार प्रारंभ किया था। पर वहाँ कई मित्रों की महत्वाकांक्षा और लोभ देखकर आपके चित्त पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा और आपका चित्त उचट गया।

लोगों का साधारणतः यह विश्वास है कि बिना झूठ बोले और बिना धोखाधड़ी किये व्यापार में उन्नति नहीं हो सकती। जमनालालजी का अनुभव इसके बिल्कुल विपरीत है। आप कहते हैं कि "सचाई ही व्यापार की उन्नति का मूल है। यह हम मानते हैं कि सचाई से व्यापार करने में उन्नति धीरे-धीरे होती है, पर वह चिरस्थायी और दृढ़ होती है। जल्दी लाभ उठा लेने के लोभ से जो लोग आतुर होकर कुछ झूठ या धोखे का उपयोग करते हैं, संभव है वे एक दो बार सफल हो जायँ, पर उनका व्यापार चिरस्थायी नहीं हो सकता। और एक बार वे जनता की नज़रों से गिरकर फिर नहीं उठ सकते। साख से बढ़कर व्यापारी का सहायक कोई नहीं। व्यापार में प्रलोभन से चित्त को हटाये रहकर चला जाय तो सफलता जल्दी मिलती है।"



रायबहादुर सेठ जमनालाल बजाज

सम्मान

जिन अकेले जमनालालजी ने आज सारे देश में मारवाड़ी-समाज के उपहास करनेवालों का मुँह बन्द कर दिया हैं; जिन अकेले जमनालालजी के प्रभाव से आज देश में मारवाड़ी-समाज को सहसा भीरु, स्वार्थी और चरित्रहीन कहने का किसी को साहस नहीं होता; उन जमनालालजी का, उस अपने रत्न का, आदर यदि मारवाड़ी-समाज में अधिक से अधिक हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ?

जमनालालजी मारवाड़ी-समाज में नवजीवन डालनेवाले नवयुवकों के अगुवा हैं। मारवाड़ी-समाज में दो दल हैं। एक पुरानी रूढ़ि पर आरूढ़ है, दूसरा नये प्रकाश से जगमगा रहा है और अपने समाज में भी वही प्रकाश फैलाने को प्रयत्नशील है। जमनालालजी इसी दूसरे दल के नेता हैं। पहला दल यद्यपि समाज-सुधार के कुछ कामों में आपका विरोधी है, पर आपकी देश-सेवा, आपकी सत्कीर्ति, आपकी सुजनता और उदारता का गर्व वह भी करता है। और व्यक्तिगत प्रेम भी करता है। आप भी पहले दल के मुख्य-मुख्य नेताओं का व्यक्तिगत सम्मान करते हैं, और अपने सहजसुलभ प्रेम, नम्रता और विनय से उनके हृदय में अपनी बातें रखने का प्रयत्न करते हैं। जमनालालजी के द्वारा भारत में मारवाड़ी समाज का सिर ऊँचा और मुख उज्ज्वल हुआ है। देश का कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति अब मारवाड़ी समाज की दिल्लगी उड़ाने या उसे डरपोक कहने का साहस नहीं कर सकता।

सी० पी० की सरकार में भी जमनालालजी का मान बहुत था। आप सरकार के दरबारी थे। १९०८ के दिसम्बर में आपको सरकार ने आनरेरी मजिस्ट्रेट और १९१८ की जनवरी में रायबहादुर बनाया था। इन सम्मानों के सिवाय गवर्नमेंट से कई मेडल और सार्टिफिकेट भी आपको मिले थे। गवर्नरों में सर ऐंड्रयू फ्रेज़र, सर रेजिनाल्ड क्रैडक,

सर बेंजामिन राबर्टसन और फ्रैंक स्लाई से आपकी व्यक्तिगत निकटता थी। इन सबसे आपको सरकारी सम्मान के सिवा व्यक्तिगत सम्मान और प्रेम भी प्राप्त था।

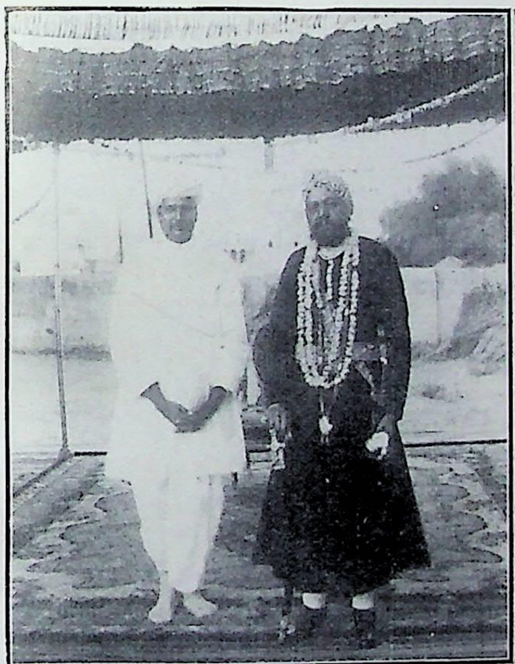
इस देश के राजा महाराजाओं में भी आपका प्रवेश है। सीकर के स्व० रावराजा माधवसिंहजी आपको बहुत मानते थे। वर्तमान रावराजा कल्याणसिंहजी भी आप पर बहुत प्रेम रखते हैं। ग्वालियर के स्व० महाराज से भी आपका परिचय था। बड़ौदा, उदयपुर और दरभंगा के महाराजाओं से भी आपकी मुलाक़ात है। बीकानेर महाराज से बहुत काफ़ी परिचय है।

इस समय देश के मुख्य मुख्य नेताओं और सुप्रसिद्ध व्यक्तियों में जैसे, गाँधीजी, मालवीयजी, लालाजी, मोतीलालजी, सी० राजगोपालाचारी, राजेन्द्रबाबू, गंगाधरराव, केलकर, जयकर, अली भाई, पी० सी० राय, जे० सी० बोस, टैगोर, कुर्तकोटि शंकराचार्य, चिन्तामणिराव वैद्य, भगवान्दासजी, हृदयनाथ कुँजरू, हिन्दूमहिलाश्रम के जन्मदाता प्रो० कर्वे, गंधर्व महाविद्यालय के संस्थापक विष्णु दिगंबर आदि सब श्रेणी के पुरुषों से पूर्ण घनिष्ठता है। लोकमान्य तिलक और देशबंधुदास भी आपको ख़ूब अच्छी तरह जानते और मानते थे।

सर जे० सी० बोस अपने १४-६-१६१६ के पत्र में, दार्जिलिङ्ग से लिखते हैं—

You are like a son to me, and it makes me happy to think that there is at least one belonging to me who would serve his country to the utmost.

अर्थात्—तुम मेरे पुत्र के समान हो और मुझे यह समझकर प्रसन्नता होती है कि मेरा भी एक ऐसा व्यक्ति है जो भरसक अपने देश की सेवा करेगा।



सेठ जमनालाल जी　　　　रावराजा माधवसिंहजी
(सीकर-नरेश)

चैत्र कृ० १--१९७६ के एक पत्र में महामना मालवीय जी लिखते हैं—

"चि० राधाकांत को आप जो बड़े भाई के समान प्रेम से उपदेश करते और रोकते हैं, इससे मुझको बहुत प्रसन्नता होती है।"

इन पत्रों से पाठकों को यह मालूम हो जायगा कि इस देश के माननीय पुरुषगण जमनालालजी पर कितना विश्वास और प्रेम करते हैं। बड़े बड़े नेताओं के इस प्रकार के आये हुए पत्र बहुत से हैं। पर स्थानाभाव से सब की चर्चा यहां नहीं की जा सकती। और कुछ ख़ास ख़ास पत्र अवकाश की कमी से न मुझे देखने को मिले और न मैं उनके लिये ठहर ही सका।

धन का सद्व्यय

धनी होने का सच्चा सुख मनुष्य को तभी मिलता है, जब धन के साथ ईश्वर अच्छी बुद्धि भी दे। जमनालालजी ने अपनी सचाई और परिश्रम से धन कमाकर जैसा उसका सद्व्यय किया है ईश्वर वैसा करने की सद्बुद्धि सब को दें। जमनालालजी गोद लिये गये थे। मुफ्त का धन मिला था। खर्च करने की पूरी स्वतन्त्रता थी। वे चाहते तो शारीरिक सुख में, नाचरङ्ग में, ऐयाशी में, गांजे-भांग में, सैर-सपाटे में, मोटर और फिटनों में धन को पानी की तरह बहा सकते थे। पर अपने ग़रीब देश के लिये, अपने पिछड़े हुये समाज के लिये, अपनी आत्मिक उन्नति के लिये आपने धनी-समाज में सर्वत्र प्रचलित प्रायः सब सुखों को तिलाञ्जलि दे दी है। देश में आवश्यकता की पुकार सुनने के लिये आपके कान रात-दिन खुले रहते हैं। गत १५ वर्षों में आपने ११ लाख से अधिक रुपया दान दिया है। प्रायः सब दान समाज और देश की सेवा के लिये दिये गये हैं। मुख्य-मुख्य रकमों का ब्यौरा यहाँ दिया जाता है।

गांधी-सेवा-संघ—महात्माजी के जेल जाने के बाद	२,५०,०००)
तिलक स्वराज फंड—दो बार (वकीलों के लिये)	२,००,०००)
मारवाड़ी-शिक्षा-मण्डल, वर्धा	८०,०००)
सत्याग्रहाश्रम, वर्धा	७५,०००)
मारवाड़ी अग्रवाल महासभा	६१,०००)
५१०००) जातीय कोष	
१००००) वर्धा अधिवेशन में खर्च	
हिन्दू विश्वविद्यालय में बच्छराज पुस्तकालय के लिये	५१,०००)
सर जे० सी० बोस को दारजिलिङ्ग में बच्छराजजी के स्मारक स्वरूप साइंस इंस्टिट्यूट के लिये	३५,०००)
माधव विद्यार्थी गृह, सीकर	२१,०००)
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	२१,०००)
मुसलमानों में राष्ट्रीय भाव पैदा करने के लिये छात्रवृत्ति	२१०००)
सत्याग्रहाश्रम, साबरमती	३५,०००)
राजस्थान-केसरी	१०,०००)
नासिक कुम्भ मेला सेवा-समिति	१०,०००)
नागपुर झंडा सत्याग्रह और कांग्रेस के काम में खर्च	१०,०००)
नागपुरकांग्रेस में खर्च	१०,०००)
जलियानवाला बाग़	७,५००)
असहयोगाश्रम, नागपुर	६,०००)
कर्मवीर पत्र के लिये	६०००)
५०००) जबलपुर	
१०००) खंडवा	
फुटकर जिसमें ५०००) से नीचे की रकमें और व्यक्तिगत सहायता शामिल हैं	२,००,०००)
कुल	११०६५००)



आनरेरी मैजिस्ट्रेट सेठ जमनालाल बजाज

गाँधीजी में अविचल भक्ति

महात्मा गाँधीजीमें जमनालालजी की अविचल भक्ति है। आप गांधी जी को पिता-तुल्य मानते हैं और सदा उनकी इच्छा और आज्ञा का अनुसरण करते हैं। आपने गांधीजी को आत्मसमर्पण कर दिया है। गाँधीजी भी आपको पुत्र की तरह मानते और आप पर अखंड स्नेह रखते हैं। गांधीजी जेल में से आपको बराबर पत्र भेजते रहे हैं। उनमें से दो पत्रों की प्रतिलिपि यहां दी जाती है। उनसे पाठकों को मालूम होगा कि जमनालालजी के लिये गांधीजी के हृदय में कितना अनुराग है। साबरमती आश्रम में गिरफ्तार होने के बाद ता० १७-३-२२ गुरुवार की रात को गांधीजी ने साबरमती जेल से यह पत्र जमनालालजी को गुजराती भाषा में लिखा था—

साबरमती जेल
गुरुवारनी रात

१७-३-२२

चि० जमनालाल

जेम हुँ सत्यनी शोध करता जाऊँ छुँ तेम तेम मने भासे छे के तेमाँ वधुँ आवी जाय छे। अहिंसा माँ ते न थी। पण तेमाँ अहिंसा छे, एम घणी वेला भासे छे। निर्मल अंतःकरण ने जे समये जे लागे ते सत्य। तेने वलगतां शुद्ध सत्य मली आवे छे। तेमां क्यांए धर्म-संकट पण न थी जोतो। पण अहिंसा कोने कहेवी तेनो निर्णय करतां घणी वेला मुसीबत आवे छे। जन्तुनाशक पाणीनो उपयोग ए पण हिंसा छे। हिंसामय जगत माँ अहिंसामय थई ने रहेवानुँ रह्यु ँ। ते तो सत्यने वलगवा थी ज थाय। तेथी हुँ तो सत्यमाँ थी अहिंसा घटावी शकुँ छुँ। सत्यमाँ थी प्रेम मले छें, सत्यमाँ थी मृदुता मले छे। सत्यवादी सत्याग्रही तद्दन नम्र होवो जोइये। तेणुँ सत्य जेम वधे तेम ते नमतो जाय। आ हुँ क्षणे क्षणे अनुभवी रह्यो छुँ। मने

अत्यारे सत्य नो जेटलो खयाल छे तेटलो वर्ष पहेलां न हतो । अने अत्यारे मारी अल्पता मने लागे छे तेटली एक वर्ष पहेलां न होती लागती ।

'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' ए वाक्यनो चमत्कार मने दिवसे दिवसे वधतो जतो लागे छे। तेथी आपणे हमेशा धीरज राखवी। धीरज राखतां आपणामां थी कठोरता चाली जशे। ते जतां आपणामां सहिष्णुता वधशे। आपणी भूलो आपणाने पहाड़ जेवड़ी लागशे। ने जगतनी राई जेवड़ी लागशे। शरीरनी स्थिति अहंकारने लईने संभवे छे। शरीरनो आत्यंतिक नाश ए मोक्ष। अहंकारनो आत्यंतिक नाश जेना मां थयो छे ए तो सत्यनी मूर्ति थई रहे छे। ब्रह्म कहेवा मां-ए बाध न होय।

तेथीज ईश्वर नुँ रूडुँ नाम तो दासानुदास छे। स्त्री, पुत्र, मित्र, परिग्रह वधुएँ सत्य ने अधीन रहेवुँ जोइये। सत्य ने शोधतां ते वधानो सर्वथा त्याग करवा तत्पर रहीये तो ज सत्याग्रही थवाय। आ धर्मनुँ पालन प्रमाणमां सहज थई जाय एवा हेतु थी हुँ आ प्रवृत्तिमां पर्यो छुँ। ने तमारा जेवाने होमतां अचकातो न थी। तेणुँ बाह्यस्वरूप हिन्दस्वराज छे। हजु एक पण एवो शुद्ध सत्याग्रही न थी पाक्यो ते थी ढील थाय छे। पण ते थी गभरावानुँ जराए कारण न थी। ते तो वधारे प्रयत्न नुँ कारण छे।

तमे पांचमा पुत्र तो थयाज छो। पण हुँ लायक बनवा प्रयत्न करी रह्यो छुँ। दत्तक लेनारनी उपर जवाबदारी कांई जेवी तेवी न थी। ईश्वर मने सहाय थाओ, ने हुँ तेनो लायक आ जन्मेज बनूँ।

१७ ३/२

बापूना
आशीर्वाद

(यहाँ जेल के अधिकारी
का हस्ताक्षर है)

दूसरा पत्र यरोडा जेल से भेजा हुआ है। यह पत्र बहुत बड़ा है। स्थानाभाव से केवल ऊपर की एक पंक्ति और अंतिम अंश की प्रतिलिप यहाँ दी जाती है—

१९७९
आसो सुद १४
गुरुवार

(सुपरेंटेंडेंटनी रजा मेलवी आ कागल मोकलुँ छुँ)

तमारे धार्मिक भावना विषें—

अपवित्र विचार माँथी जो मुक्त थाय तेणो मोक्ष मेलव्यो समज्यो। अपवित्र विचारोना सर्वथा नाश घणी तपश्चर्या थी थाय। तेना उपाय एकज छे। ज्यारे अपवित्र विचार आवे त्यारे तेनी साथे तुरत पवित्र विचार खड़ो करवो। ए ईश्वर प्रसादी होय तो ज बने। ते प्रसादी चोबीसे कलाक ईश्वर नुँ नाम लेवाथी ने ते अन्तर्यामी छे एम जाणी लेवा थीज मले। भले रामनाम जीभज आवी ने मनमाँ बीजा विचार आवे, लोभे रामनाम लेवुँ ए एटला प्रयत्न पूर्वक के छेवटे जे जीभे छे ते हृदय माँ पण प्रथम स्थान ले। वली मन गमे तेटला फाँ फाँ मारे छताँ एक पण इन्द्री सोंपवीज नहीं। मन लई जाय त्याँ जे माणस इन्द्रियों ने जावा देवे तेनो नाशज संभवे, पण ज्याँ सुधी माणस इन्द्रियो ने वलात्कारे पण कब्जा माँ राखे छे ते कोई दिवस पण अपवित्र विचारों ने तावे करशे। हुँ तो जाणुँ छुँ के आज पण जे हुँ मारा विचारो प्रमाणे इन्द्रियो के मोकेली मूकूँ तो मारो आजेज नाश थाय। अपवित्र विचारो आवे ते थी वलवूँ नहीं पण वधारे उत्साही थवुँ। प्रयत्न नुँ क्षेत्र आखूँ अपनी पासे छे। परिणामनुँ क्षेत्र ईश्वरे पोताने हस्तक राख्यूँ छे। एटले तेनी चिन्ता न करशो। ज्यारे अपवित्र विचार आवे त्यारे एम पण समझो कि तमे जानकीबाई प्रत्ये वेवफ़ा थावो छो। अने साधू पति पोतानी पत्नी प्रत्ये बेवफ़ा न ज थाय। तमे साधू छो। प्राकृत उपावो जाणोज छो। अल्पाहारज करवो। दृष्टि केवल पोतानी सामेनी जमीन ऊपर राखीने ज चालवुँ। आँख मलीन थवा जाय तो तेने फोड़ी नाखवा जेटलो तेनी ऊपर क्रोध करवो। निरन्तर पवित्र पुस्तकोंनाज संग राखवो। ईश्वर तमारुँ सर्व प्रकारे रक्षण करे।

शुभेच्छुक
बापूना आशीर्वाद।

दोनों पत्रों की भाषा सरल है। अतएव स्थानाभाव से यहाँ उनके हिन्दी-अनुवाद नहीं दिये जा रहे हैं।

सामाजिक जीवन

मित्रलाभ

समाज-सुधार का काम बिना मित्रों की सहायता के नहीं हो सकता। संसार में सौभाग्य से ही मनुष्य को अच्छे मित्र मिलते हैं। जमनालालजी को यह सौभाग्य युवावस्था के प्रारम्भ से ही प्राप्त है। आपके जीवन पर जिन मित्रों की छाप विशेष रूप से पड़ी है, उन में मुख्य ये हैं—

श्रीयुत श्रीकृष्णदासजी जाजू, बी० ए०, बी० एल०, वर्धा।
बाबू वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार, वर्धा।
श्रीयुत पिस्तमजी सोराबजी पाठक, I. C. S., बैरिस्टर।

श्रीकृष्णदासजी जाजू

जाजूजी महेश्वरी-समाज के रत्न हैं। इस समय आपकी अवस्था ४३ वर्ष की है। आप कलकत्ता युनिवर्सिटी के प्रथम श्रेणी के बी० ए०, बी० एल० हैं। आप सच्चरित्र, सरल स्वभाव, शिक्षाप्रेमी और समाज-सुधारक सज्जन हैं। सन् १९०५ में आप वर्धा आये और वकालत शुरू की। उस समय आपके विचार राजनीतिक थे। समाज-सुधार की ओर आपकी मुख्य प्रवृत्ति नहीं थी। राजनीति में आप लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे।

उस समय वर्धा ऐसे छोटे से नगर में शिक्षित व्यक्ति के मन के अनुकूल साथी मिलना कठिन था। एक वर्ष तक आप अपनी वकालत

जमाने में लगे रहे। आपका साक्षात् जमनालालजी से हो गया था। दोनों ओर समाज और देश की सेवा करने की प्रवृत्ति थी। 'समान-शीलव्यसनेषु सख्यम्' की नीति के अनुसार उस दिन से दोनों में मित्रता हो गई, जो प्रत्येक क्षण बढ़ती गई। जाजूजी ने ही पहले-पहल जमनालालजी को समाज-सेवा की शिक्षा दी। जाजूजी ही आपको १६०६ की कांग्रेस में ले गये थे।

जाजूजी जमनालालजी पर कैसी सूक्ष्म निगरानी रखते थे, इसके सम्बन्ध में एक घटना का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। पहले जमनालालजी अपने बैठने, सोने और नहाने-धोने के कमरों में कुछ सिद्धान्त-वाक्य (Mottos) लिखकर दीवारों पर टँगवा रखते थे, जिससे चलते-फिरते, उठते-बैठते उन पर नज़र पड़ती रहे। उस समय का एक सिद्धांत-वाक्य यह था—

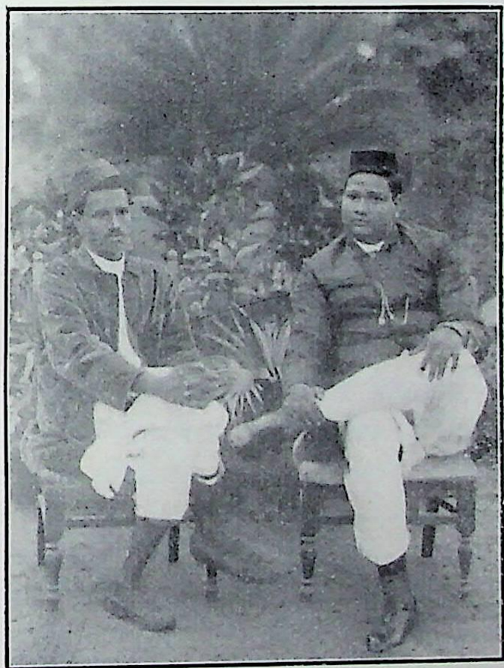
"एक दिन मरना अवश्य है। अन्याय करने से सदा डरो। निःस्वार्थ बुद्धि से जातीय उन्नति के कार्य किया करो"।

उन दिनों जमनालालजी के मन में नाम कमाने की लालसा प्रबल हो उठी थी। अपनी प्रशंसा बहुत प्रिय लगती थी। बुद्धिमान् जाजूजी ने इसे उन्नति में बाधक समझकर एक दिन ऊपर के सिद्धान्त वाक्य के नीचे इतना और बढ़ा दिया—

"दूसरों ने अपनी प्रशंसा करनी चाहिये, ऐसी इच्छा मत करो।"

जमनालालजी इसे पढ़कर सावधान हो गये और फिर निष्काम भाव से, निरभिमान होकर समाज-सेवा की कोशिश करने लगे।

जाजूजी उस समय की राजनीति में यद्यपि तिलक महाराज के अनुयायी थे, पर अब गाँधीजी पर भी बहुत श्रद्धा रखते हैं। आपने सन् १६२१ में वकालत छोड़ दी और अब एकान्त जीवन व्यतीत करते हैं तथा कुछ शिक्षा-संस्थाओं की देखभाल भी करते हैं। आप बहुत ही सादगी से रहते हैं।



वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार   जमनालालजी बजाज



वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार

पोद्दारजी वर्धा के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति और सुप्रसिद्ध व्यापारी हैं। आपकी आयु इस समय लगभग ४० वर्ष के होगी। आप बड़े उदार, साधुस्वभाव और वेदान्त के प्रेमी हैं। आप में और जमनालालजी में सच्ची मित्रता है, और दोनों एक दूसरे की उन्नति देखकर और सुनकर आनंदित होते हैं। कितनी ही बार लोगों ने दोनों में फूट डालने का प्रयत्न किया, पर दोनों ने मिलकर दिल खोलकर बातें की और मन का मैल साफ़ हो गया।

पोद्दारजी जमनालालजी के बाल्यबंधु हैं। आपके वेदान्ती और उदार विचारों का प्रभाव जमनालालजी पर खूब पड़ा है।

पिस्तमजी सेराबजी पाठक, I. C. S, बैरिस्टर

पाठकजी बम्बई के एक प्रसिद्ध घराने के पारसी हैं। आपका घराना पारसियों में आदर्श माना जाता है। आपकी ही बहन श्रीमती जायजी पेटिट हैं जो बम्बई की स्त्री-समाज में बहुत प्रसिद्ध हैं और देशहित में बहुत भाग लेती रहती हैं। वे महात्माजी में भी खूब भक्ति रखती हैं। आपकी एक भांजी मिट्टीबाई पेटिट हैं जो ३० वर्ष की अवस्था की हैं और कुमारी हैं तथा खादी-प्रचार में बड़ी सहायिका हैं। पाठकजी इसी घराने के हैं। आप कुछ समय तक वर्धा के कलकृर भी थे। आजकल पेंशन लेकर लंडन तथा बम्बईमें रहते हैं। आप बड़े विद्वान् और देशभक्त पुरुष हैं। कलकृर के पद पर रहकर आपने बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की थी। आप दीनदुखियों के बड़े सहायक थे। आपकी जानकारी में कोई सरकारी आदमी किसी रैयत पर अत्याचार नहीं कर सकता था। आप देहात के दौरे में किसानों को जमा करके कहा करते थे कि किसी अफ़सर को रिश्वत न दो, बेगार मत दो, कोई सतावे तो मेरे पास आधीरात को भी पँहुँच सकते हो। अछूत जाति के बच्चों को पढ़ाने के

लिये भी आप बहुत प्रयत्न करते थे और कोमल प्रयत्नों से उनके सामने की बाधायें हटाते रहते थे। आपने न कभी डाली ली, न कभी किसी की सवारी का उपयोग किया। डाली लाने वालों से आप कहा करते थे कि क्या मुझे तनख़्वाह नहीं मिलती है? क्या आप डाली देकर मुझसे कुछ काम निकालना चाहते हैं? आप ग़रीब अमीर सब को एक भाव से देखते थे। ग़रीब के लिये अधिक ध्यान रखते थे। आपके इन्हीं गुणों से जमनालालजी आकर्षित हुये थे। जमनालालजी कहते हैं कि मुझे ऐसा दूसरा अफ़सर देखने को नहीं मिला। जिस ज़िले में पाठकजी हो आते थे वहां अँग्रेज़ अफ़सर जाना पसंद नहीं करते थे। क्योंकि पाठकजी की समता में वे पबलिक के सामने ठीक उतर नहीं सकते थे। अब भी जहां जहां आप रह चुके थे, वहां के लोग आपको बहुत आदर और प्रेम से याद करते हैं।

उन दिनों जमनालालजी एक प्रकार से सरकार के आदमी थे। वर्धा में जो सरकारी अफ़सर आते, वे जमनालालजी से मिलते और जमनालालजी भी उनकी मुलाक़ात के लिये जाया करते थे। पाठकजी ने पहली ही मुलाक़ात में समझ लिया कि इस व्यक्ति में कुछ दैवी सम्पत्ति है। आपने घनिष्ठता बढ़ाने के लिये अपने हृदय का द्वार खोलकर जमनालालजी को न्याय, सत्य और कर्म का जो उपदेश दिया, उसने जमनालालजी के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। पाठकजी जैसा कहते थे वैसा ही उनका आचरण भी था। इससे जमनालालजी की उन पर बड़ी श्रद्धा हो गई, और उन्होंने आपके उपदेशों से बहुत लाभ उठाया। पाठकजी के जीवन से आपने सचाई और निर्भीकता का पाठ सीखा। जमनालालजी आपको जब कभी याद करते हैं, तब बड़ी कृतज्ञता प्रकट करते हैं। अब भी जमनालालजी से आपकी घनिष्ठ मित्रता है।

जमनालालजी का पाठकजी और जाजूजी से संसर्ग न होता तो जमनालालजी आज इतनी उन्नति कर सकते या नहीं, इसमें जमनालालजी

को संदेह है। इस प्रकार आप के जीवन की नदी अनेक सोतों और सहायक नदियों से जल ग्रहण करके, स्वच्छ, मधुर और प्रचुर जल के लिये कीर्त्ति प्राप्त करती हुई, महासागर की ओर प्रवाहित हो रही है।

घर का सुधार

जमनालालजी में यह एक विशेष गुण है कि आप जिस काम को ठीक समझते हैं, उसे कहने से पहले करके दिखलाने का प्रयत्न करते हैं। मारवाड़ी-समाज में जो जो कुरीतियां प्रचलित हैं, उन्हें दूर करने का श्रीगणेश आपने पहले अपने घर से किया। मारवाड़ी स्त्रियों में पर्दा की प्रथा बहुत है। पर्दे ही की कड़ाई के कारण एक ही घर के स्त्री-पुरुष एक दूसरे के सामने बात-चीत नहीं कर सकते। बहू अपने सास-ससुर, जेठ या पद में बड़े किसी के सामने नहीं बोलेगी। हां, नौकरों के सामने वह बात कर सकती है और परदा भी नहीं रखती। इससे लाभ तो कुछ नहीं, पर हानियाँ बहुत सी हैं। यदि सास और ससुर अपने घर की बहुओं को पुत्री की तरह समझते हैं तो उनके सामने पुत्री की तरह आने में और घर गृहस्थी के काम-काज सम्बन्धी बातें करने में बहुओं को सङ्कोच होना भी नहीं चाहिये। जब दोनों के मन में पवित्रता है तो पर्दा रखने की आवश्यकता ही क्या है? पर सामाजिक प्रथा से दोनों विवश हैं। पर्दे के कारण स्त्रियाँ कितने ही दुःख, कितने ही अपमान चुपचाप सह लेती हैं और पुरुषों को पता भी नहीं चलता। जमनालालजी ने अपने घर में पहले-पहल सुधार किया। घर की बहुयें अब आपसे बातें कहने में या आपके सामने अपने सास-ससुर से बातें करने में नहीं सकुचातीं। जमनालालजी भी उनपर पुत्री की तरह स्नेह रखते हैं और उनके कष्टों को पूछते रहते हैं। ऐसा करने में आपको पहले अपने माता-पिता से, जो परम्परा के पक्षपाती हैं, कुछ विवाद भी करना पड़ा था। पर अब घर के प्रत्येक प्राणी को यह सुधार बड़ा सुखद जान पड़ता है। स्त्रियों में स्वाभाविक लज्जा

जिस परिमाण में रहती है, उतनी ही काफ़ी है। परदा अस्वाभाविक है, वह लज्जा की रक्षा नहीं करता है। स्त्रियाँ स्वयं उसे पसन्द नहीं करती हैं। उनमें इतनी निर्भयता तो आने ही देनी चाहिये कि वे समय कुसमय पर बुरे पुरुषों से अपने मान की रक्षा कर सकें।

बाल-विवाह की प्रथा से भी समाज को बड़ी हानि पहुँच रही है। मारवाड़ी अग्रवाल महासभा ने इसके विरुद्ध प्रस्ताव भी पास किया, पर उसका पालन उतनी जल्दी नहीं हो रहा है, जितनी जल्दी बाल-विवाह से हानियाँ हो रही हैं। जमनालालजी ने अपनी बड़ी कन्या कमलाबाई का विवाह १४ वर्ष की अवस्था में १९ वर्ष के वर के साथ किया। इस विवाह का हाल अलग दिया जा रहा है। विवाह-विधि में भी आपने बहुत से सुधार किये हैं। विवाह में कुछ बाहर की बातें, कुछ बुढ़िया-पुराण की बातें, कुछ फ़ुज़ूलखर्ची की बातें ऐसी मिल गईं हैं जिनसे समय और धन दोनों का अपव्यय होता है। विवाह के ख़र्चे को घटाकर जमनालालजी ने इतना कम कर दिया है कि अब उसमें ग़रीब से ग़रीब व्यक्ति का भी निर्वाह हो जायगा। बहुत से लोग विवाह की फ़ुज़ूल ख़र्ची के विरुद्ध तो हैं, पर उनमें इतना आत्मबल नहीं कि वे समाज की निन्दा को सह सकें। इसी से मन न रहते हुये भी उन्हें समाज को सन्तुष्ट करने के लिये नाच-तमाशे, रागरङ्ग, जेमनवार आदि में बे अन्दाज़ ख़र्च करना पड़ता है। ख़र्च की इस भयानकता से ही कन्याओं के जन्म से लोग प्रसन्न नहीं होते। जमनालालजी ने इस सम्बन्ध में जो साहस दिखलाया है, वह प्रशंसनीय है।

इन सुधारों के पहले आप दानप्रणाली और ब्रह्मभोज आदि में छोटे-मोटे कई सुधार कर चुके थे। तीर्थों में पंडों और अपढ़ ब्राह्मणों को आप दान नहीं देते थे। विद्वानों को श्रद्धापूर्वक खूब धन देते थे। इससे अपढ़ ब्राह्मणों और पंडों के साथ बड़ी लड़ाइयां लड़नी पड़ती थीं।

वर्धा में मृतक के वार्षिक श्राद्ध में पहले यह प्रथा थी कि गांव के कुल ब्राह्मण तो जीमते ही थे, कुल वैश्य और अन्य मित्र भी भोजन करते



श्रीरामेश्वरप्रसाद नेवटिया

(१. ३. २६)

थे। सं० १९६४ में सेठ बच्छराजजी के वार्षिक श्राद्ध में जमनालालजी ने यह सुधार किया कि केवल पढ़े-लिखे ब्राह्मणों को बुलाया; सो भी आठ से अधिक नहीं। वैश्यों को बिल्कुल नहीं बुलाया। इससे लोग आपको आर्यसमाजी कहने लगे थे। पर अब वर्धा के लोगों ने इस सुधार को खूब पसंद किया है।

पहले श्राद्ध और विवाह-शादी के अवसरों पर भोजन कराने के लिये पंचायत की आज्ञा लेनी पड़ती थी। यह प्रथा जिस समय प्रारम्भ हुई होगी, उस समय इसका उद्देश्य तो अच्छा ही रहा होगा और इससे सर्वसाधारण को लाभ भी पहुँचता रहा होगा; पंचायत फ़ज़ूलख़र्ची पर नियंत्रण भी रखती रही होगी और बहुत से असमर्थ व्यक्तियों को ख़र्च से छुटकारा भी दे देती रही होगी। पर अब तो रागद्वेष के मारे पंचायत से उलटे कष्ट मिलने लगा। कभी कभी तो पंचायत के द्वारा रागद्वेष की वृद्धि भी होने लगी। पंचायत के द्वारा प्रायः ग़रीबों को ही अधिक ख़र्च करना पड़ता है। आपने पहले-पहल इस प्रथा का उल्लंघन किया और पंचायत की आज्ञा लिये बिना ही व्याह-शादी और श्राद्ध में भोजन कराया। प्रारम्भ में आपको कुछ विरोध का सामना करना पड़ा था, पर अब सुधार की उपयोगिता सर्वस्वीकृत होती जा रही है।

इस प्रकार समाज-सुधार के कामों में आपने बड़ा साहस प्रकट किया है।

कमलाबाई का विवाह

कमलाबाई का विवाह फ़तहपुर (जयपुर) के सुप्रसिद्ध नेवटिया कुटुम्ब में श्रीरामेश्वरप्रसाद नेवटिया के साथ इसी चैत्र कृष्ण १, सं० १९८२ (२८-२-२६) को साबरमती आश्रम में हुआ। रामेश्वरप्रसाद की अवस्था इस समय १९ वर्ष की है। वे अंडर-ग्रेजुएट और सम्मेलन के विशारद हैं और अभी गुजरात विद्यापीठ में पढ़ रहे हैं। वे बड़े ही सच्चरित्र, सुशील, मितभाषी और होनहार युवक हैं। समाज और देश-सम्बन्धी विचारों में वे जमनालालजी के प्रतिबिम्ब-स्वरूप हैं। जमनालालजी भी उन पर पुत्र की तरह प्रेम रखते हैं। श्रीरामेश्वरप्रसाद का जन्म पौ० कृ० १५, सं० १९६४ में हुआ।

साबरमती आश्रम में कमलाबाई का विवाह कितनी सादगी से हुआ, यह लिखने के पहले मारवाड़ी-समाज में प्रचलित विवाह की प्रथा का विवरण दे देना आवश्यक जान पड़ता है। इसके जान लेने पर, साबरमती आश्रम में जो विवाह हुआ है, उसकी विशेषता अधिक स्पष्ट हो जायगी।

मारवाड़ी-समाज में विवाह की प्रथा यह है कि ८।१० दिन पहले से वरवालों को अथवा कन्यावालों को एक दूसरे के गाँव में जाकर रहना पड़ता है। हैसियत के अनुसार काफ़ी भीड़ साथ रहती है। वर-पक्ष के लोग कन्या के गाँव में जाते हैं तो एक बड़े जुलूस के साथ वे ठहरने के स्थान तक पहुँचा दिये जाते हैं। फिर दोनों ओर हलदात होता है, जिसमें गणेशपूजन के सिवा कुछ बुढ़िया-पुराण की बातें होती हैं। हलदात के दिन से वर को लोहे की एक चिटिया (छड़) हाथ में रखनी पड़ती है और वर कन्या दोंनों के गले में एक एक चाँदी की हँसली और उँगलियों में एक एक चाँदी की अँगूठी पहना दी जाती है। हलदात के दिन से वर के घर पर नगारे आदि दिनभर बजाये जाते

हैं। और उसी दिन से दोनों ओर मिठाई बननी शुरू होती है। हलदात विवाह-कार्य प्रारंभ होने का दिन समझा जाता है। यों तो महीनों पहले से ही विवाह के लिये सामान तैयार होते रहते हैं।

हलदात के दो दिन बाद बाना किया जाता है। जिसमें वर कन्या के कपड़ों पर तेल, दही और मेहँदी लगाई जाती है और हाथों में रँगे हुये सूत का बटा हुआ डोरा बांध दिया जाता है। तथा पैरों में लोहे के छल्ले, राई आदि बँधे हुये सूत के डोरे बांध दिये जाते हैं, "जिन्हें कंगन डोरी" कहते हैं। वर-पक्ष की स्त्रियाँ चाब लेकर शहर में घूमती हुई और गाती हुई कन्या के घर जाती हैं और उन्हें चाब देकर अपना दस्तूर लेती हैं। दस्तूर में कपड़े आदि, जो शक्ति के अनुसार कई सौ रुपये के होते हैं, दिये जाते हैं। फिर उसी प्रकार घूमती हुई और गाती हुई कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ हांस देने के लिये वर के घर जाती हैं और स्त्रियों को कुछ रुपये दे आती हैं।

बाना होने के बाद वर वालों के यहां सजातियों और स्त्रियों को मिठाई जिमानी शुरू की जाती है, जिसे 'बाने की जीमनवार' कहते हैं।

विवाह के दो एक दिन पहले वर को कन्या वाले बुलाकर कपड़े, मिठाई, मेवा और खिलौने आदि देते हैं, जिसे 'मिठाई' कहते हैं। यह भी शक्ति के अनुसार सौ से हज़ार रुपयों तक पहुँच जाता है।

विवाह के दिन वर के घर से कुछ लोग बाजा आदि लेकर कन्या के घर "मांडा जगाने" के लिये जाते और मिठाई की पत्तलें लाते हैं। विवाह के दिन दोनों ओर के भत्ती (ननिहाल के लोग) भात भरने आते हैं और बाजा आदि बजवाते हुये, थालों में कपड़े, गहने और रुपये सजाकर बाजार में घूमते हुये, ले जाकर दे आते हैं। फिर कन्यावाले वर के यहां कोरथ के रुपये देने आते हैं। फिर वर के यहां निकासी की तैयारी की जाती है। वर को नहला धुलाकर भौजाई वर की आंख में काजल लगाती है; माता वर को बोबा (स्तन) पान कराती है और वर को घोड़ी पर चढ़ाकर, वर की बहन घोड़ी की गर्दन के बाल गूँथती

है। पहले घोड़ी पर चढ़ाने से पूर्व वर को एक बार गधे पर भी चढ़ाया जाता था या पैर से गधे को छुवाया जाता था। पर इन दिनों यह प्रथा प्रायः उठ-सी गई है। इसी प्रकार स्त्रियों का कुम्हार का चाक पूजने के लिये जाना भी कहीं कहीं प्रचलित है। फिर घोड़ी ही पर या हाथी पर चढ़ाकर चँवर छत्र के साथ वर का ढुकाव निकाला जाता है, जो एक बड़ा सा जुलूस होता है और जिसमें सब बराती शामिल होते हैं। यह बारात कन्या के घर पहुँचती है। वहाँ तोरण मारा जाता है। कन्या के घर की स्त्रियाँ दरवाज़े पर आकर नेगचार करती हैं और गीत गाती हैं। फिर ढुकाव में गये हुये लोगों को घर में ले जाकर छाक दिखाई जाती है। छाक में प्रायः ६ स्त्रियों की पोशाक या दो एक पोशाक और बाक़ी के लिये रुपये रक्खे जाते हैं। ठोड़माठी (एक प्रकार की मिठाई) भी रक्खी जाती है। ये सब चीज़े वर वाले ले जाते हैं। फिर वर के कुटुम्बी और सम्बधियों को छो कर ढुकाव में आये हुये लोग लौट जाते हैं। रात में लग्न के समय फेरा होता है। विवाह-विधि के सिवा शाखोच्चार आदि में बहुत सा समय लग जाता है। फेरे के बाद वर कन्या को स्त्रियाँ थापे के पास लेजाकर थापा (दीवार पर रंग से लिखा हुआ एक प्रकार का चित्र) पुजाती हैं और श्लोक पढ़वाती हैं। इसके बाद वर अपने घर जाकर सो जाता है। रात के दो तीन बजे तक यह सब कार्य्य होता रहता है। दूसरे दिन वर को "कंवर कलेवे" के लिये बुलाया जाता है। वर अपने आदमियों के साथ खूब गाजे-बाजे के साथ जाता है। दोपहर को स्त्रियां वर को साथ लेकर गाती हुई कन्या के घर जाती हैं। वहाँ कन्या की सिरगूँथी होती है। उस समय जुआ खिलाना आदि कई प्रकार के नेग किये जाते हैं। फिर वर को लेकर स्त्रियां लौट आती हैं और शाम को वर को लेकर वर-पक्ष के लोग जीमनवार के लिये कन्या के घर जाते हैं और तरह तरह के स्वादिष्ट पदार्थ भोजन करते हैं। कोई बीसों तरह की मिठाइयां, शाक, चटनी आदि बनाई जाती हैं और खूब लापरवाही से परोसी जाती हैं। जीमनवार हो चुकने पर जूठ और

पगधोई के रुपयें के लिये आपस में कुछ समय तक वाद-विवाद होने के बाद वर-पत्त के लोग वापस आते हैं।

दूसरे दिन पहरानी होती है, जिसमें वर को लेकर कन्या के घर जाते हैं और वहाँ जेवर, दुशाले तथा रुपयें के सिवा बड़े बड़े बरतन आदि भी पाते हैं। बहुत सी मिठाई भी मिलती है। स्त्रियाँ कई प्रकार के नेग करके कन्या को विदा करती हैं। सब लोग चीज़ों को लेकर बाज़ार में घूमते हुये घर आते हैं। पहरानी होने के बाद एक बार फिर वर को कन्या के घर भोजन कराया जाता है, जिसे "समधन" कहते हैं। रात के समय कन्या का भाई अपने आदमियें को साथ लेकर कन्या को वापस लाने जाता है, जिसे "पीठमहोड़ा" कहते हैं। दोनों ओर की स्त्रियाँ जो गीत गाती हैं, उनमें ऐसे गीत भी रहते हैं जो सीठना कहलाते हैं और बड़े अश्लील होते हैं।

यह विवाह की प्रचलित प्रथा है। संभव है, भिन्न प्रांतीय होने के कारण कुछ बातें मेरी जानकारी से छूट गई हों; पर मेरा विश्वास है कि मुख्य-मुख्य बातें प्रायः सब आ गई हैं।

प्रचलित प्रथा के मुक़ाबले में सेठ जमनालालजी की कन्या का विवाह किस सादगी से हुआ, इसका विवरण आगे दिया जाता है—

सेठ जमनालालजी सकुटुम्ब विवाह से ८।१० दिन पहले से साबरमती आश्रम में जा ठहरे थे। वहां आपका एक निजी बँगला है और डाक्टर मेहता का लाल बँगला भी मेहमानों के लिये ले लिया गया था।

वर के पितामह सेठ रामबल्लभजी, सगे चचा श्रीकेशवदेवजी, वर के सगे भाई, बहन, दादी, मां तथा कुटुम्ब के अन्य लड़के और बड़े ता० २५-२-२६ को दोपहर के लगभग अहमदाबाद आये। स्टेशन पर दो चार आदमियें के साथ जेमनालालजी ने उनका स्वागत किया और बिना किसी जलूस के उन सबको मोटरों और अन्य सवारियें पर बैठाकर आश्रम से डेढ़ मील शहर की ओर एक अच्छे बँगले में ठहराया। बँगले में उस दिन कच्ची रसोई का प्रबन्ध जमनालालजी ने करा रक्खा था। अतएव

सब शीघ्र ही स्नान-भोजन से निवृत्त हो गये। वर गुजरात विद्यापीठ में पढ़ता है। वह भी स्टेशन पर गया था।

उस दिन एक पंडित को बुलाकर वर के हाथ से केवल गणेशपूजन कराया गया। हलदात की तरह चिटिया या हँसली आदि वर को नहीं दिया गया। उसी दिन कन्या की माता आदि वर की माता आदि से मिलने आईं। ता० २६ को महात्मा गांधी जी से मिलने के लिये सेठ रामवल्लभजी आदि गये। साथ के अन्य लोग शहर देखने गये थे। ता० २६-२७ को पाहुने आने शुरू हो गये थे। वर के बहनोई, फुफा, मामा का लड़का आदि लोग आये थे। वरपक्ष के कुल व्यक्तियों की संख्या स्त्री-पुरुष मिलाकर ५० के लगभग रही होती। ता० २७ को कोई उल्लेखनीय बात नहीं हुई।

ता० २८ (चैत्र कृ० १) की शाम को वर-पक्ष के लोग श्रीरामेश्वर-प्रसाद को शुद्ध खादी के सफ़ेद वस्त्र और कुसुंभी रङ्ग की खादी की पगड़ी पहनाकर, मोटर में बैठाकर सात बजे आश्रम में ले गये। कुछ दूर होने के कारण मोटर का उपयोग किया गया, नहीं तो पैदल ही जाने का विचार किया गया था। आश्रम में प्रार्थना-स्थान पर सब जमा हुये, जिसमें दोनों ओर के स्त्री-पुरुष एकत्र थे। प्रार्थना ८ बजे तक प्रतिदिन होती है। आठ बजे प्रार्थना समाप्त होने पर गांधीजी ने यह भाषण दिया—

आप लोग भाई और बहनें दोनों, जो बाहर से परिश्रम उठाकर रामेश्वर और कमला इन दोनों को आशीर्वाद देने को आ गये हैं इससे मुझको आनन्द होता है और मैं आपको धन्यवाद भी देता हूँ। धन्यवाद देने का सबब यह है कि इसको आप सामान्य विवाह नहीं समझते। हिन्दू जाति में जो विवाह होता है उसमें बहुत आडम्बर होता है। रङ्ग-राग, नाच-तमाशा, खाना-पीना अनेक प्रकार का प्रलोभन होता है। विवाह का धार्मिक अंश, जिसके कारण विवाह करना योग्य समझा गया है, वह धार्मिक कारण छुप जाता है। हम

धार्मिक अंश को भूल जाते हैं। विवाह में पैसे का व्यय इतना अधिक होता है कि ग़रीबों को विवाह करना आपत्ति सी हो जाती है। कई लोग क़र्ज़दार हो जाते हैं और उस क़र्ज़ से जन्म भर भी उनके लिए छूटना मुश्किल हो जाता है। ऐसे विवाह से वर और कन्या दोनों गृहस्थाश्रम में धर्म-विधि का पालन करे, यह आकाश-पुष्पवत् हो जाता है। जिसमें इतना आडम्बर होता है और जो विवाह-विधि इतनी विकारमय होती है और जिसे विकारमय बनाने के लिए माता-पिता इतना परिश्रम उठाते हैं, उससे वर और कन्या संयममय जीवन व्यतीत, करें यह मुश्किल बात है। यद्यपि इस आश्रम का आदर्श यह है कि विवाहित होते हुए भी ब्रह्मचर्य्य का पालन करना चाहिए और उसी प्रकार चंद लोग रहते भी हैं। बालक और बालिकाओं को ब्रह्मचर्य्य की शिक्षा और पदार्थ-पाठ दिये भी जाते हैं। ऐसा होते हुए भी आश्रम के नज़दीक और उसकी छाया में विवाह किया जाता है इसका कारण क्या ? इसको धर्म संकट माना जाय। अहिंसा का पालन करने वाले किसी पर बलात्कार नहीं करते। आश्रम-वासियों में से जो ब्रह्मचर्य्य का पालन नहीं कर सकते उनके लिए विवाह करना यह कर्तव्य ही है। और इस कर्तव्य को करने में हम उनको आशीर्वाद क्यों न दें ? और विधि भी अच्छी क्यों न चलावें ? यह भी कर्तव्य है और इसके पालन करते हुए और सोचते हुये मैंने यह देखा है कि हिन्दुस्तान में अथवा तो सारे संसार में जहां विवाह धार्मिक विधि मानी जाती है, वहाँ उसमें संयम का अंश होता है। विवाह स्वेच्छाचार के लिए नहीं है। स्मृतियों में भी लिखा है कि जो दम्पति नियम से रहते हैं वह भी ब्रह्मचर्य्य का पालन करते हैं। मैंने भी इसको बहुत समय तक नहीं समझा था। पर बहुत विचार करने के बाद मैं समझ सका। जो अपने विकारों का नाश नहीं कर सकते, वे मर्यादा में रहकर विकारों पर अंकुश रखते हुए अनिवार्य इतना ही व्यवहार कर सकते हैं। वे भी संयमी कहलाते हैं। जमनालाल

जी का और मेरा जो सम्बन्ध है वह तो आप खूब जानते ही हैं। हम दोनों में यह निश्चय हुआ कि जितनी सादगी से और कम ख़र्च से विवाह कर सकें, करना चाहिए। इस तरह से विवाह की क्रिया करनी चाहिए कि जिससे दोनों पर ऐसा प्रभाव पड़े कि वे विवाह का सच्चा अर्थ समझ सकें। विवाह को आडम्बर-रहित बनाना, भोजनादि को और गान-तान को स्थान नहीं देना, ऐसा विवाह अच्छी तरह कहाँ हो सकता है ? अगर बम्बई में किया जाय तो मार-वाड़ी-समाज को और जमनालालजी के मित्रों को इससे पाठ मिलेगा। आजकल सुधारों के नाम से जो अधर्म चल रहा है वह वायु नष्ट हो जावेगा। जो धर्म समझना चाहें उनके लिए दृष्टान्त हो जावेगा। परन्तु मुझे यह भय था कि जितनी सादगी के साथ यहां विवाह हो सकता है उतनी सादगी के साथ वहाँ नहीं हो सकेगा। इसकी दलीलों में मैं उतरना नहीं चाहता। इसी कारण से मैंने वर्धा को भी छोड़ दिया और बम्बई को भी छोड़ दिया। परन्तु इस कार्य को कैसे किया जाय ? जमनालालजी और उनके माता-पिता की सम्मति से ही काम नहीं चल सकता। रामेश्वरप्रसाद के वडील वर्ग की सम्मति की भी ज़रूरत थी। प्रभु का अनुग्रह था कि केशवदेवजी ने भी इसे स्वीकार कर लिया।

मारवाड़ी-समाज में धन बहुत है और खर्च भी अधिक होता है। इतना अधिक कि ग़रीब लोगों को विवाह करना अशक्य सा हो जाता है। और उनपर बोझ पड़ जाता है। उसमें फुलवारी, भोजन, बत्तियाँ और नायिकाओं का नाच भी कहीं कहीं होता है। मैं नहीं जानता कि मारवाड़ी लोगों में होता है या नहीं परन्तु गुजरात के धनिक लोगों में कहीं-कहीं होता है। इसका असर सारे मारवाड़ी-समाज पर और मारवाड़ी-समाज हिन्दू-जाति का एक अंश है—इसलिए उसपर भी, इतना ही नहीं, बल्कि मुसल्मान इत्यादि जातियों पर भी, पड़ता है। हाँ, मैं यह मानता हूँ कि उन अन्य जातियों पर

थोड़ा पड़ता है। इससे आप सोच सकते हैं कि धनिक लोगों पर कितना बोझ है। परन्तु जो धनवान लोग धन कमाने में मस्त हैं और अहङ्कार से ईश्वर को भूल गये हैं, उनकी बात दूसरी है। मारवाड़ी लोगों में धन है। दुराचार होते हुए भी धर्म के लिए प्रेम है। यह बात मैं खूब जानता हूँ। धर्म के लिए वे प्रतिवर्ष लाखों रुपये देते हैं। इसका मुझे प्रत्यक्ष अनुभव है। इसलिए हम दोनों ने सोचा कि बिलकुल सादगी से विवाह किया जाय। इसमें स्वार्थ और परमार्थ दोनों हैं। जमनालालजी और केशवदेवजी का रामेश्वरप्रसाद और कमला का भला सोचना यह तो स्वार्थ और दूसरों को मार्ग बताना यह परमार्थ। आप देखेंगे कि इस विवाह में आडंबर नहीं होगा। नाचगान नहीं होगा। विवाह के समय केवल धार्मिक विधियाँ ही की जायँगी। आपलोगों को निमंत्रण इस भाव से दिया गया है कि आप इसके साक्षी हों और ऐसी प्रतिज्ञा करें कि आप इसका अनुकरण करेंगे। संभव है कि मेरी इसमें भूल हो और आप ऐसा करना पसंद न करें। हिन्दुस्तान में चंद धनिक लोग होने से वह धनिकों का देश नहीं हो जाता। यह कङ्गालों का मुल्क है। यहाँपर जितने लोग भूख से मरते हैं और समय पर अन्न न मिलने से व्याधि-ग्रस्त हो जाते हैं और भूख खींचने से जडवत् बन जाते हैं उतने दुनिया के और किसी देश में नहीं। यह मेरा कहना नहीं है। मगर इतिहासकारों का कथन है। हिन्दू-मुसल्मान इतिहासकारों का नहीं, राज्यकर्ता के कौम के लोगों का यह कथन है। ऐसे कङ्गाल मुल्क के करोड़पतियों को भी ऐसा काम करने का अधिकार नहीं जिससे कि कंगालों के पेट में दर्द हो। धनिक लोग हिन्दुस्तान में ही धन कमाते है। वे बाहर से धन कमाकर धनवान् नहीं होते। यों तो बाहर के लोगों को दुःख देकर धन कमाना भी महापाप है। जितने करोड़पति या लखपति हिन्दुस्तान में हैं वे कंगालों को और भी कंगाल बनाते हैं। हिन्दुस्तान

में सात लाख देहात हैं। उनमें से कई का नाश हो रहा है। उनका खून चूसा जा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जिनको एक समय भी खाने को नहीं मिलता, वे लोग मर जाते हैं। इस देश में पशु और मनुष्य दोनों मरते हैं। ऐसी हालत में इतना ही धन खर्च करना चाहिए, जो धर्म के लिए अनिवार्य हो। और बचा हुआ धन परोपकार में व्यय करें, जिससे हिन्दुस्तान के कंगालों का भी भला हो। और धनिकों का भी भला हो। इस दृष्टि से हम देखें तो यह विवाह अनुकरणीय है। यह एक सामान्य सुधार नहीं है। इसकी जड़ खूब भीतर जाती है। और इसका परिणाम भी अच्छा ही होगा। इस तरह का कार्य अगर ग़रीब करेगा तो भी उसका काम तो होगा ही; पर इतना प्रभाव नहीं पड़ेगा। जमनालालजी दस हज़ार बीस हज़ार और पचास हज़ार भी फेंक दे सकते हैं और उनके मारवाड़ी भाई भी यह कहेंगे कि कैसा अच्छा विवाह किया। परन्तु उन्होंने धन होते हुए भी उसका उपयोग नहीं किया। अपने अधिकार को छोड़ दिया। इसका परिणाम अच्छा ही होगा। कारण गीताजी में भी लिखा है कि श्रेष्ठ लोग जो करते हैं उसका अनुकरण दूसरे लोग करते हैं। यह सच्चा और अनुभव-सिद्ध वाक्य है। मैंने आपका अनुग्रह माना है। मैं आप को धन्यवाद देता हूँ। आप कमला और रामेश्वरप्रसाद दोनों को आशीर्वाद देंगे। दूसरे भी ऐसा करेंगे तो अच्छी बात होगी। ऐसा करने से स्वतः की, धर्म की और मुल्क की सेवा होगी। रामेश्वरप्रसाद और कमला दोनों यहां पर हैं, ऐसा मैं जानता हूँ। दोनों समझते हैं। रामेश्वरप्रसाद तो समझता ही है और कमला भी इस उमर की हो गई है कि उसके मा-बाप उसको मित्र जैसा समझ सकते हैं। इन दोनों को समझना चाहिए कि इनके माता-पिता जो इतना परिश्रम कर रहे हैं, इतने लोग साक्षी बनने के लिए यहां आ गये हैं यह विवाह स्वच्छंद के लिए नहीं। विकार का गुलाम बनने के लिये नहीं। यह दंपती आदर्श दंपती बनें। उनमें ऊँचे

भाव बढ़ाने के लिये यह सब कर रहे हैं। गृहस्थाश्रम में भी विकार को दबाने का मौका है। शास्त्र तो यह बताता है कि केवल प्रजा की इच्छा होने पर ही विकारवश हो सकते हो। इसको हम भूल गये हैं। और हमको यह बात कोई बतलाता नहीं। रामेश्वरप्रसाद को यह बात मैं बतलाना चाहता हूं की स्त्री पुरुष की ग़लाम नहीं है। वह अर्धांगिनी है सहधार्मिणी है। उसको मित्र समझना चाहिये। रामेश्वर प्रसाद स्वप्न में भी कमला को गुलाम न समझे। हिंदूधर्म में भी ऐसे लोग अभी हैं जो स्त्री को अपना माल समझते हैं। यह दोनों नये जीवन में प्रवेश करते हैं। मैंने एक बार यह भी कहा है कि यह तो एक नया जन्म है। यह दंपती शिव पार्वती या सावित्री सत्यवान या सीताराम के समान आदर्शभूत हों। हिंदू धर्म ने स्त्रीयों को इतना उच्च स्थान दिया है कि हम सीताराम कहते हैं, रामसीता नहीं; राधाकृष्ण कहते है कृष्णराधा नहीं। अगर सीता नहीं होतीं तो राम को कोई नहीं जानता। सावित्री नहीं होतीं तो सत्यवान का नाम भी नहीं सुनाई देता। अगर द्रौपदी नहीं होती तो पांडवों का पता भी न चलता। दृष्टांत खोजने की ज़रूरत नहीं है। मेरा विश्वास है कि यह कार्य्य हमको परिणामकारक होगा। मुझ को ऐसा सोचने का मौका नहीं आवे कि मैंने कैसा अकार्य किया। अभी मेरे आयुष्य के कुछ दिन शेष रहे हैं, इससे मैं ईश्वर से डर के चलना चाहता हूँ और जो कुछ करता हूँ अपनी अंतरात्मा को पूछ के करता हूँ। मेरी अंतरात्मा कहती है कि यह दंपती भी हमारे लिये आदर्श होगी। हमको पश्चात्ताप का कोई मौका नहीं देगी। अंत में मैं इन दोनों को आशीर्वाद देता हूँ कि ये दोनों दीर्घायू हों। और अपने वडीलों को भी सुशोभित करें और धर्म की रक्षा और देश की सेवा करें।"

इस भाषण का उपस्थित जनता पर खूब अच्छा प्रभाव पड़ा। इसके बाद वर कन्या दोनों पक्ष के लोग प्रार्थना-भूमि से उठकर मंडप में पहुँचे जो जमनालालजी के बँगले के अहाते में शास्त्रीय विधि से बनाया

गया था। वहां विवाह-कार्य आरम्भ हुआ। कई विद्वान् पंडितों की अनुमति में गृह्य सूत्र के अनुसार विवाह-पद्धति तैयार कराई गई थी। उसी के अनुसार विवाह-कार्य होने लगा। विवाह पंडित नेकीराम शर्मा (भिवानी), पं० बालमुकुन्दजी मिश्र (नवलगढ़) और पंडित नारायण मोरेश्वर खरे (साबरमती आश्रम), ने मिलकर कराया। वर कन्या तथा उनके पिता-माता ने भी उस दिन व्रत किया था।

ठीक नौ बजे फेरे की मुहूर्त थी। उसी समय महात्मा गाँधीजी मंडप में पधारे। फेरे की प्रतिज्ञा महात्माजी ने कराई। वर कन्या दोनों ने अपनी अपनी प्रतिज्ञा अपने अपने मुँह से कहकर की। छपी हुई प्रतिज्ञा उपस्थित जनता में बाँट दी गई थी। उसकी प्रतिलिपि यहाँ दी जाती है—

॥ ॐ श्रीहरिः ॥

[सत्याग्रहाश्रम के निकट साबरमती में श्रीजमनालाल बजाज के निवास-स्थान में प्रथम चैत्र कृष्ण १, संवत् १९८२ को महात्मा गाँधीजी के सामने वर चि० रामेश्वरप्रसाद नेवटिया और कन्या चि० कमला बाई के विवाह के अवसर पर उनकी की हुई प्रतिज्ञा]

कन्या का पिता कहता है:—

यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह।
धर्मे चार्थे च कामे च नातिचरितव्या॥

धर्म का आचरण जो तुमको प्राप्त हो, उसे इसी कन्या के साथ करना। धर्म में, अर्थ में और काम में इस कन्या से ही एकनिष्ठ होकर रहना। विरुद्धाचरण न करना।

वर उत्तर देता है:—

नातिचरामि, नातिचरामि, नातिचरामि॥

धर्म, अर्थ और काम में मैं व्यभिचार नहीं करूँगा, नहीं करूँगा, नहीं करूँगा।

सप्तपदी

वर कन्या से कहता हैः—

१. इष एकपदी भव। सामामनुव्रता भव।

इच्छा-शक्ति प्राप्त करने के लिए एक पग चल। मेरा व्रत पूर्ण करने में सहायता कर।

कन्या—मैं तुम्हारे प्रत्येक सत्य-संकल्प में सहायता करूँगी।

२. ऊर्जे द्विपदी भव। सामामनुव्रता भव।

तेज प्राप्त करने के लिए दूसरा पग चल। मेरा व्रत पूर्ण करने में सहायता कर।

कन्या—मैं तुम्हारे प्रत्येक सत्य-संकल्प में सहायता करूँगी।

३. रायस्पोषाय त्रिपदी भव। सामामनुव्रता भव।

कल्याण की वृद्धि के लिए तीसरा पग चल। मेरा व्रत पूर्ण करने में सहायता कर।

कन्या—मैं तुम्हारे सुख से सुखी रहूँगी और तुम्हारे दुःख में दुःख अनुभव करूँगी।

४. मायोभव्याय चतुष्पदी भव। सामामनुव्रता भव।

आनंदमय होने के लिए चौथा पग चल।

कन्या—मैं सदा तुम्हारी भक्ति में तत्पर रहूँगी। सदा प्रिय बोलूँगी। सदा तुम्हारा आनंद चाहूँगी।

५. प्रजाभ्यः पंचपदी भव। सामामनुव्रता भव।

प्रजा की सेवा के लिए पाँचवाँ पग चल। मेरा व्रत पूर्ण करने में सहायता कर।

कन्या—तुम्हारी प्रजा-सेवा के व्रत में मैं प्रत्येक पग तुम्हारे साथ रहूँगी।

६. ऋतुभ्यः षट्पदी भव। सामामनुव्रता भव।

नियम-पालन के लिए छठा पग चल। मेरा व्रत पूर्ण करने में सहायता कर।

कन्या—यम-नियमों के पालन में मैं तुम्हारी अनुगामिनी रहूँगी

७. सखा सप्तपदी भव। सामामनुव्रता भव।

हम दोनों में परस्पर मैत्री रहे, इसके लिए सातवाँ पग चल। मेरा व्रत पूर्ण करने में सहायता कर।

कन्या—यह मेरे पुण्य का फल है कि तुम मेरे पति हुए। तुम्हीं मेरे परम मित्र, तुम्हीं मेरे परम गुरु और तुम्हीं मेरे देवता हो।

प्रतिज्ञा के बाद महात्माजी ने वर कन्या को उनकी पीठ ठोंक कर आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् आश्रम के गायनाचार्य पण्डित नारायण मोरेश्वर खरे ने ये दो पद वीणा पर बड़े मधुर स्वर में गाकर सुनाये—

(१)

मंगल करहु दया करि देवी।

विमल ज्ञान दे कुमति सुधारहु तम हिय हरहु दयाकरि देवी।

ह्व अनुकूल प्रेम धन जन हित सब सुख भरहु दयाकरि देवी।

(२)

आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभू के धन्यवाद।

जिसका यश नित गाते हैं गन्धर्व मुनिगण धन्यवाद॥

मन्दरों में, कन्दरों में, पर्वतों के शिखर पर।

देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिवर धन्यवाद॥

आश्रम का पवित्र वातावरण, महात्माजी की उपस्थिति, शुद्ध धार्मिक विधि, इन सब के साथ पण्डित खरेजी के उपर्युक्त दोनों पदों ने उपस्थित जनता पर बड़ा ही प्रभाव डाला था। इसके बाद वर वधू ने उठकर अपने बड़ों को प्रणाम किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। महात्माजी तथा थोड़ी देर बाद वर वधू पक्ष के लोग भी अपने अपने स्थान को चले गये।

विवाह-कार्य ६॥। बजे पूर्ण हो गया था। न कोई बाजा बजा, न स्त्रियों ने गीत गाये। सब कार्य धार्मिक विधि की तरह बड़ी पवित्रता और शान्ति से हुआ। कमलाबाई ने अपने हाथ से सूत

काता था उससे एक दुपट्टा तैयार कराया गया था जो श्रीरामेश्वरप्रसाद को दिया गया।

विवाह के अवसर पर स्त्री-पुरुषों की भीड़ पाँच छः सौ के लगभग रही होगी। अहमदाबाद के प्रायः कुल मारवाड़ी बिना निमंत्रण ही आये थे। गुजरात विद्यापीठ के आचार्य, अन्य अध्यापक तथा छात्र-गण भी उपस्थित थे। आश्रम के मुख्य मुख्य लोग भी सस्त्रीक उपस्थित थे। गाँधीजी की धर्म-पत्नी "बा" प्रारम्भ से ही उपस्थित थीं।

स्त्रियों में मुख्य मुख्य के नाम ये हैं—

(१) बा (गाँधीजी की धर्मपत्नी)
(२) अनुसूया बैन
(३) सेठ अम्बालाल साराभाई के घर की स्त्रियाँ
(४) आश्रमवासिनी स्त्रियाँ
(५) प्रो० गिडवानी की धर्मपत्नी
(६) श्रीमती अंजना देवी चौधरानी, अजमेर।
(७) " रामजीवनी देवी, वियाणी
(८) " राधादेवी तापड़िया
(९) श्रीमती गाड़ोदिया, अकोला
(१०) बाई सुदर्शना सेठी, अजमेर
(११) मणिबेन पटेल, अहमदाबाद
(१२) मीराबाई (मिस स्लेड)

पुरुषों में मुख्य मुख्य ये उपस्थित थे—

(१) पंडित मोतीलालजी नेहरू, प्रयाग।
(२) श्री० वल्लभ भाई पटेल, अहमदाबाद
(३) श्री० राजेन्द्र बाबू, पटना
(४) पं० नेकीरामजी, भिवानी
(५) पं० अर्जुनलालजी सेठी, अजमेर
(६) पं० रामचंद्रजी वैद्य "

(७) श्री० जगरूपजीअग्रवाल, अजमेर
(८) श्री० क्षेमानन्दजी राहत, ,,
(९) श्री० नृसिंहदासजी अग्रवाल, ,,
(१०) श्री० विश्वेश्वरदासजी विरला, ,,
(११) श्री० रामनारायणजी चौधरी, ,,
(१२) राजा गोविन्दलालजी पीती, बम्बई
(१३) श्री० रामनिवासजी रुइया, सेठ रामनारायणजी रुइया के पुत्र, बम्बई
(१४) श्री० महावीरप्रसादजी पोद्दार, गोरखपुर
(१५) श्री० वाराणसीप्रसादजी झुँझनूवाला, भागलपुर
(१६) श्री० गणेश शंकर विद्यार्थी, कानपुर
(१७) श्री० रामनरेश त्रिपाठी, प्रयाग
(१८) श्री० रामकुमार भुवालका, कलकत्ता
(१९) श्री० घीसूलालजी जाजोदिया, ब्यावर
(२०) श्री० चुन्नीलालजी अग्रवाल, नसीराबाद
(२१) श्री० रामनिरंजन झुँझनूवाला, बम्बई
(२२) श्री० नथमलजी सुराणा, बीकानेर
(२३) श्री० ऋषदभासजी रांका, जलगांव
(२४) पं० मोहनलाल जी शर्मा, ,,
(२५) श्री० राजमलजी, जामनेर
(२६) श्री० आईदानजी मोता, अकोला
(२७) श्री० व्रजलालजी बियाणी, ,,
(२८) श्री० श्रीरामजी गोयनका, एम० एल० सी०, ,,
(२९) श्री० कृष्णलालजी गोयनका ,,
(३०) श्री० सुगनचंदजी तापड़िया ,,
(३१) श्री० माँगीलालजी गाड़ोदिया ,,
(३२) श्री० शिवनाथ बाबू, अमरावती

(३३) श्री० मन्नालालजी अग्रवाल, चांदूर
(३४) श्री० मूलचंदजी चोखानी, यवतमाल
(३५) श्री० श्रीकृष्णदासजी जाजू, वर्धा
(३६) श्री० द्वारकादासजी भैया, वर्धा
(३७) श्री० चिरंजीलालजी बड़जात्या "
(३८) श्री० परमानन्दजी जुगाणी "
(३९) श्री० कृष्णलालजी वैद्य "
(४०) पं० बालमुकुन्दजी मिश्र, नवलगढ़
(४१) श्री० हरीरामजी मुरारका, वर्धा
(४२) श्री० सत्यदेवजी विद्यालङ्कार, नागपुर
(४३) श्री० पूनमचन्दजी रांका "
(४४) श्री० अमरचन्दजी पूगलिया, रंगून
(४५) मिस्टर हिरवे, उज्जैन

जमनालालजी ने २०० के लगभग निमन्त्रण-पत्र भेजे थे। पहले किसी तरह की भीड़भाड़ करने की बिलकुल इच्छा न थी। पर पीछे मित्रों के अनुरोध से, गांधीजी की आज्ञा लेकर, मुख्य मुख्य व्यक्तियों के नाम निमन्त्रण-पत्र भेजे गये थे। जिनमें से कितने ही पत्र तो इतनी देर से पहुँचे कि निमंत्रितों के लिये विवाह की तिथि तक आश्रम में पहुँचने का समय ही शेष न रहा। कुछ मित्र पहले से सूचना न पाने के कारण ठीक समय पर अपने लिये अवकाश न निकाल सके। विज्ञानाचार्य सर जे० सी० बोस ने विलायत जाने की तैयारी में व्यग्र रहने के कारण अपनी अनुपस्थिति के लिये खेद-सूचक पत्र भेजा था। इसी प्रकार काशी के बाबू शिवप्रसादजी गुप्त और अजमेर के श्रीयुत शारदाजी के भी पत्र आये थे।

ता० १-३-२६ को वर-पक्ष वालों को भोजन कराके जमनालालजी ने कन्या को विदा कर दिया।

ता० २-३-२६ को वर और कन्या को साथ लेकर सेठ रामवल्लभजी

केशवदेवजी फ़तहपुर के लिए रवाना हो गये। वर श्रीरामेश्वरप्रसाद ८।१० दिन घर रहकर फिर अहमदाबाद लौट आयेंगे और गुजरात विद्या-पीठ में अपना अध्ययन प्रारंभ करेंगे।

इस विवाह में वर-पक्ष के १५००) के लगभग और कन्या-पक्ष के २५००) के लगभग कुल व्यय हुआ होगा। यदि प्रचलित रीति के अनुसार विवाह होता तो वर-पक्ष के १५ हजार और कन्या-पक्ष के ३० या ३५ हजार रुपये से कम ख़र्च न होते।

प्रचलित प्रथा के मुक़ाबले में इस तरह फ़ज़ूलख़र्ची को रोककर धार्मिक पवित्रता की रक्षा करते हुये जमनालालजी ने विवाह का जो आदर्श समाज के सामने उपस्थित किया है, वह समाज के लिये बहुत ही लाभदायक होगा। यह जमनालालजी का ही साहस था कि वे समाज के हित के लिये प्रचलित प्रथा के मुक़ाबले में अकेले कदम बढ़ा सके। श्रीयुत सेठ रामवल्लभजी और केशवदेवजी नेवटिया के साहस को लोग जमनालालजी के साहस से भी अधिक महत्व देते हैं। क्योंकि जमनालालजी ने तो अपना सब भार महात्मा गांधीजी पर छोड़ रक्खा है। महात्माजी जैसा चाहेंगे, जमनालालजी वैसा ही करेंगे। वह समाज की रूढ़ि के अनुकूल हो या प्रतिकूल, इसकी वे परवा न करेंगे। पर नेवटियाजी ने तो जो कुछ किया है, सब अपनी ज़िम्मेदारी पर किया है। उनके साहस की तो अधिक प्रशंसा करनी ही होगी। सेठ रामवल्लभजी बहुत विचारवान् और समाज में आवश्यक सुधार के समर्थक व्यक्ति हैं। पहले-पहल फ़तहपुर में आपने ही अपने पौत्र श्रीरामकुमार नेवटिया के विवाह में वेश्यानृत्य बन्द किया था। श्रीयुत केशवदेवजी चुपचाप काम करने वाले व्यक्ति हैं। उन्होंने फतहपुर में बालक-बालिकाओं की शिक्षा के लिये जो उद्योग किया है, वह अनुकरणीय और फ़तहपुर वालों के लिये सदा आदर के साथ स्मरण रखने योग्य है। इन दोनों सज्जनों के प्रभाव से नेवटिया-वंश शिक्षा और समाज-सेवा करने में सदा आगे रहा है और रहेगा। धन ख़र्च

करने में समर्थ होकर भी इन्होंने विवाह में फ़ज़ूलख़र्ची रोकने की नीयत से जो साहस-पूर्ण पग आगे बढ़ाया है, आशा है, मारवाड़ी-समाज उसका हृदय से स्वागत करेगा।

साबरमती आश्रम के सम्बन्ध में एक यह झूठी अफ़वाह मारवाड़ी-समाज में फैली है या फैलाई गई है कि वहाँ सब को अछूतों के साथ बैठकर भोजन करना पड़ता है। मैंने तो वहां खानपान के सम्बन्ध में इस प्रकार की कोई हलचल नहीं देखी। सेठ रामबल्लभजी तो आचार-विचार के बड़े पक्के पाबन्द हैं। यहाँ तक कि अपने घर में भी वे अपने रसोई-पानी का इन्तज़ाम अलग रखते हैं। उन्होंने स्वयं आश्रम में जाकर सब बातें देखी हैं। वहाँ कोई किसी को किसी के साथ बैठकर भोजन करने को विवश नहीं करता। बल्कि जैसा मैंने देखा है, आश्रमवासी लोग अपना भोजन स्वयं अपने हाथ से बनाकर खाते हैं। हाँ, यह बात अवश्य है कि महात्माजी को किसी से परहेज़ नहीं। उन्हें परहेज़ है तो केवल गन्दगी से। वर और कन्या दोनों पक्षवालों के यहां ब्राह्मण रसोई बनाते थे और रसोई में छुआछूत का वैसा ही ख़याल रक्खा जाता था जैसा मारवाड़ी-समाज में प्रचलित है।

आश्रम का वातावरण इतना पवित्र है कि वहां मन में किसी प्रकार का भय या कलुषित भाव रहता ही नहीं। वहां आचार-विचार से रसोई बनाकर खाइये अथवा छूत-अछूत का ख्याल किये बिना ही सब के साथ शुद्धता से बैठकर भोजन कीजिये तो कोई हँसने वाला नहीं।

इस प्रकार श्रीरामेश्वरप्रसाद और कमलाबाई का आदर्श विवाह साबरमती आश्रम में थोड़े समय और थोड़े व्यय में आनन्दपूर्वक हो गया।

समाज-सेवा

ऊपर लिखा जा चुका है कि युवावस्था के प्रारम्भ में ही जमनालाल जी को ऐसे मित्र मिल गये, जो सब के सब समाज-सेवा के क्षेत्र में आने के लिए उत्साही थे। मारवाड़ी-समाज में शिक्षा की कमी देखकर पहले-पहल शिक्षा-प्रचार का ही काम हाथ में लिया गया। १ फरवरी, १९१० को वर्धा में "मारवाड़ी विद्यार्थी गृह" की स्थापना हुई। रुपया सब आप का लगता था और सँभाल जाजूजी करते थे। उसी वर्ष (सं १९६७ में) आपने अपनी सामाजिक स्थिति को ठीक ठीक समझने के लिये पहले-पहल मारवाड़ की यात्रा की। आपने शेखावाटी की शिक्षा-संस्थाओं का निरीक्षण भी किया और उन्हें आर्थिक सहायता भी दी। "मारवाड़ी विद्यार्थी गृह" को ही शिक्षा के लिये काफी न समझकर सन् १९१२ में आपने वर्धा में "मारवाड़ी हाईस्कूल" खोला। "गृह" और "स्कूल" दोनों में बहुत से असमर्थ विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र और पुस्तकों के लिये आर्थिक सहायता दी जाती थी। गृह और स्कूल दोनों के लिए आपने अच्छी रक़म दान की और अन्य मित्रों से भी सहायता दिलाई। कन्याओं की शिक्षा के लिये वर्धा में एक कन्या पाठशाला खोली गई। उस में भी आपने अच्छी रक़म सहायता में दी। सन् १९१४ में बम्बई में "मारवाड़ी विद्यालय" की स्थापना हुई। जिसमें आपका ख़ास भाग था। उसी वर्ष "मारवाड़ी शिक्षा-मण्डल" की स्थापना की गई, जिसकी देख-रेख में वर्धा का हाईस्कूल और बोर्डिंग चलने लगे। इसके बाद सीकर में "माधव विद्यार्थी गृह" खोला गया, जो आप के विशेष प्रयत्न से रावराजाजी की सहानुभूति प्राप्त करके खुला था, और अब तक चलता है। उस में मुख्यकर राजपूत विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। पहले उसका प्रायः कुल ख़र्च आप देते रहे। अब कुछ समय से रावराजाजी भी सहायता देते हैं। सीकर में एक कन्या



प्रतिनिधिगण

अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल महासभा का पहला अधिवेशन, वर्धा

पाठशाला भी आप की सहायता से चलती है। "शेखावाटी-शिक्षा-मंडल" की स्थापना भी आपके ही प्रयत्न से हुई; जो शेखावाटी की शिक्षा-संस्थाओं की सँभाल करता है और गाँवों में नये विद्यालय खोलता और खुलवाता है। ६-४-२१ को वर्धा में सत्याग्रहाश्रम की स्थापना हुई, जो साबरमती सत्याग्रहाश्रम की शाखा है। इस आश्रम का कुल खर्च आप ही चलाते हैं।

पढ़े-लिखे नवयुवकों में शिक्षा-विस्तार के लिये वर्धा से "राजस्थान-केसरी" नामक साप्ताहिक पत्र निकाला गया, जिसमें आपने पूरी सहायता दी थी। पर अब वह बन्द हो गया है।

मारवाड़ी-समाज में शिक्षा-सम्बन्धी जाग्रति फैलाने में आपने सब से अधिक उद्योग किया। बहुत से विद्यार्थी आपकी सहायता से शिक्षा पाकर आज अपनी जीविका चला रहे हैं और समाज में ज्ञान और सदाचार की वृद्धि कर रहे हैं।

मारवाड़ी अग्रवाल महासभा

बिना अच्छे सङ्गठन के समाज-सुधार में सफलता नहीं मिल सकती। सङ्गठन की आवश्यकता को जमनालाल जी बहुत पहले से अनुभ व कर रहे थे। पहले आपने शेखावाटी, दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई आदि स्थानों में सभा स्थापित करने का बड़ा प्रयत्न किया; पर शिक्षा में पिछड़े हुए समाज में ऐसे उत्साही बहुत कम मिले, जिनके हृदय में जमनालालजी की सी लगन होती और वे सहायक होते। अत-एव आपने वर्धा में "मारवाड़ी अग्रवाल महासभा" करने का आयोजन किया। महासभा का पहला अधिवेशन वर्धा में चैत्र सुदी १, सं० १६७६ में हुआ। आप स्वागत-समिति के सभापति चुने गये। इस महासभा में आप का भाषण बड़ा प्रभावशाली हुआ। इस अधिवेशन में कलकत्ता, बम्बई आदि नगरों के प्रायः सब गण्यमान्य मारवाड़ी सज्जन एकत्र थे। वर्धा में महासभा बड़ी सफलता से हुई।

वर्धा के बाद महासभा के अधिवेशन बम्बई, कलकत्ता, झरिया, इन्दौर, कानपुर, फतहपुर (जयपुर) में हुये। आठवां अधिवेशन दिल्ली में होने वाला है जिसके सभापति जमनालाल जी चुने गये हैं।

महासभा के द्वारा मारवाड़ी-समाज में बहुत सुधार हो रहा है। जो काम लोग अलग अलग करते, उसे सुसङ्गठित रूप में करने से अधिक प्रभाव पड़ता है। धीरे धीरे महासभा के प्रयत्न से मारवाड़ियों में अच्छे विचारों का प्रचार हो रहा है। कुरीतियाँ घटती जा रही हैं। फ़ज़ूलखर्ची भी पहले से कम होने लगी है। लोगों में मैत्रीभाव बढ़ रहा है और परस्पर की सहानुभूति पहले से कहीं अधिक हो गई है।

जमनालालजी महासभा के नियमों का पूरा पूरा पालन करते हैं। आप दो तीन वर्षों तक महासभा के जनरल सेक्रेटरी रहे। महासभा का दूसरा अधिवेशन बम्बई में हुआ। उस में भी आप को बड़ा परिश्रम करना पड़ा। बम्बई का अधिवेशन भी बड़ी सफलता के साथ हुआ। बम्बई के अधिवेशन में सब से महत्वपूर्ण काम यह हुआ कि एक "जातीय कोष" की स्थापना हुई, जिसमें जमनालालजी के उद्योग से लगभग ६ लाख रुपये के चंदे के वचन मिले। छः-सात लाख अब तक वसूल भी हो चुके हैं और उनसे जातीय उन्नति के काम हो रहे हैं।

महासभा का प्रभाव धीरे-धीरे परोक्ष में और प्रत्यक्ष भी मारवाड़ी-समाज पर पड़ रहा है। यहाँ मारवाड़ी-समाज में भक्ति और सदाचार के प्रचार करने वाले, गीता के प्रचारक श्रीयुत जयदयाल जी के एक पत्र से कुछ पंक्तियाँ मैं उद्धृत करता हूँ। जिनसे मालूम होगा कि धीरे धीरे सुधारों की व्यापकता बढ़ती जा रही है और महासभा का उद्देश सफल हो रहा है। यह पत्र श्रीयुत जयदयाल जी ने सेठ जमनालालजी को लिखा था। मुझे वह पत्र देखने को

मिल गया। सेठजी की स्वीकृति लेकर मैं उसकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत करता हूँ।

श्रीयुत जयदयालजी लिखते हैं—

"मेरे छोटे भाई का विवाह......होने की बात है। उक्त विवाह में बाह्य आडम्बर जहाँ तक हो सके, कम करने का ही विचार है।"

"भगवद्विषयक भजनों के सिवाय किसी नेग चार में स्त्रियों का गीत गायन करवाने का विचार नहीं है।"

"वर कन्या को वस्त्र हाथ से बुने हुये पहनाने का विचार है।"

"बागवाड़ी, बारूद, खेल, तमाशा इत्यादि किसी प्रकार का प्रमाद करने का विचार नहीं है।"

"पुरुषों के बीच में स्त्रियों द्वारा काजल घलवाना, बाल गुथवाना, स्तनपान करवाना इत्यादि रिवाजों को काम में लाने का विचार नहीं है।"

"शास्त्र-विधि से अतिरिक्त आधुनिक देव-पूजन की रिवाज को काम में लाने का विचार नहीं।"

"आप के बहुत से विचार मुझे अच्छे लगते हैं, जिनके विषय में आप के समक्ष भी मैं कई दफे अपनी सम्मति देते हुये प्रशंसा कर चुका हूँ।"

इन अवतरणों से यह स्पष्ट है कि श्रीयुत जयदयालजी सरीखे उन्नत मन के लोग सुधारों को धीरे धीरे आगे बढ़ाने में सहारा दे रहे हैं।

कष्ट का सामना

परम्परा से चली आई हुई रूढ़ियों को, चाहे वे कितनी ही हानि-कारक क्यों न हों, समाज सहज में नहीं छोड़ता। इस के लिए साधारण कष्ट उठाने की तो बात ही क्या, सुधारकों को कभी कभी अपने प्राण तक दे देने पड़ते हैं।

मारवाड़ी-समाज में फैली हुई कुरीतियों के विरुद्ध जमनालाल-

जी ने केवल अन्दोलन ही नहीं किया, बल्कि स्वयं कुरीतियों को त्याग करके दिखाया भी। इससे नवयुवकों के सामने एक आदर्श तो उपस्थित हुआ, पर रूढ़ि पर कट्टरता से चलनेवाले लोग मुक़ाबले को भी उतर आये। परिणाम जैसा हुआ करता है, वैसा ही हुआ। मारवाड़ी-समाज में दो दल हो गये। एक पुरानी रूढ़ियों को जीवित रखने की चेष्टा करनेवाला दल, दूसरा हानिकारक रूढ़ियों को समयानुकूल बनाने के लिये प्रयत्न करने वाला दल। जमनालालजी दूसरे दल के आदर्श नेता हैं। मारवाड़ी-समाज के प्रायः सब शिक्षित युवक इस दल में हैं। यह तो स्पष्ट है कि एक ही पीढ़ी बदलते-बदलते पुराना दल समाप्त हो जायगा। पर इस समय तो संघर्ष चल रहा है। जमनालालजी वाक्‌युद्ध करने के लिये या लड़ाई-झगड़े के लिये कभी मैदान में नहीं उतरते। आप चुपचाप काम करते हैं और अपमान तथा शारीरिक कष्ट मिले तो उसे भी चुपचाप सह लेते हैं। इसका प्रभाव समाज पर बहुत अच्छा पड़ता है और आप की सहनशीलता से आप के विचारों की सत्यता प्रमाणित होती है। आप के सद्‌व्यवहार और बड़ों के साथ विनय और सौजन्य की प्रशंसा तो आपके विरोधी भी करते हैं।

यहाँ दो घटनाओं का ज़िक्र किया जायगा, जिनसे आप के साथ सामाजिक संघर्ष का पता चलता है। पहली घटना सन् १९१२ या १३ की है। होली के अवसर पर हिन्दुओं में जैसा वीभत्स कार्य होता है, वह किसी हिन्दू से छिपा नहीं है। हरएक समझदार हिन्दू होली को सभ्यता के साथ मनाने के पक्ष में है। जमनालालजी ने होली के त्योंहार को अच्छी तरह से मनाने के लिये वर्धा में एक दिन पहले एक सभा की और लोगों को समझाया। दूसरे दिन कीर्तन-समाज निकाला गया। इससे पुराने विचार के लोग बिगड़ गये। उन्होंने मिट्टी-पत्थर फेंका। गालियाँ दीं। मारा-पीटा भी। पर कीर्तन-समाज के लोग चुप रहे। सामाजिक कार्यों में गवर्नमेंट का कुछ

सहारा न लिया जाय, इस सिद्धान्त को लक्ष्य में रखकर जमनालाल जी चुप रहे। अगले वर्ष फिर होली आई और पहले की तरह कीर्तन-समाज फिर निकाला गया। इस बार एक भी विरोधी सामने नहीं आया; बल्कि पहले के विरोधी भी साथ हो लिये। अब वहाँ होली का रूप ही बदल गया।

दूसरी घटना खान-पान और छुआछूत के सम्बन्ध की है। वर्धा में एक महेसरी भाई के यहाँ मृतक की जीमनवार के लिये पञ्चायत जमा हुई थी। उस पञ्चायत में जाजूजी को नहीं बुलाया गया था। वर्धा में अग्रवाल और महेसरी की पञ्चायत शामिल है। कुछ भाइयों ने जाजूजी के न बुलाये जाने का कारण पूछा तो जिसके यहाँ बिरादरी की जीमनवार होने वाली थी, उसने कहा कि कुछ महेसरी भाइयों ने कहा कि जाजूजी को बुलाओगे तो हम नहीं आवेंगे। इसी से हमने नहीं बुलाया। इस पर बहुत से लोगों ने कहा कि जब वे पञ्चायत में शामिल हैं तो उनको निकालने का अधिकार किसी को नहीं है। अतएव उन्हें बुलाना चाहिये। जब तक उनको न बुलाओगे तब तक पञ्चायत आगे न होगी। सब की राय से जमनालालजी को बुलाया गया। आप उस समय वर्धा ही में थे। आप गये। आप से सब हाल कहा गया। पूछे जाने पर जाजूजी के विरोधी महेसरी भाइयों ने कहा कि जाजूजी सत्याग्रहाश्रम में जाकर भोजन करते हैं, जहाँ भोजन के नियम हमारी प्रथा के अनुकूल नहीं और जहाँ छूत-अछूत का विचार नहीं होता। इसलिए हम उनको नहीं बुलाना चाहते। पर बात असल में यह मालूम होती थी कि कोलवार-प्रकरण के मामले में पञ्चायत के पाने पर हस्ताचर न करने के कारण से कुछ लोग रुष्ट थे। जमनालालजी ने कहा कि यदि आश्रम में खाना दोष है तो मैं तो स्वयं आश्रम में खाता हूँ। उन लोगों ने कहा—आप को तो हम बन्द नहीं कर सकते। जमनालाल-जी ने कहा—न्याय तो सब के साथ एक होना चाहिये। छोट बड़े

का ख़याल करके अन्याय करना तो ठीक नहीं। इस पर वहाँ पंचायत में दो तड़ होने की सम्भावना दिखाई पड़ने लगी। तब आपने कहा—जब तक यह निर्णय नहीं हो जायगा कि आश्रम में खाना अपराध नहीं, तब तक मैं पञ्चायती कामों में न किसी को जिमाऊँगा और न किसी के यहाँ जीमूँगा। व्यक्तिगत बात को लेकर आपस में फूट मत कीजिये और दलबन्दी न होने पावे।

इस बुद्धिमानी से आप ने वर्धा में दो दल होते-होते बचा लिया। वर्धा में आप के साथ खाने-खिलाने में शामिल होने वाले भाइयों की संख्या काफ़ी है। आप ज़रा भर भी ज़ोर देते तो वहाँ दो दल हो जाते। पर दलबन्दी से समाज की हानि न होने देने के लिए आप ने अपने ही ऊपर कुल ज़िम्मेदारी उठा ली। तब से आप किसी के यहाँ पञ्चायत के नाते जीमने नहीं जाते। पर किसी से द्वेष नहीं है। वर्धा में सब ब्राह्मण आप के यहाँ जीमने आते हैं। कई बार मित्रों ने आप को अपने यहाँ जिमाने के लिये आग्रह किया, पर आप ने कहा कि जब तक यह तै न हो जायगा कि आश्रम में खाने में दोष नहीं, तब तक मैं किसी के यहाँ जीमने न जाऊँगा। क्योंकि सम्भव है, किसी के मन में कुछ ख़याल पैदा हो।

उसी समय यह भी अफ़वाह उड़ी थी कि जमनालालजी को जातिच्युत कर दिया जायगा। पर इससे होता क्या? जमनालालजी के हृदय में मारवाड़ी-जाति के लिये इतना प्रेम और सेवा करने का इतना उत्साह है कि जातिच्युत होने का कष्ट क्या, आप उसके कल्याण के लिये मर तक सकते हैं। जातिच्युत किये जाने पर तो आप पहले से भी अधिक उत्साह से जाति-सेवा में तत्पर होते। क्योंकि आप को एक प्रमाण और मिल जाता कि समाज अभी कहाँ तक पिछड़ा हुआ है और उसमें सेवा की कितनी आवश्यकता है।

जमनालालजी की कोई बात, चाहे वह समाज की रूढ़ियों के

अनुकूल हो या प्रतिकूल, छिपी हुई नहीं है। आप खान-पान में छुआछूत नहीं मानते। मारवाड़ी-समाज में बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो खान-पान में जमनालालजी से भी अधिक स्वतन्त्र हैं। पर जो काम जमनालालजी प्रत्यक्ष करते हैं, उसको वे लुकछिप कर करते हैं। क्योंकि वे अपने काम को एक सामाजिक अपराध समझते हैं। जमनालालजी न अपने को छलना चाहते हैं, न समाज को धोखे में रखना चाहते हैं। जो काम आप समाज के लिए हितकारी समझते हैं, उसे प्रत्यक्ष करके दिखलाते हैं। यदि कुछ कष्ट भी उठाना पड़े तो आप उसे सहन भी कर सकते हैं।

ऐसे आदर्श नेता के लिये यदि मारवाड़ी-समाज अभिमान करे और श्रद्धा रक्खे तो यह तो स्वाभाविक ही है। इसमें आश्चर्य क्या है ?

सार्वजनिक जीवन

राजनीति में प्रवेश

प्रारम्भ में जमनालालजी की प्रवृत्ति केवल समाज-सेवा की ओर थी। यों तो योग्य पुरुषों से मिलने-जुलने का स्वभाव होने के कारण राजनीतिक पुरुषों से भी आप मिलते-जुलते रहते थे, पर उस समय यह कल्पना भी नहीं थी कि आप आज की तरह राजनीति में भाग लेंगे। राजनीतिक पुरुषों में सब से पहले दादाभाई नौरोजी से आपका परिचय हुआ। फिर मण्डाले की वापसी पर लोकमान्य तिलक से आप मिले। तिलक की विद्वत्ता पर आप मोहित थे।

महात्मा गाँधी को आप पहले ही से जानते थे। अफ्रीका-सम्बन्धी उनके समाचार वङ्गवासी, केसरी और हिन्दी-केसरी में आप पढ़ा करते थे। १९१५ में आप का महात्मा गाँधी से परिचय हुआ। महात्माजी ने साबरमती में आश्रम खोला था। आप उनसे मिलने के लिये कभी कभी आश्रम में जाया-आया करते थे। महात्माजी के सत्याचरण और विश्वप्रेम का आप के हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा। आश्रम में जाते-आते रहने से गांधीजी की ओर आप की भक्ति बढ़ चली। जैसा आप चाहते थे, कथन और कर्म की एकता आप को गांधीजी ही में देख पड़ी। सन् १९१५ में आप ने एक मोटर ख़रीद कर गाँधी जी के सुपुर्द की, जिससे मिलने-जुलने में सुविधा हो। मोटर हो जाने से अब आप गांधीजी से जल्दी जल्दी मिलने लगे। आप की विशुद्ध भक्ति और लोकसेवा की सच्ची रुचि देखकर गांधीजी भी आप की ओर आकर्षित हुए। सन् १९१७ की कांग्रेस कलकत्ते में थी। गांधीजी भी

कांग्रेस में गये थे और जमनालालजी के मेहमान थे। वहीं से जमनालाल जी का राजनीतिक जीवन में प्रवेश हुआ।

उस अवसर की एक घटना उल्लेख-योग्य है—

सन् १९१७ की ३१ दिसम्बर की रात थी। दूसरे दिन सबेरे गाँधीजी को लेकर जमनालालजी श्रीकृष्ण-गौशाला दिखाने जाने वाले थे। रात को १२ बजे बाबू भजनलालजी लोहिया का आदमी यह कहने आया कि "बाबू ने रायबहादुरी की बधाई भेजी है।" सबेरे गाँधीजी से रास्ते में चर्चा चली। गांधीजी ने पूछा—तुमको इतनी छोटी उम्र में रायबहादुरी कैसे मिल गई ? आपने उत्तर दिया—मैंने इसके लिये कुछ रुपये तो दिये नहीं। पहले छोटे अफ़सर कुछ ख़र्च करके कोई ख़िताब लेने की बात करते थे, मैं उनकी उपेक्षा कर देता था। शिक्षा-प्रचार आदि के कामों से और मेरे ठीक-ठीक बातचीत करने और सीधे व्यवहार से सी० पी० के चीफ़ कमिश्नर सर बेंजामिन राबर्टसन बहुत प्रसन्न हैं, संभव है, उनकी ही इच्छा से ऐसा हुआ हो। दूसरा कारण यह हो सकता है कि लड़ाई के शुरू में सरकारी वार-बांड कोई नहीं लेता था। मुझे नागपुर के कमिश्नर ने वार-बांड के लिये तार दिया तो मैंने ५००००) के वार-बांड ख़रीद लिये। इससे बम्बई के व्यापारी-मंडल पर बहुत प्रभाव पड़ा और सरकार प्रसन्न हुई। संभव है, इसी कारण से मुझे रायबहादुरी मिली हो। मैं स्वीकार करूँ या नहीं, इसके लिये आपकी क्या आज्ञा है ? गांधीजी ने कहा—देश-सेवा में इससे कुछ लाभ हो सके तो उठाओ। जब हानि होते देखना तब छोड़ देना।

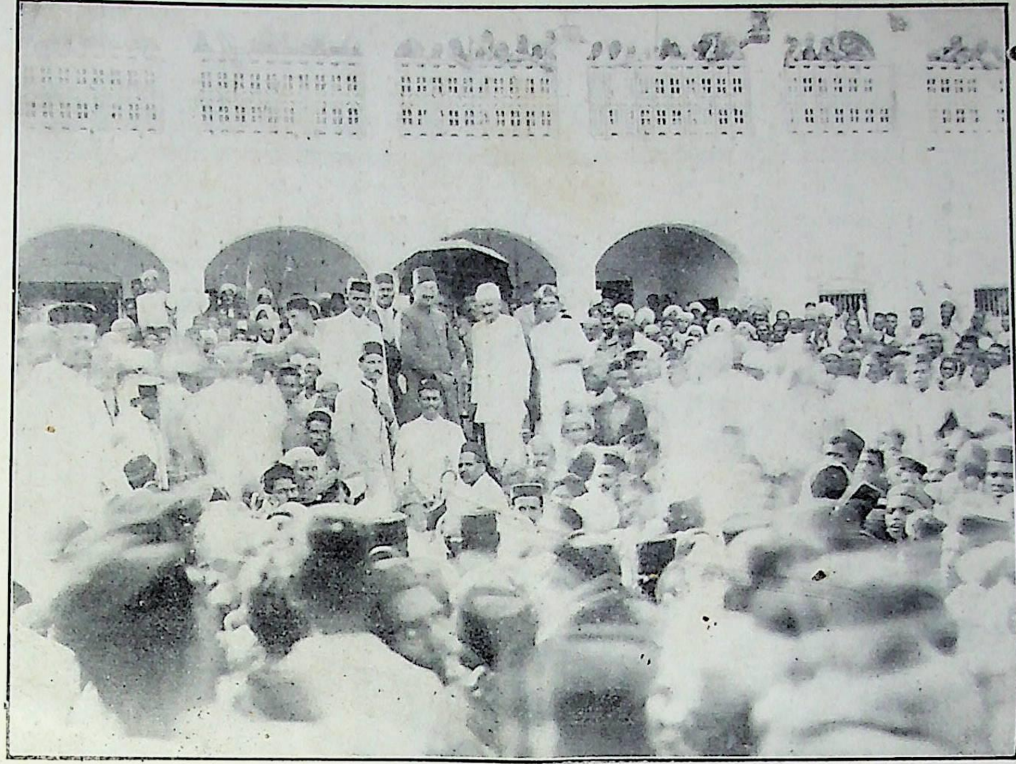
सरकार से सम्बन्ध रखने में जमनालालजी का मन पहले से ही ऊब गया था। जैसा कि आगे लिखी घटनाओं से मालूम होता है—

सरकार से विरक्ति क्यों हुई ?

पहले कहा जा चुका है कि सेठ बच्छराजजी की पहुँच वर्धा और नागपुर के सरकारी अफ़सरों में काफ़ी थी। वे रायबहादुर थे। आनरेरी

मजिस्ट्रेट थे। गवर्नर उनके यहाँ निमंत्रित होते थे । कमिश्नर कलक्टर का तो कहना ही क्या ? उनकी मृत्यु के बाद जमनालालजी घर के मालिक हुये। सरकार ने आपको भी सन् १९०८ में आनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया और १९१८ में रायबहादुर। सरकार के साथ आपका सम्बन्ध पहले से भी अधिक घनिष्ठ हो गया। वर्धा के कलक्टर और नागपुर के कमिश्नर ही नहीं, मध्यप्रदेश के गवर्नर सर रेजिनाल्ड क्रैडक, सर बेंजामिन राबर्टसन, सर फ्रैंक स्लाई तक आपके मेहमान होते थे और मित्रता का व्यवहार करते थे। सर बेंजामिन राबर्टसन आपको बहुत चाहते थे। सरकार के छोटे मोटे अफ़सरों में आप की काफ़ी धाक रहती थी। सरकार भी आपको अपना आदमी समझती थी। पर आपके हृदय में जो स्वदेशप्रेम की आग प्रज्वलित थी, उसे सरकार बुझा न सकी; बल्कि अपनी कार्यवाहियों से उसने उसे और भड़का दिया।

समय-समय पर सरकारी अफ़सरों और जमनालालजी के बीच जैसी घटनाएँ घटती रहीं, वैसी बल्कि कभी-कभी उससे भी अधिक अपमान-जनक घटनायें अँग्रेज़ी राज्य में कितने ही धनियों, ज़मींदारों, राय बहादुरों, आनरेरी मजिस्ट्रेटों, यहाँ तक कि राजाओं के साथ भी प्रायः होती रहती हैं; पर वे लोग चुपचाप विष का सा घूँट पीकर रह जाते हैं। किसी साधारण स्वार्थ के लिये अपमान सह लेते हैं, और सरकार के प्रति पहले से भी अधिक झूठा प्रेम प्रकट करने लगते हैं। जमनालालजी जैसा आत्मतेज बहुत कम आदमियों में देखा जाता है, जो अपमान को अपमान समझते हों, अन्याय को अत्याचार समझते हों और उसका विरोध करते हों और यदि विरोध पर सुधार न हों तो ऐसी सरकार का साथ त्याग देते हों। अपमानित होकर भी जो चुप रह जाते हैं, ऐसे कायरों से तो आज देश भरा पड़ा है। जमनालालजी की आत्मा सरकारी अपमान सहन न कर सकी और उसने सरकार से पाये हुये सम्मानों को तुच्छ समझा और उसे छोड़ दिया। जमनालाल-जी के हृदय की व्यथा जो इस जीवनी में प्रकट की जा रही है, उससे



वर्धा में सेठजी के मकान के कम्पाउन्ड में महात्मा गाँधीजी

सरकार भी यह जान सकती है कि किस तरह उसने अपना एक आदमी अपनी ही लापरवाही से खो दिया।

सरकारी सम्मान त्याग कर जमनालालजी ने देश में वह सम्मान प्राप्त किया है जो सरकार को भी दुर्लभ है। वास्तव में सम्मान सरकार की कृपा में नहीं है, बल्कि मनुष्य के आत्माभिमान में है।

मेरे यह प्रश्न करने पर कि "सरकार से आपकी विरक्ति कैसे हुई ?" जमनालालजी ने कुछ घटनाओं का वर्णन किया, जो उन्हीं के शब्दों में यहाँ ज्यों की त्यों लिखी जाती हैं—

"जब मैं छोटा था, तब की एक घटना मुझे याद है। यह घटना पूज्य बच्छराजजी के समय में हुई थी। लगभग २०-२१ वर्ष हुये होंगे। मेरा एक गाँव था। उस गाँव में वसूल तहसील के लिए हमारे नौकर रहा करते थे। एक बार आर्वी से बैलगाड़ी पर सरकारी ख़ज़ाना आया। ख़ज़ाने के साथ पुलिस का एक दल था, जिसमें शायद पाँच सिपाही और एक जमादार था। उन लोगों ने मेरे गाँव में निवास किया। मेरे आदमियों ने उनको खाने पीने की काफ़ी चीजें मुफ़्त दे दीं। पर उनके इच्छानुसार दूध या घी वे न दे सके। इस पर उन सिपाहियों ने मेरे आदमी को इतना मारा कि वह गाड़ी पर लाद कर लाया गया और कई महीने तक उसका इलाज हुआ, तब वह जिया। उस समय के अफ़सरों में पूज्य बच्छराजजी का बड़ा प्रभाव था। वे आनरेरी मजिस्ट्रेट भी थे। उन्होंने कलक्टर, कमिश्नर और अन्य अधिकारियों से मिल कर भरसक कोशिश की, पर कुछ सुनवाई न हुई। मानरक्षा के लिए बहुत दौड़धूप करने पर केवल एक सिपाही की बदली की गई। कई जगह अफ़सरों ने उन्हें धता भी बता दिया था। उस समय के अफ़सरों की नीति यह थी कि मातहत अफ़सरों की शिकायत वे सुनना पसंद नहीं करते थे। और जाँच-पड़ताल की तो बात ही क्या, उलटे शिकायत करने वाले से बैर बाँधते थे, और कोई न कोई अड़ंगा लगाकर तंग करते थे। वैसी घटना आज हो तो सब सिपाहियों को सज़ा मिल

जाय; क्योंकि लोकमत पहले की अपेक्षा अब अधिक जाग्रत है। यद्यपि मैं छोटा था, पर मान-अपमान समझता था और उस समय उन सिपाहियों को दंड न मिलना मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ था।

(२)

पहली घटना के आस पास की एक घटना और है, उसका भी प्रभाव मेरे मन पर बुरा पड़ा था, और वह अब तक याद है। मेरी दूकान में एक मुनीम थे। एक बार उनके एक कुटुम्बी के घर में आग लगी। वे बुझाने गये। घर में जहां कुछ क़ीमती चीज़ें रक्खी थीं, वहीं वे उन्हें हटाने और रखने में लगे थे। इतने में पुलिस पहुँची। पुलिस ने उनको निकल जाने को कहा। उन्होंने उस समय वहां से हटना उचित न समझा। इस पर पुलिस ने उनको इतना मारा कि वे खाट पर उठाकर घर तक पहुँचाये गये। पुलिस ने उन्हें खाट पर रखकर एक जलूस निकाला था, और घर तक पहुँचाया था। पू० बच्छराज जी का प्रभाव सरकार में अच्छा था। उन्होंने इस पर कार्यवाही करनी चाही। पर पुलिस ने धमकाया कि इस पर चूँ करोगे तो उलटे तुम पर पुलिस के काम में दस्तंदाज़ी करने का केस चलायेंगे। उस समय की हालत देखते हुए, कि पुलीस के ख़िलाफ़ कुछ चलेगी नहीं, सेठ जी चुप हो गये। पर उन्हें आन्तरिक दुःख हुआ। उन्होंने ख़ानगी तौर पर बहुत कोशिशें की, पर कुछ परिणाम न हुआ। मेरे मन पर इसका बहुत असर पड़ा और मैं तभी से अनुभव करने लगा कि सरकारी आदमी बड़े क्रूर होते हैं।

(३)

एक घटना मेरे सामने की है। मेरे बग़ीचे के एक नौकर ने बाग़ में चोरी की थी। वह पकड़ कर लाया गया। दूकान पर उसे डराया धमकाया गया तो उसने चोरी क़बूल कर ली और वह छोड़ दिया गया। इस घटना के कई दिन बाद वह जंगल के एक कुएँ में गिर कर मर गया। पता नहीं, वह फ़िसल कर कुएँ में जा पड़ा या

किसी घराऊ कष्ट से उसने आत्महत्या की। पुलिस सब इन्स्पेक्टर ने जाँच की। जांच करते समय उसे मेरे बग़ीचे की घटना भी मालूम हुई। उसने मुझे जंगल में बुलवाया। मैं गया। कुछ इधर-उधर की बातों के बाद उसने एहसान जनाते हुये कहा—इस मामले में मैं आप पर कोई आंच न आने दूँगा। आप पर कोई मुक़दमा न चलने पायेगा। मुझे उसका एहसान जताना बहुत बुरा मालूम हुआ। मैं ने समझा कि ये लोग बिना किसी अपराध के भी आदमी को हैरान कर सकते हैं। उसका यही एहसान मुझ पर था कि उसने मेरे साथ एक अन्याय नहीं किया। तभी से मुझे सरकारी आदमियों से घृणा होने लग गई थी।

(४)

सन् १९०९ या उसी के आसपास की बात है। वर्धा के D.S.P मिस्टर कवेंट्री का तबादला हुआ। मेरा उनसे प्रेम था। मैंने उन्हें पान-सुपारी के लिये अपने यहां बुलाया था। मिस्टर कवेंट्री को समय कम था, इससे उन्होंने केवल मेरे प्रेम का ख़याल करके, कमसे कम समय देना स्वीकार किया था। इसी जल्दी में मैं उनके साथ सर्किल इन्स्पेक्टरों को नहीं बुला सका था। हम लोग मिस्टर कवेंट्री को पहुँचाने गये थे। सर्किल इन्स्पेक्टर भी साथ थे। मिस्टर कवेंट्री के चले जाने पर उन्होंने मेरे इस अपराध पर कि मैंने मिस्टर कवेंट्री के साथ उन्हें नहीं बुलाया था, मुझे बड़ी ही अश्लील गालियां दीं और बड़ी असभ्य भाषा में धमकाते हुये कहा—तू बनिया है। तुझे घमंड हो गया है। तू हम लोगों की ताक़त नहीं जानता। हम तुझे बहुत तंग करेंगे। वे अपनी बातों से बार बार यह ज़ाहिर करते थे कि किसी की इज्ज़त बनाना या बिगाड़ना उन्हीं के हाथ में है, चाहे वह अपराध करे या न करे। उनके इस व्यवहार से मुझे हार्दिक चोट पहुँची। उस दिन की घटना मैं भूल नहीं सका। मुझे उसकी बार बार याद आती है। तब से मैंने समझा कि किस तरह सरकार के

छोटे छोटे अफ़सर लोगों को तंग किया करते हैं। मैंने उस समय ईश्वर से प्रार्थना की थी कि 'हे भगवान्, शीघ्र इस राजसत्ता को कमज़ोर करो, जिससे मनुष्यों की इज़्ज़त बचे। जब मेरे साथ, जिसके पास इनसे भी बड़े बड़े नौकर हैं, इनका यह व्यवहार है तो साधारण ग़रीब आदमियों की ये जो चाहें, दुर्दशा कर सकते हैं। मुझे उन सर्किल इन्स्पेक्टरों के नाम याद हैं। उनमें से कई मर गये हैं और कई रिटायर्ड हो गये हैं। इस घटना के समय मैं आनरेरी मजिस्ट्रेट था। उन पर कोई कार्यवाही करना मैं ने निरर्थक समझा। क्योंकि इसके पहले की दो तीन घटनाओं में मैं सरकारी न्याय का नमूना देख चुका था। उसी दिन से मेरा दृष्टिविन्दु सरकार की ओर से फिर गया और मुझे इस प्रकार के सरकारी कर्मचारियों से अधिक अरुचि हो गई।

(५)

मैं जब आनरेरी मजिस्ट्रेट था, तब प्रायः दफ़ा ३४ के ही मुक़दमे मेरे पास अधिक आते थे। उस में भी मामूली मारपीट और शराबियों के ही मुक़दमे ज़्यादा आते थे। एक बार शराबख़ोरी में सज़ा पाये हुये लोग जब दुबारा तिबारा आते थे, तब तो मैं उनको सज़ा भी पहले से कड़ी दिया करता था। मेरे साथ एक आनरेरी मजिस्ट्रेट और बैठा करते थे। फ़ैसला मैं ही लिखा करता था। वे मुझपर पूरा विश्वास रखते थे और मेरे लिखे फ़ैसले पर हस्ताक्षर कर दिया करते थे। एक बार कलक्टर ने यह शिकायत लिखकर भेजी कि "तुम शराबियों को बड़ी कड़ी सजायें देते हो"। यद्यपि मैंने उसकी कुछ परवा न की और जैसा करता था, वैसा ही करता रहा। पर मुझे सरकार की नीयत का पता चल गया, कि वह शराबख़ोरी को एक हद तक क़ायम रखना चाहती है। इस घटना से मुझे सरकार की नीयत पर घृणा होने लगी थी।

(६)

एक बार मैं एक D. S. P. से मिलने गया था। बातचीत

में लोकमान्य के विलायत जाने की चर्चा चली। D. S. P. ने कहा—अच्छा हो, यह जहाज़ डूब जाय। मुझे उसकी यह बात बहुत बुरी लगी। मुझे क्रोध हो आया। मैंने कहा—जहाज डूब जायगा तो उसमें आप के भाई बहुत से अँग्रेज़ भी तो डूब जायँगे। मैं उसके पास से चला तो आया, पर मेरा मन बार-बार उसकी बात पर चला जाता था। उसकी बात से मेरे दिल पर कड़ी चोट पहुँची थी। मैं सोचता था कि देखो, देश की सेवा करने वालों के प्रति इनके भाव कैसे घृणित होते हैं। इस प्रकार की बातों से सरकार के प्रति मेरी विरक्ति बढ़ती गई। उन दिनों कुछ लोग ऐसे भी थे जो पबलिक में तो सरकार के विरुद्ध लेकचर दे आते थे, पर सरकारी अफ़सरों के सामने, उनको खुश करने के लिये, या वे नाराज़ हों तो उनकी नाराज़ी मिटाने के लिये, देश-सेवकों के विरुद्ध ऐसी बातें कहा करते थे जो प्रायः झूठी होती थीं। उस समय ऐसे भी लोग थे जो उस D. S. P. की बात सुनकर प्रसन्नता से कहते कि "ईश्वर करे, ऐसा ही हो।"

(७)

सन् १९१८ में जो घटना हुई, उससे तो सरकार के प्रति मेरी रही-सही श्रद्धा भी जाती रही। नागपुर के कमिश्नर मिस्टर मास्किंग ने वर्धा के कलक्टर के द्वारा मुझसे मिलने की कई बार इच्छा प्रकट की। मैं प्रायः बम्बई या भ्रमण में रहा करता था। इससे मिलना नहीं हो सका। कुछ अवकाश मिलते ही मैं सन् १९१८ में उनसे नागपुर में मिला। उस समय उनके सामने मेज़ पर एक बड़ी फ़ाइल रक्खी थी। संभवतः मेरे सम्बन्ध में सी० आई० डी० की रिपोर्ट थी। उस समय साधारण शिष्टाचार की बातों के बाद मुख्य विषय की जो बातें हुईं, अब न तो उनका क्रम ही मुझे स्मरण है, न शब्द ही। हां, भाव ज्यों के त्यों स्मरण हैं।

कमिश्नर ने मुझसे पूछा—आप गांधी जी के पास जाया करते हैं ?

मैं—जी हां ।

कमिश्नर—क्या आप के यहां मिसेज नायडू, नेकीराम शर्मा, देवीप्रसाद खेतान आदि राजनीतिक कार्यकर्ता ठहरा करते हैं ?

मैं—जी हां ।

कमिश्नर—आपको मालूम होगा कि गवर्नमेंट आपको बहुत मान की दृष्टि से देखती है और गवर्नमेंट में आप का मान बहुत है ।

मैं—जी हां ।

कमिश्नर—आप पर ज्यादा जवाबदारी है ।

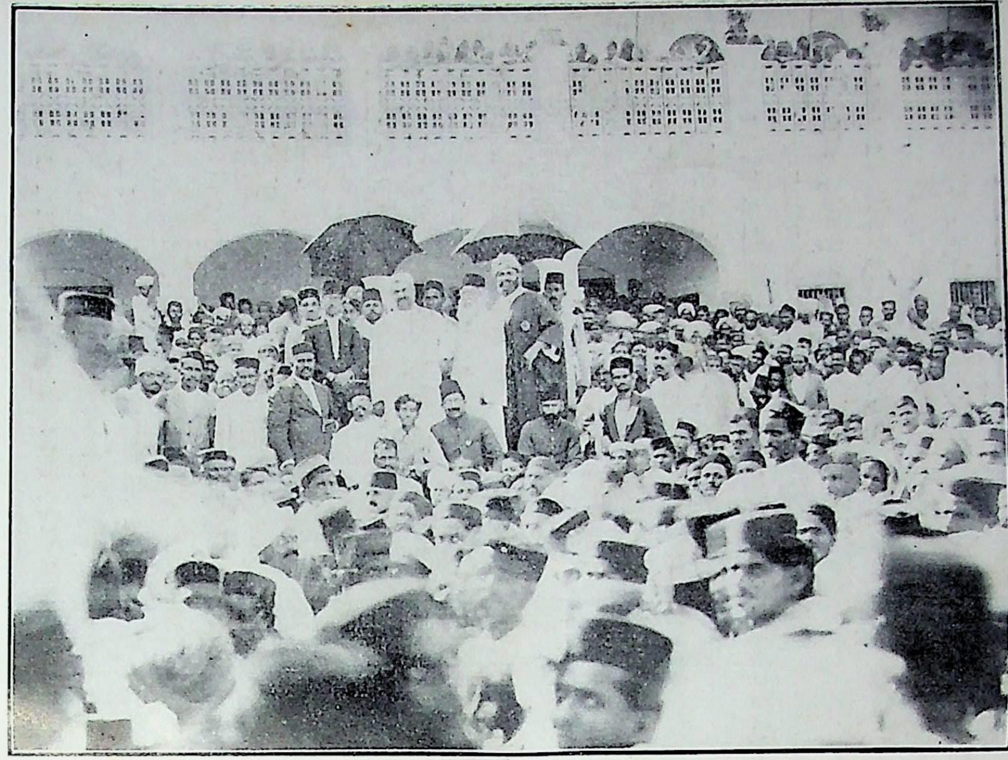
मैं—यह ठीक है । पर जो लोग मेरे यहां ठहरते हैं, उनके राजनीतिक विचारों से मेरा कोई ख़ास सम्बंध नहीं है । मेरे विचारों के बारे में आपके पास कोई रिपोर्ट हो तो आप मुझसे उसका जवाब मांग सकते हैं । मैं उसका खुलासा कर सकता हूँ । पर राजनीतिक मतभेद रखते हुये भी मैं अपने मित्रों से या अपनी समझ के अनुसार जो देश-सेवा करते हैं उनसे, सम्बंध न रक्खूँ, न मिलूँ या अपने यहाँ ठहरने न दूँ, यदि सरकार की यह मंशा हो तो यह बहुत अधिक है । इसका पालन करना किसी भी मनुष्य के लिये, जो अपने को मनुष्य समझता हो, असंभव है ।

कमिश्नर—आप गाँधीजी के यहां जाया करते हैं ?

मैं—हां, मैं उनके पास जाया करता हूँ । उनके प्रति मेरा बहुत पूज्य भाव है ।

कमिश्नर—आप गांधीजी के पास जाते हैं, या राजनीतिक लोग आपके पास ठहरते हैं इससे आप पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता । आप तो समझदार आदमी हैं । पर दूसरे लोगों पर इस का बुरा प्रभाव पड़ना संभव है । इसलिये आपको विशेष सावधानी से काम लेना चाहिये । इन लोगों से संबंध छोड़ देना चाहिये

मैं—मेरे पूर्व परिचित लोग, चाहे वे किसी विचार के क्यों न



वर्धा में सेठजी के मकान के कम्पाउंड में मौ० शौकतअली आदि नेतागण

हां, मेरे यहाँ आवेंगे तो उनका आतिथ्य करना मेरा धर्म है। मैं उन्हें रोक नहीं सकता। गाँधीजी के प्रति मेरा पूज्य भाव है। मैं उनसे संबंध नहीं छोड़ सकता।

कमिश्नर—(बहुत क्रोध के आवेश में) तो आपके विद्यालय की नई इमारत का उद्घाटन चीफ़ कमिश्नर नहीं करेंगे।

सर बेंजमिन राबर्टसन उन दिनों चीफ़ कमिश्नर थे। मारवाड़ी विद्यालय की नई इमारत का उद्घाटन उन्हीं के हाथों से होना निश्चित हो चुका था। कमिश्नर की बातों से मालूम हुआ कि चीफ़ कमिश्नर केवल मेरे कारण से विद्यालय की नई इमारत का उद्घाटन न करेंगे। मैं चीफ़ कमिश्नर से खूब परिचित था। विद्यालय की संस्था से उनका प्रेम भी बहुत था। मैं ने कमिश्नर को उत्तर दिया—

विद्यालय की कमेटी की इच्छा चीफ़ कमिश्नर के हाथ से उद्घाटन कराने की है। यदि वे नहीं करना चाहते तो उनकी खुशी की बात है। मैं क्या कर सकता हूँ।

इसपर कमिश्नर ने मारे क्रोध के टेबुल पर ज़ोर से हाथ पटक कर कहा—

आपको सरकार की ओर से रायबहादुरी मिलने के बादही से आपने इन लोगों से मिलना-जुलना शुरू किया है।

मैं ने कमिश्नर का यह भाव समझा कि पहले तो मैं ने सरकार से रायबहादुरी लेली। अब इधर पबलिक में नाम कमाने की इच्छा से राजनीतिक क्षेत्र में जा पहुँचा। मैंने उत्तर दिया—

मैं ने तो रायबहादुरी के लिये सरकार से कभी कहा नहीं। न किसी से कोशिश ही कराई। आपका यह समझना कि रायबहादुरी मिलने के बाद मेरा सम्बंध इन लोगों से हुआ, बिल्कुल ग़लत है। मेरा इन लोगों से बहुत पुराना सम्बंध है। यदि आपकी सी० आई० डी० वालों ने पहले इस बात की रिपोर्ट न की हो तो यह आपके डिपार्टमेंट की भूल है। आप जानना चाहें तो मैं अपने काग़ज़ पत्रों

से यह साबित कर सकता हूँ कि इन लोगों से मेरा सम्बंध रायबहादुरी मिलने से बहुत पहले का है।

कमिश्नर—अच्छा, आप कलक्टर से मिलकर समझौता कर लीजिये।

मैं—इस में समझौते की तो कोई बात नहीं मालूम होती। जो लोग मेरे यहाँ ठहरते आये हैं, वे फिर भी ठहर सकेंगे। जब कितने ही सरकारी अफ़सर, जिनको मैं जानता हूँ कि उनमें कइयों के आचरण ठीक नहीं हैं, और जिनके लिये मेरे मन में ज़रा भर भी प्रेम नहीं है, मेरे घर पर ठहरते हैं और मुझको उनसे सम्बंध रखना पड़ता है, तो जो लोग देश की सेवा करते हैं और जिनका चरित्र ठीक है, केवल राजनीतिक मतभेद होने पर मैं उन्हें अपने यहाँ न ठहरने दूँ, या उनसे सम्बंध न रक्खूँ, इसका कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता। यदि वास्तव में सरकार की इच्छा ऐसी है तो वह बहुत अधिक है।

मैं यह कहकर बाहर चला आया। श्री जाजूजी बाहर मौजूद थे। वे अपने किसी अन्य काम से कमिश्नर से मिलने गये थे। मैं ने उनसे सब हाल कहा। इस घटना का मेरे मन पर बहुत प्रभाव पड़ा कि किसतरह सरकारी आदमियों का बर्ताव होता है और वे क्या चाहते हैं।"

जमनालालजी का कमिश्नर से यह वार्तालाप साधारण कोटि का नहीं है। धनी, ज़मींदार, आनरेरी मजिस्ट्रेट, रायबहादुर, होकर एक अँगरेज़ कमिश्नर के साथ खुली हुई बातें करना असाधारण साहस का काम है। इस बात से यह रहस्य भी खुलता है कि सरकार किस तरह लोगों को दबा रखना चाहती है। कमिश्नर तो सरकार के लिये अपना कर्तव्य पालन कर रहे थे। पर जमनालालजी ने जो कुछ कहा, उससे उनका आत्मगौरव, विचार की दृढ़ता और स्पष्टवादिता प्रमाणित होती है। इस तरह निर्भयता के साथ न्याय-पक्ष के समर्थन

करने का साहस इस देश के कितने धनियों में है ? और एक मारवाड़ी में इतना आत्माभिमान होना तो और भी आश्चर्यजनक है !

इस प्रकार सरकारी मायाजाल से जमनालालजी ने अपने को मुक्त कर लिया।

कांग्रेस में प्रवेश

जमनालालजी का कांग्रेस में प्रवेश तो कलकत्ता-कांग्रेस से ही हो गया था। पर १९२० तक आपने उसमें कोई विशेष भाग नहीं लिया था। १९२० की कांग्रेस नागपुर में हुई। उस समय आप कांग्रेस की स्वागत-कारिणी के सभापति चुने गये। कांग्रेस की स्वागतकारिणी के सभापति का पद उसी को मिलता है जो उस प्रांत का, जिसमें कांग्रेस होती है, नेता होता है। कांग्रेस में आते ही जमनालालजी ने राजनीतिक क्षेत्र में भी अपनी तत्परता और प्रतिभा से इतने बड़े स्थान पर अधिकार जमा लिया। स्वागतकारिणी के सभापति की हैसियत से आपने जो भाषण दिया था, वह बहुत ही पसंद किया गया था। इस कांग्रेस में आप लगातार बीस बीस घंटे जागकर प्रतिनिधियों की सेवा करते रहते थे। आपके सुप्रबंध से नागपुर की कांग्रेस बड़ी सफलता से हुई।

इसी कांग्रेस में आप कांग्रेस के खज़ांची मुक़र्रर हुये। और अभी तक हैं। कई वर्षों से आप यह पद छोड़ने को आतुर हैं। पर जनता छोड़ती ही नहीं।

कांग्रेस में आप सी० पी० प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सभापति और खादीबोर्ड के सभापति भी रह चुके हैं। इस समय वर्किंङ्ग कमेटी के मेम्बर हैं।

कांग्रेस के नेतागण आपके प्रति कैसा भाव रखते हैं, यह जानने के लिये मैं यहाँ विहार के प्रसिद्ध नेता, कांग्रेस की वर्किंङ्ग कमेटी के मेम्बर और भूतपूर्व जेनरल सेक्रेटरी श्रीयुत राजेन्द्र बाबू का एक पत्र

प्रकाशित करता हूँ। यह पत्र राजेन्द्र बाबू ने जमनालालजी के सम्बन्ध में पूछे हुए एक प्रश्न के उत्तर में मुझे लिखा है। इससे इस जीवन-चरित के पाठकों को मालूम हो जायगा कि जमनालालजी ने राजनीतिक क्षेत्र में भी कहाँ तक ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया है। राजेन्द्र बाबू लिखते हैं—

मेरी पहली भेटं सेठ जमनालाल बजाजजी से कलकत्ते में १९१७ ईस्वी की कांग्रेस के समय में हुई थी। जब उन्होंने महात्मा गांधी जी के आतिथ्य का भार स्वीकार किया था और मैं महात्मा जी के साथ ही चम्पारन से कांग्रेस में गया था। दूसरी भेंट बम्बई में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर हुई। पर ये दोनों अवसर ऐसे थे कि विशेष कुछ परिचय नहीं हुआ। सच्ची भेंट असहयोग-आन्दोलना के बाद ही हुई और गत पांच वर्षों में हमारा उनका परिचय दिनोंदिन घनिष्ट होता गया है।

सेठ जी की दानशीलता और उदारता को सभी देश जानता है। पर उनके दूसरे गुणों को वही जान सकते हैं जिनका उनके साथ अधिक व्यवहार रहा है। मेरा विचार है कि महात्मा गांधीजी के सिद्धान्तों को उन्होंने केवल समझा ही नहीं है, पर अपने जीवन में—प्रतिदिन की दिनचर्य्या में—इस प्रकार से स्वीकार कर लिया है और वर्तना आरम्भ कर दिया है जैसा वर्तने वाले देश में आश्रम के बाहर शायद ही दो चार मिलें। यद्यपि आधुनिक रीति की शिक्षा उनकी उच्चकोटि नहीं है, पर बुद्धि तीव्र होने के कारण उन सिद्धान्तों के तत्त्व को वह खूब ही समझ गये हैं और कहीं कहीं तो जब कोई प्रश्न छिड़ जाता है तो बहुत ही सूक्ष्म रीति से उनकी विवेचना करते हैं। इसका विशेष कारण है उन सिद्धान्तों के अनुसार अपने जीवन को बनाने की चेष्टा। मैं समझता हूँ कि जब वह किसी बात को कहना चाहते हैं अथवा किसी काम को करना चाहते हैं तो उस विषय को उन सिद्धान्तों की कसौटी पर पहले जाँच लेने का प्रयत्न करते हैं। उन सिद्धान्तों के मूलतत्त्व

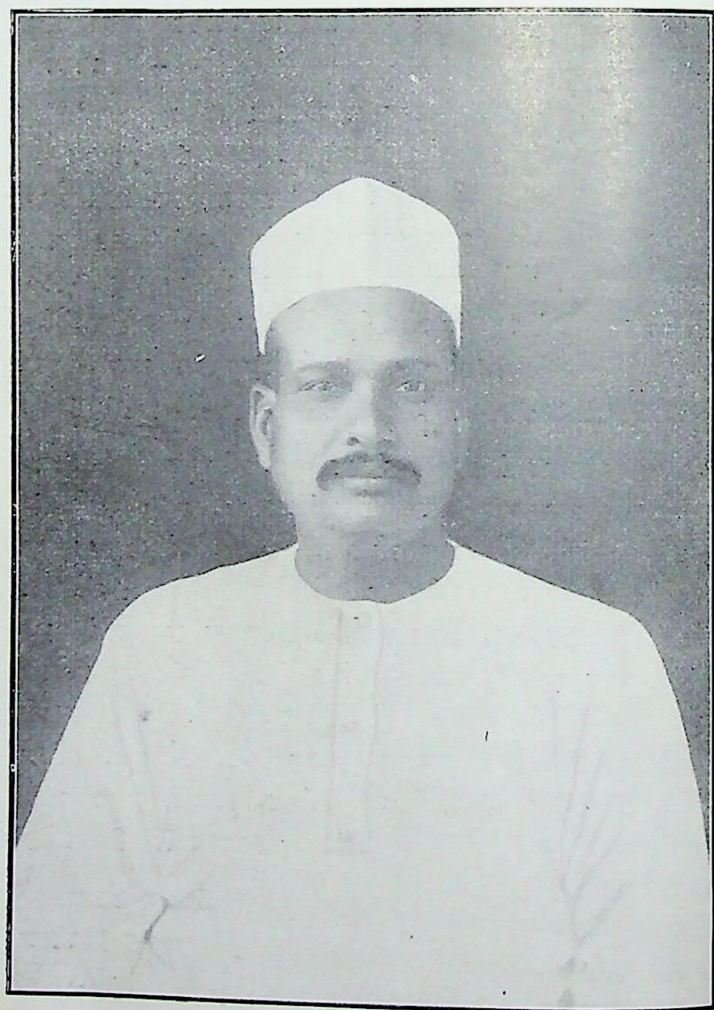
सत्य और अहिंसा हैं। इसलिये सेठजी जो समझते हैं उसे कह देने में कभी भी नहीं हिचकते। मैं जानता हूँ कि इसी निर्भीकता के कारण कितने ही सज्जन उनसे बहुत रञ्ज हो जाते हैं। यद्यपि सेठजी के हृदय में यह बात नहीं आती कि अपने बचनों द्वारा वह किसी को दुख पहुँचावें। पर जो उनके उस भाव को नहीं समझते हैं वह अप्रिय सत्य के लिए बिगड़ जाते हैं। पर जो उस भाव को समझते हैं और उनके स्वच्छ हृदय को जानते हैं उनका दूसरा विचार नहीं हो सकता है। मैंने कई बार देखा है कि किसी विषय के विवेचन में वह महात्मा जी की भी कड़ी, पर विनयपूर्ण समालोचना करते हैं और कमिटियों में उनके जैसा स्पष्ट वक्ता कम आदमी हैं। वह कुशल व्यवहारिक पुरुष हैं। इसलिए जब कोई बात सामने आती है और विशेष कर जब उसका किसी सार्वजनिक संस्था के कोष और धन के साथ सम्बन्ध रहता है तो उसकी बहुत छान-बीन करते हैं। उनका विचार है कि जन-साधारण से जो धन इकट्ठा किया जाता है उसका सदुपयोग होना चाहिए और हिसाब-किताब के मामले में वह बहुत ही सख़्त हैं। उनको लाखों दान देने में संकोच नहीं होता। पर एक पैसे का भी नुकसान बर्दाश्त के बाहर हो जाता है। कमिटी, सभा सोसाइटी के नियमों के वह बहुत पाबन्द हैं और यद्यपि वह सरकारी अनुचित आज्ञाओं की भद्र अवज्ञा करके जेहलखाने जाने में नहीं डरते, पर जिस संस्था के वह सदस्य हैं उसके छोटे से छोटे नियम की अवहेलना न वह स्वयं करना चाहते हैं और न दूसरों द्वारा होने देना उचित समझते हैं। जिस काम को वह स्वयं भलीभाँति नहीं कर सकते हैं उसमें हस्तक्षेप करना अथवा उसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेना वह पसन्द नहीं करते हैं। पर जिस काम में वह पड़ते हैं उसके लिए जी-जान से प्रयत्न करते हैं और अपनी कार्य्य-कुशलता के कारण सफलता भी प्राप्त करते हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि वह दलितोद्धार के बड़े पक्षपाती और खद्दर के बड़े भक्त हैं। वर्धा में

अछूतों के लिए उन्होंने पाठशाला खोल रखी थी, जिसमें प्रायः स्वयं जाया करते थे और उनके साथ मिला करते थे। भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आये हुए कार्य्यकर्त्ताओं के आतिथ्य-सत्कार में उनका जी बहुत लगता है और एक दो मुलाकात के बाद उनके प्रेम और सत्कार के बन्धन से, यद्यपि उनमें कृत्रिमता कुछ भी नहीं है, सभी फँस जाते हैं। चाहे जहाँ कहीं अखिल भारतीय महासमिति की बैठक क्यों न हो, सेठ जी का डेरा बहुतों का अड्डा रहता है। यहाँ तक कि जब गत दिसम्बर में पटने में भी बैठक थी तौ भी एक शाम मैंने सेठजी के यहाँ ही ब्यालू किया था। उनके द्वारा कितने लोगों को गुप्त रीति से सहायता मिलती है, इसका हिसाब नहीं दे सकते हैं; क्योंकि यह दूसरों को मालूम नहीं है। कितने मित्रों को उनकी मुसीबत के समय उन्होंने सहायता दी है, यह भी ऐसे मित्र अथवा वह स्वयं ही कह सकते हैं। वह सच्चे त्यागी, स्पष्टवादी, कार्य्यकुशल व्यक्ति हैं, जिसकी सेवा, त्याग और कार्य्यदक्षता को देश उत्तरोत्तर देखता और और पहचानता जायगा और जो समय आने पर बड़ा से बड़ा त्याग भी करने में संकोच नहीं करेंगे।

राजेन्द्रप्रसाद

सरकार से सम्बन्ध-विच्छेद

असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होने पर जमनालालजी का सरकार से सम्बन्ध-विच्छेद करना अनिवार्य हो गया। यह समय जमनालालजी की सी स्थिति वालों के लिए कड़ी परीक्षा का था। भारत की प्रबल पराक्रमशालिनी सरकार का साथ छोड़ना और उससे विरुद्ध आन्दोलन में आगे बढ़कर मैदान लेना, यह बड़े साहस और आत्मत्याग का काम था। महात्माजी की आज्ञा से जमनालालजी ने बिना किसी हिचक के सन् १९२१ में रायबहादुरी का खिताब सरकार को लौटा दिया। इतना ही नहीं, आप ने और कई मित्रों से भी उपाधियां छुड़ाई। आनरेरी मजिस्ट्रेटी पहले ही छोड़ चुके थे।



असहयोगी सेठ जमनालाल बजाज

असहयोग आन्दोलन

असहयोग आन्दोलन एक धर्मयुद्ध था, जो मनोविकारों पर विजय प्राप्त करके लड़ा जाता है। भारतवर्ष के इतिहास में सन् १९२१ का वर्ष चिरस्मरणीय रहेगा जब महात्मा गाँधी भारत के वातावरण में व्याप्त हो गये थे। महात्मा गाँधी की कोई पूर्व तपस्या सोलहो कला से देदीप्यमान थी। महात्मा गाँधी को ऐसे समय जिस व्यक्ति से बड़ी ही सहायता मिली, वह जमनालालजी हैं। महात्मा गाँधी यदि असहयोग आन्दोलन के मस्तिष्क थे तो जमनालालजी उसके मेरुदंड (Back-bone) थे। महात्मा जी के साथ और अलग भी जमनालालजी ने सारे देश का दौरा किया है और दो लाख रुपया दो बार करके वकीलों के लिये दान किया। तिलक स्वराज फण्ड का चन्दा करने के लिये आप बर्मा गये और वहाँ से दो लाख चन्दा करके ले आये तथा देश में लाखों रुपये के चन्दे जमा किये।

१९२२ में महात्मा जी ने चौराचौरी के हत्याकांड के बाद असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। और थोड़े ही दिन बाद वे ६ वर्ष के लिये जेल चले गये। उस समय उनके प्रोग्राम का जुआ सी० राज-गोपालाचारी, वल्लभभाई पटेल, गङ्गाधर राव देशपाण्डे, राजेन्द्रबाबू और जमनालालजी ने ही अपने कन्धों पर लिया था। इन पाँचों में भी जमनालालजी का नम्बर दूसरा या तीसरा रहता था।

नागपुर-झंडा-सत्याग्रह

जमनालालजी नागपुर के झंडा-सत्याग्रह के मुख्य संचालक थे। १३ अप्रेल, सन् १९२३ को नागपुर में स्वयंसेवकों ने जलियानवाला बाग के दिन की स्मृति में राष्ट्रीय झंडे का जुलूस निकाला। उन दिनों मध्य देश में राष्ट्रीय झंडे का आन्दोलन चल रहा था और जबलपुर से वह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था। जुलूस को पुलीस सुपरिटेंडेंट ने रोक दिया।

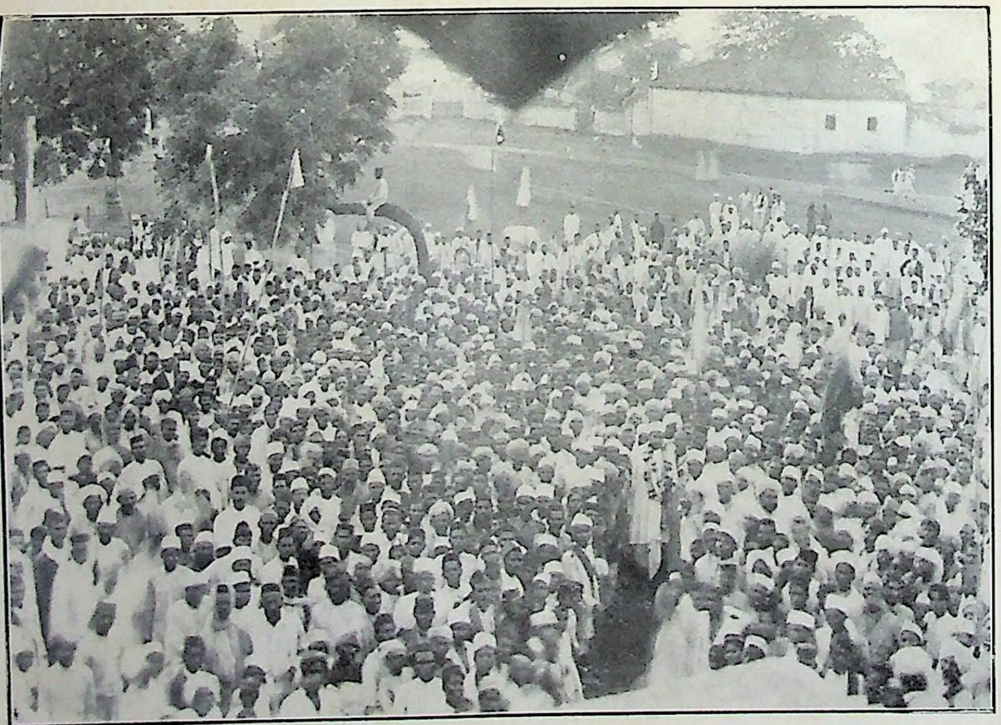
इतना ही नहीं, बल्कि झंडे के साथ वाले कुछ स्वयंसेवक गिरफ़ार भी किये गये और उन्हें सजायें दी गईं। सेठ जमनालालजी अपने राष्ट्रीय झंडे के इस अपमान को न सह सके। आपने २२ अप्रेल को यह घोषणा की—

"इस प्रांत की शासन-संस्था ने ता० १३ अप्रेल के दिन जलियाँ-वाला बाग की स्मृति में निकाले हुये राष्ट्रीय झंडे के जलूस में रुकावट डालकर हमारे राष्ट्रीय झंडे के स्वाभिमान को चुनौती दी है। और इसलिये मैं अपने प्रदेश की ओर से यह घोषित करता हूँ कि सरकार की इस चुनौती को हम स्वीकार करते हैं और अंत तक इस अहिंसात्मक युद्ध को लड़ने के लिये, इस प्रांत का संगठन करने में हम अपनी समस्त ताकत लगा देंगे।"

कहना नहीं होगा कि जमनालालजी ने इस घोषणा को अक्षरशः सत्य करके दिखला दिया। आप ही नागपुर-झंडा-सत्याग्रह के मुख्य संचालक थे। आपके प्रभाव से मध्यप्रदेश में आन्दोलन ने बड़ा ज़ोर पकड़ा। अधिकारियों ने आन्दोलन को दबाने के लिये सब तरह के प्रयत्न किये, पर जमनालालजी की दृढ़ता के सामने वे परास्त हो गये। अन्त में सरकार ने ता० १७ जून को आपको गिरफ़ार कर लिया। आपकी गिरफ़ारी से सारे देश में सनसनी फैल गई। ता० २० जून को बम्बई के ग़ल्ले के व्यापारियों ने सेठ जमनालालजी को बधाई का प्रस्ताव किया और ता० २६ जून को बम्बई का गल्ला बाज़ार बंद रहा। जोश का यह हाल था कि मंदिरों, मसजिदों, मकानों और दूकानों पर सर्वत्र राष्ट्रीय झंडा फहराने लगा।

जमनालाल जी पर मुक़दमा चला। आप ने केवल इतना ही बयान दिया—

"धर्म समझ कर मैं इस आन्दोलन में शामिल हुआ हूँ। धर्म के मार्ग में आने वाले कष्टों को पूर्ण शांति और आनन्द के साथ स्वीकार



जेल से आने पर वर्धा में सेठजी के स्वागत का जलूस

करूँ, यही मेरा कर्त्तव्य है। परमात्मा मुझे उन कष्टों के सहने का बल दे। इसके सिवा मुझे कुछ नहीं कहना।"

मुक़दमे की तारीखें बढ़ाते-बढ़ाते अंत में १० जुलाई को फ़ैसला सुना दिया गया। सेठ जी को १॥ वर्ष की सख़्त सज़ा और तीन हज़ार का जुर्माना हुआ।

सेठ जी की सज़ा के बाद नागपुर, हींगन घाट, हरदा और बम्बई के ग़ल्ला बाज़ार में हड़तालें हुईं तथा सत्याग्रह की सफलता के लिये लोग पहले से अधिक उत्साहित हो उठे।

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ने यह प्रस्ताव पास किया—

This meeting of the All India Congress Committee offers its congratulations to Seth Jamnalal Bajaj on his incarceration for his part in the Satyagraha campaign at Nagpur and assures him of its wholehearted support of the said campaign.

सेठ जमनालाल जी तथा आपके अन्य साथी, जब तक सज़ा नहीं हुई थी, जेल में सूत कातते रहते थे। जो सूत ता० १८ जून से १० जुलाई तक तैयार हुआ, उसके बाहर आते ही सेठजी की धर्मपत्नी श्रीमती जानकीबाई ने उसे बुनवाकर उसका झंडा बनवा डाला और उसे राष्ट्रीय झंडा सत्याग्रह के संचालकों के पास नागपुर भेजवा दिया। इस प्रकार सेठजी अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ इस धर्म-युद्ध में लग गये थे।

जब आप यह सोचेंगे तो कि यह सत्याग्रह उस समय शुरू किया गया था, जब देश में चारों ओर निराशा छा रही थी, तब जमनालाल जी का गौरव आप के मन में और भी अधिक बढ़ जायगा। श्री० बिट्ठल भाई पटेल ने ठीक ही लिखा था कि—

"जब देश में चारों तरफ़ अंधकार और निराशा फैली हुई थी,

ऐसे समय, अनेक कठिनाइयों के होते हुए, अकेले हाथ से त्याग और बलिदान का प्रचंड वातावरण फैलाकर, समूचे देश का ध्यान जमनालालजी ने खींचा।"

१८ जुलाई को वर्धा की पुलीस ने सेठजी की कोठी में पहुँचकर, तीन हजार रुपये जुर्माना वसूल करने के लिये, १ मोटर, १ ताँगा और एक पेटी ज़ब्त कर ली। पेटी दूकान की थी, जिसमें ४००) से ऊपर रुपये रखे हुये थे। मोटर और गाड़ी महीनों वर्धा में पड़ी रहीं। दो बार नीलाम पर भी चढ़ाई गईं, पर उस शहर में उनका ख़रीदार कोई न निकला। सरकारी अधिकारियों में से भी किसी ने उन्हें न ख़रीदा, अंत में मोटर बिकने के लिये राजकोट भेजी गई। इस पर "सौराष्ट्र" पत्र ने लिखा था कि—

"वर्धा में तथा मध्यप्रदेश में भी कोई देशघातक न मिला। अब ये गाड़ियाँ देश घातक की तलाश में काठियावाड़ आई हैं"।

यह सत्याग्रह महीनों चलता रहा और सरकारी बयान के अनुसार इस में ११६३ स्वयं सेवक गिरफ़्तार हुये थे।

अंत में समझौता हो गया और सरकार ने राष्ट्रीय झंडे के विरुद्ध कार्यवाही बंद कर दी तथा ता० ३ सितम्बर को नागपुर जेल से सब क़ैदी भी छोड़ दिये गये। सेठजी को लेने के लिये दूकान से मोटर गई थी, पर आप अन्य स्वयं सेवकों के साथ पैदल ही चलकर शहर में आये।

जेल से छूटने पर जमनालालजी के पास बहुत से तार और पत्र आये। तारों में से कुछ ये हैं—

मौलाना मुहम्मद अली का तार—

Well done my brave Bania, longing touch your feet. Kitchlu joins.

"मेरे बहादुर बनिया, खूब किया। तुम्हारे पैर छूने को तरस रहा हूँ। इसे किचलू की ओर से भी जानना।"

हकीम अजमलखाँ का तार—

Congratulate you on your release and inspiring lead given by you in flag movement.

"आपकी रिहाई पर तथा आपके ग्रहण किये हुये झंडा-आन्दोलन के उत्साहवर्धक नेतृत्व पर बधाई देता हूँ।"

अधिक जेठ सुदी ११ सं० १९८०, २४ जून, १९२३ के हिन्दी नवजीवन में जमनालालजी के सम्बन्ध में यह लेख प्रकाशित हुआ था—

धर्मवीर जमनालालजी

"जिस दिन मैं महात्माजी के पुत्र-वात्सल्य के योग्य हो सकूँगा, वही समय मेरे जीवन के लिये धन्य होगा। महात्माजी की अनुपम दया से अपनी कमज़ोरियों को तो कमसे कम थोड़ा-बहुत पहचानने लग गया हूँ"

इन मृदुल वचनों में मृदुल-हृदय जमनालालजी का सारा जीवन समा जाता है। दो वर्ष पहले, जब वे नागपुर-महासभा की स्वागत-समिति के सभापति थे, मैंने उनका कुछ परिचय पाठकों को कराया था। पर आज मैं देखता हूँ कि उनके थोड़े परिचय से मैंने जमनालालजी का जो वर्णन किया था, वह अब गाढ परिचय हो जाने पर भी, ज्यों का त्यों बना हुआ है। इसकी कुंजी है उनके जीवन की सरलता। सिर्फ़ दो ही दिन के सहवास से आप उन्हें पहचान सकते हैं और फिर वर्षों तक उनके संबंध की अपनी धारणा को बदलने की ज़रूरत आपको न रहेगी।

जमनालालजी स्वभावतः बड़े प्रेमी और उदार हैं। इससे जिन जिन लोगों का साबका उनसे पड़ता है उनका हृदय वे अपने लड़कपन से ही जीतते आये हैं। धनाढ्य जन को आश्रित, खुशामदिये तथा अँग्रेजी हाकिम आम तौर पर घेरे रहते हैं। उन सबने उनकी अमिय भरी चितवन का अनुभव किया है। पर वे यह मंत्र लड़कपन से ही सीखे हैं कि लक्ष्मी दुर्लभ रत्न है। उसका नाश करने से दुलतियाँ खानी पड़ती

हैं। वह तो तभी श्रेय कार्यों में बाधक नहीं हो सकती, जब उसे अपने काबू में रक्खा जाय। इसलिये वे तभी से साधु-समागम करने लगे। 'लक्ष्मी की बदौलत प्राप्त प्रतिष्ठा क्षणिक है' परन्तु सच्छील प्राप्त प्रतिष्ठा चिरस्थाई है" यह जानकर ही उन्होंने लो० तिलक, मालवीय जी इत्यादि का समागम किया। जयन्ती अङ्क में आप लिखते हैं—"इन सब महान् नरों का परिचय मेरे लिये लाभदायक हुआ, पर महात्माजी ने तो मानो भूमिका ही बदल दी।" अनेक सत्पुरुषों का समागम करते-करते बापूजी उन्हें मिले, उन्हें उन्होंने अपना हृदय-देव बनाया। १९१७ की महासभा के समय उन्हें 'रायबहादुर' का खिताब मिला। कलकत्ते में वे तड़के ही बापू जी के पास आकर कहते हैं कि "मुझे आशीष दीजियेगा?" बापूजी ने कहा—आशीर्वाद क्या दूँ? इसका सदुपयोग करो। अपमान सहिन करना आसान है; पर खिताब की रक्षा करना मुश्किल है। खिताब बुरी चीज है। उसके सदुपयोग की अपेक्षा दुरुपयोग ही अधिक होता है। आप हर मौके पर इसका सदुपयोग कीजिये। मैं चाहता हूँ कि यह आप के उत्कर्ष और देशभक्ति के लिए बाधक न हो।"

सच पूछिये तो उसी दिन उन्होंने दीक्षा ली। उसके बाद दिन पर दिन उन्होंने अपना उत्कर्ष ही किया है। दिन पर दिन वे अपने गुरू, अपने को पुनर्जन्म देने वाले पिता के पात्र होने के लिये अधिकाधिक योग्य होते गये हैं।

नागपुर-महासभा के समय वे अपनी रायबहादुरी छोड़कर राजनीतिक क्षेत्र में उतरे। असहयोग के काम के लिये एक लाख रुपये बापूजी के चरणों में अर्पण किये। उस समय उनके मन की स्थिति अद्भुत थी। एक दिन मुझे बापूजी ने कहा कि "इनकी नम्रता का तो कोई ठिकाना ही नहीं। मुझसे कहते हैं कि मुझे देवदास की तरह मानिये। मुझे आज्ञा कीजिये, मेरी भूलें सुधारिये, मुझे पांचवां पुत्र समझिये।" मित्र और स्नेही के बदले वे नागपुर में पांचवें पुत्र हुये। उस

दिन उनकी ज़िम्मेदारी पहले से अधिक बढ़ी। उस दिन से वे प्रत्येक काम करते समय अपने दिल से यही पूछने लगे—"बापूजी यदि मुझे यह काम करते हुये देखें तो उनके दिल पर क्या असर हो ? और उनके अनुसार वे काम करते हैं। तब से लेकर अब तक के उनके कार्यों का रहस्य जाना जा सकता है।

ये बहुत पढ़े-लिखे नहीं हैं। हिन्दी, मराठी, गुजराती थोड़ा-बहुत जानते हैं। कुछ ही दिनों से वे राजगोपालाचार्यजी के साथ वैसी ही टूटी-फूटी अँगरेज़ी बोलना सीख गये हैं जैसी कि राजगोपालाचार्यजी टूटी-फूटी हिन्दी बोल लेते हैं। पर इस कमी, शानदार शिक्षा के अभाव से उनका काम कहीं नहीं रुकता। उनकी व्यवहार-दक्षता को देखकर राजगोपालाचार्यजी ही नहीं, बल्कि विट्ठलभाई पटेल जैसे भी दंग रह जाते हैं। पर जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ यह बाहरी व्यवहार-दक्षता नहीं। उसके मूल में उनका यही भाव रहता है कि "यह काम बापूजी को पसन्द होगा या नहीं ?" जो टाटा कम्पनी मुल्शी-पेटावालों पर अत्याचार करती है, उसके शेयर कैसे भर सकता हूँ ? कलकत्ते की दुकान के सिलसिले में अदालतों में बहुत जाना पड़ता है, इसलिये क्या कलकत्ते की दूकान का काम ही बन्द कर देना ठीक नहीं ? ऐसे सवाल ये बारबार पूछा करते हैं, और उत्तर प्राप्त करके उनका फ़ैसला तुरन्त कर देते हैं।

उनके साथ रहने पर हम यह जान सकते हैं कि त्याग तो उनके लिये एक मामूली बात है। जब डाक आती है तब उनके पास बैठ कर देखना चाहिये, एक भारी पुलन्दा डाक का आता है। सबके उत्तर तेज़ी से लिखाते चले जाते हैं। कितने ही पत्र आर्थिक सहायता चाहनेवालों के होते है। "कहाँ काम करते हैं ? काम के संबन्ध में इन्हें कोई पत्र लिखा है ? फलाँ शख्स बड़ा अच्छा काम कर रहा है। अच्छा इतने रुपये भेज दो" यह नित्य का काम है। बापूजी जेलमें गये। चन्दा के बारे में लोगों की अश्रद्धा बढ़ गई। वे शिथिल

होगये। उनकी श्रद्धा बढ़ाने के लिये इसी भाव से उन्हों ने २॥) लाख रुपये 'सेवक-संघ' स्थापित करने के निमित्त निकाले हैं कि बापू जी के समय में जितना त्याग किया, उससे अधिक त्याग अब करने की आवश्यकता है। पर मैं कही चुका हूँ कि त्याग तो उनके लिये एक मामूली बात है। लेकिन त्याग से मिलने वाली शोहरत उन्हें पसन्द नहीं। वे ऐसा ही दान करने में आनन्द मानते हैं कि दहने हाथकी खबर बाँ हाथ को न हो। इस त्याग और दान से अधिक बढ़ी-चढ़ी उनकी पूर्वोक्त प्रवृत्ति है। एक ही शब्द में कहूँ तो उनका धर्म-भाव है। इस धर्म-भाव के कारण वे यदि किसी दिन मनुष्य-जाति के लिये फ़कीर बन बैठें, तो आश्चर्य नहीं। अमेरिका के करोडपति लोग लाखों करोड़ रुपया दान करते हैं। पर उनका यह भाव प्रायः रहता है कि इस अतुल सम्पत्ति का विनियोग किस प्रकार किया जाय। मानवजाति के हित के लिये फक़ीर होने का भाव शायद ही उनके दिल में होता हो। जमनालालजी के त्याग में यही विशेषता है।

आज जो वे असहयोग आन्दोलन के सिद्धान्तों पर इस प्रकार अटल हैं, उसकी कुंजी उनका यही धर्म-भाव है। इसी कारण विट्ठलभाई पटेल और पण्डित मोतीलाल जी जैसे मानते हैं कि हम सब लोगों को अपनी तरफ़ कर सकते हैं पर इस बनिये को मिलाना मुश्किल है।

वे शान्ति के साथ खादी का काम करते थे। धन एकत्र कर लाते थे। व्याख्यानबाज़ी की हवस तो उन्हें होही क्यों? और लड़ाई को न्यौता देनेकी लालसा तो उससे भी कम। पर नागपुर में ऐसी स्थिति आ खड़ी हुई जिसकी कल्पना भी उन्हें न थी। उन्होंने अपनी शक्ति को तौलकर लडाई का शंख फूँका।

प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति

के भाव से वे लड़ाई में कूदे और आज जेल में बैठे हुये हैं।

जमनालालजी उन लोगों में से हैं, जिन्हें साबरमती जेल से बापू जी का पत्र मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके नाम का लंबा पत्र

प्रकाशित करने का मुझे अधिकार नहीं। पर उसका कुछ अंश, जो मद-रास के 'स्वराज्य' में आया है, यहाँ दे देता हूँ। बापूजी ने लिखा था:-

"स्त्री, पुत्रादि, मित्र, परिग्रह, बन्धु ये सब सत्य के अधीन रहने चाहिये। सत्य की खोज करते हुये यदि इन सब के सर्वथा त्याग करने में तत्पर रहें, तभी सत्याग्रही हो सकते हैं। मैं इसी हेतु से इस आन्दोलन में पड़ा हूँ कि धर्म-पालन अधिक आसानी से हो जाय। और इसीलिये आप जैसों की आहुति देते हुये हिचकिचाता नहीं। इसका बाहरी स्वरूप भारतीय स्वराज्य है। उसका सच्चा स्वरूप तो है प्रत्येक व्यक्ति का स्वराज्य। यह जो देर होरही है उसका कारण यह है कि अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही तैयार नहीं हुआ है। पर इससे घबराने की ज़राभी आवश्यकता नहीं।"

भविष्य में इस आदर्श सत्याग्रही होनेवाले का दर्शन जमना-लालजी में करता हूँ। कायिक अहिंसा-परायण तो बहुत लोग होंगे; परन्तु वाचिक अहिंसा-परायण कम लोग हैं। उनमें एक जमनालालजी भी हैं। सरकारी हाकिम उनके प्रेम-भाव से चक्कर में पड़ जाते हैं और मेरा ख्याल है कि उन्हें गिरफ़ार करते हुये उन्हें बहुत ही दुःख हुआ होगा। ऐसे सत्याग्रही का कारावास सच्चा कारावास है।

महादेव हरिभाई देशाई

हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े में चोट

झंडा-सत्याग्रह के थोड़े दिन बाद एक दिन आप अपने निजी काम से नागपुर गये थे। रास्ते में मालूम हुआ कि वहाँ हिन्दू-मुसलमानों में बलवा होने वाला है। आप बलवे के स्थान पर गये। वहाँ गाड़ी से उतर कर देखा कि मारपीट हो रही है। आप घायल मुसलमानों को ताँगे में बैठाकर भेजना चाहते थे। हिन्दू-और मुसलमान दोनों आप से कहते थे कि आप यहाँ से चले जाइये। पर आप घायलों को छोड़कर वहाँ से हटना नहीं चाहते

थे। उसी हुल्लड़ में किसी की लाठी से आपके हाथ में गहरी चोट लगी। वहाँ जान जाने का ख़तरा था। पर आप चोट लगने पर भी अन्त तक खड़े रहे, जिस से झगड़ा बढ़ने नहीं पाया। आप की इस बात पर मुग्ध होकर काशी के बाबू भगवानदास जी ने यह पत्र लिखा था—

मैं आप को हृदय से नमस्कार करता हूँ। दो घायल मुसलमानों की रक्षा करते हुए नासमझों के हाथ से गहरी चोट खाई और जान जोखिम उठाई। आपने अपने को महात्माजी के सिद्धान्तों का पक्का अनुयायी दिखाया, जो हम लोगों से नहीं करते बनता। आप ने सब सच्चे हिन्दुओं और सच्चे कांग्रेस-वादियों और देश-वासियों का सिर ऊँचा किया।

शुभचिन्तक
भगवानदास

खद्दर-प्रचार

सेठजी बहुत दिनों तक खादी-बोर्ड के सभापति रहे। पटना में आल इण्डिया कमेटी की बैठक में गाँधीजी सभापति हुये।

जमनालालजी ने खादी-प्रचार के लिये देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक भ्रमण किया। सन् १९२५ के सितम्बर से लेकर अक्टोबर तक आपने राजपूताने का दौरा किया और जोधपुर, सीकर, जयपुर, कृष्णगढ़, उदयपुर, जावरा, बीकानेर और कोटा के महाराजाओं तथा उनके दीवानों से भेंट की और खद्दर-प्रचार में उनकी सहानुभूति और सहायता प्राप्त की। अजमेर में ए. जी. जी. से भी मुलाक़ात की और खादी के लिये उनकी सहानुभूति प्राप्त की। इन स्थानों के सिवा नसीराबाद, रतनगढ़ और चूरू की भी यात्रा की। उसी वर्ष विहार में पटना, भागलपुर, मलखाचक और मधुबनी का दौरा किया तथा सर पी. सी राय के साथ कुमिल्ला और चाँदपुर तक खादी का निरीक्षण किया। अब भी आप खादी के प्रचार में सदा तत्पर रहते हैं।

हिन्दी-प्रचार में सहायता

आप का हिन्दी से बड़ा प्रेम है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से मद्रास में हिन्दी—प्रचार का जो काम हो रहा है, उस में आप का पूरा हाथ है। इन्दौर-सम्मेलन में आप ने मद्रास के लिये एक प्रचारक दिया था। फिर मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के बम्बई के अधिवेशन में मद्रास में हिन्दी-प्रचार के लिये ५००००) का चंदा करके महात्माजी को दिया।

आपने ही आग्रह करके महात्मा जी से हिन्दी नवजीवन निकलवाया है। कर्मवीर को आपने पहले ५०००) की सहायता दी थी और १०००) फिर दिया। राजस्थान-केसरी में १०। १२ हज़ार का घाटा हुआ। इसी प्रकार हिन्दी के कई पत्रों को आप ने समय समय पर छोटी-मोटी सहायताएँ दी हैं।

अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन की ओर भी आप का ध्यान रहता है। बम्बई का गाँधी हिन्दी पुस्तक भण्डार आपही का था। अब अजमेर का सस्ता साहित्य-प्रकाशक-मंडल भी आप ही की सहायता से हिन्दी-साहित्य की सेवा कर रहा है।

ईश्वर जमनालालजी को दीर्घायु करें।

समाप्त

1.7.06

हिन्दी-मन्दिर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

कविता-कौमुदी—पहला भाग, पुरानी हिन्दी-कविता	३)
कविता-कौमुदी—दूसरा भाग, नई हिन्दी-कविता	३)
कविता-कौमुदी—तीसरा भाग, संस्कृत	३)
कविता-कौमुदी—चौथा भाग, उर्दू	३)
सद्गुरु-रहस्य—भक्ति विषयक अपूर्व ग्रन्थ	२॥)
कुललक्ष्मी—नववधुओं के काम की पुस्तक	१।)
दम्पति-सुहृद्—विवाहित स्त्री-पुरुषों के काम की पुस्तक	१।)
पथिक—खंडकाव्य	१)
हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास	।=)
सुभद्रा—उपन्यास	॥)
मिलन—खंडकाव्य	।)
हिन्दी-पद्य-रचना—हिन्दी का पिंगल	।)
रहीम—रहीम कवि की जीवनी और कविताएँ	≡)
आकाश की बातें—ग्रहों का हाल	≡)
नीति-शिक्षावली—नीति के श्लोक अर्थ-सहित	=)
बाल-कथा कहानी—पहला भाग	।)
बाल-कथा कहानी—दूसरा भाग	।–)
रानी जयमती—उपन्यास	॥≡)
प्रेम—बँगला पुस्तक का अनुवाद	।=)
तपस्वी अरविन्द के पत्र	।)
रानी रघुवंशकुमारी—जीवन-चरित, सचित्र	॥)
सेठ जमनालाल बजाज—जीवन-चरित, सचित्र	१)

मिलने का पता—

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग



पिछले सब भाग एक साथ लेने पर डाकव्यय हम अपनी ओर से देते हैं।

इस पते से मँगाइये--

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

हिन्दी-मन्दिर-ग्रन्थमाला

हमारे यहां से एक ग्रन्थमाला निकलती है; जिसमें संसार की प्रत्येक साहित्य-पूर्ण भाषा का इतिहास, उसके उच्चश्रेणी के कवियों के जीवन-चरित, तथा उनकी चुनी हुई कविताओं के हिन्दी अर्थ-सहित संग्रह अलग अलग एक एक भाग में निकालने का विचार है। अब तक 'कविता-कौमुदी' नाम से उसके चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं, जिनकी प्रशंसा शिक्षित-समाज में सर्वत्र हो रही है। प्रत्येक भाग का आकार-प्रकार, छपाई-सफ़ाई, जिल्दबन्दी एक प्रकार की, बहुत बढ़िया और सुन्दर है। अब तक दो भाग पुरानी और नई हिन्दी के, तीसरा भाग संस्कृत का और चौथा भाग उर्दू का निकल चुका है। अब नीचे लिखे भाग और प्रकाशित होंगे—

कविता-कौमुदी—पांचवां भाग, अँगरेज़ी		३)
कविता-कौमुदी—छठां भाग, फ़ारसी		३)
कविता-कौमुदी—सातवां भाग, बँगला		३)
कविता-कौमुदी—आठवां भाग, गुजराती		३)
,, ,,	नवां भाग, मराठी	३)
,, ,,	दसवां भाग, भक्त कवि	३)
,, ,,	ग्यारहवां भाग, स्त्रीकवि	३)
,, ,,	बारहवां भाग, ग्राम्य कवि	३)
,, ,,	तेरहवां भाग, मुसलमान कवि	३)
,, ,,	चौदहवां भाग, हिन्दी-सुभाषित	३)

हिन्दी में यह ग्रन्थमाला अपने ढंग की बिलकुल नई चीज़ है। इसके द्वारा हिन्दी-साहित्य में भिन्न-भिन्न भाषाओं के विचारों का प्रवेश होगा और केवल हिन्दी जानने वाले साहित्य-प्रेमियों की ज्ञान-वृद्धि होगी। इस ग्रन्थमाला की पुस्तकों का प्रचार घर-घर होना चाहिये। पिछले सब भाग एक साथ लेने पर डाकव्यय हम अपनी ओर से देते हैं।

इस पते से मँगाइये--

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग